श्रेष्ठ आदर।

पहिला अध्याय।

दो भाई।

एक दिन ऐसा हुआ कि हिन्दुस्तान के सूखे मैदानों पर अपना तेजोमय प्रकाश और प्रचण्ड करणों को सूरज दिन भर डाल रहा था और अब थोड़ी बेर हुई थी कि अपना काम पूरा कर चुकने पर अस्त हो गया था। चंद्रमा उस के स्थान में [illegible] हो चुका था और उस के मृदुल शीतल प्रकाश [illegible] चकतर शांति और प्रबोध प्रगट होता था। [illegible] स्थान में सुनसान होने के कारण ऐसा जान [illegible] था कि मानो सारा ही संसार सो गया हो। [illegible] दबे हुए शब्दों से प्रगट होता था कि कोई २ [illegible] तक जागते ही थे। यह शब्द बाहर की कोठरी [illegible] आता था जहां दो मनुष्य [illegible] रात को [illegible] पूर्वक बातचीत करते हुए और हुक्का पीते [illegible] ठे थे।

[illegible] लाल और पन्नलाल भाई २ थे। परंतु [illegible] उमर में इतना बड़ा अन्तर था कि वे बहुत [illegible] पिता पुत्र से लगते थे। उन की दशा में बड़ा [illegible] था। जेठा भाई उस गांव में रहता था जहां [illegible] का पिता रहा करता था और जहां वह उस

के आगे मर गया और छोटा भाई जिस की
ही से पढ़ने की बड़ी इच्छा थी नगर की एक
शाला में पढ़ता था और एन्ट्रेंस परीक्षा उत्तीर्ण
होकर और बी॰ ए॰ परीक्षा में सफल न होकर उसी
पाठशाला में अब पाठक हो गया था जिस में वह
पहिले पढ़ा करता था। यद्यपि दोनों भाइयों में
कई बातों का भेद था तिस पर भी उन का आपस
में इतना बड़ा प्रेम था कि भेंट के लिये गांव से नगर
को या नगर से गांव को गये बिना बहुत हफते
बीतने पाते थे। उस दिन संध्या समय पत्तनलाल
अकस्मात् आ पहुंचा और कहा कि पाठशाला दो
दिन तक बन्द रहेगी इस लिये मैं ने आकर तु
से भेंट करने का यह अवसर पाया। कोई आश्चर्य
की बात नहीं है कि चांदनी रात के समय वे
पीने और आपस में बातचीत करने में इतने
गये कि वे भीतर जाकर और लोगों के सम
बिश्राम न करने पाये।

जब कि दोनों भाई कई बातों के विषय में बात
चीत कर रहे थे पत्तनलाल ने कुछ हिचकिचा
कहा कि मैं आप से एक बात कहना चाहता हूं
मैं आशा करता हूं कि आप स्वीकार करेंगे
जानते हैं कि जब से मेरा छोटा ल
तब से मेरी स्त्री बहुत शोकित रह
का बहुत सा समय रोते बीतता है यहां त
कभी २ भोजन भी नहीं करती और इस लिये
बहुत दुबली हो गई है। एक दिन जब कि मैं

से निकलकर पाठशाला को जाता था मुझे एक अंगरेज मिस साहिबा मिली जिस ने ठहरकर मुझ से एक घर का पता पूछा। मैं ने उसे बतलाया और फिर द्वार दिखाकर मैं चला गया। एकाएक यह बिचार मेरे मन में आया कि मेरी स्त्री क्यों न पढ़ना सीखे। क्योंकि मैं जानता था कि इसी अभिप्राय से वह मिस साहिबा मेरे पड़ोस के घरों में आया करती थी। यदि दूसरे भले २ हिन्दू लोग अपनी स्त्रियों को उस से पढ़वाते हैं तो मैं भी ऐसा क्यों न करूं। संभव है कि इस से वह प्रसन्न चित्त रहे और इस में उस का मन लगकर वह अपना दुःख भूल जावे इतने में मुझे आप का बिचार आया क्योंकि मैं नहीं जानता था कि आप मेरी स्त्री के पढ़ने के बिषय में क्या समझेंगे इस लिये मैं ने सोचा कि मैं लिखकर आप से पूछूं। परन्तु मैं नहीं जानता था कि मेरी स्त्री को यह बात अच्छी लगेगी कि नहीं सो मैं ने चाहा कि पहिले उसी से बातचीत करूं।

जेठे भाई ने मानो मन हलका करने के लिये अपना हुक्का खींचकर पिया परन्तु कुछ नहीं कहा और पत्तनलाल अपनी बात यों कहता ही रहा कि उस दिन सांझ को मैं ने अपनी स्त्री से बातचीत किई और उस से कहा कि पढ़ना न जानना और ऐसी मूर्ख बनी रहना बड़ी बुरी बात है। उस ने ठीक उत्तर दिया कि मैं सीखती यदि कोई मुझे सिखाता यह मेरा दोष नहीं है कि मैं मूर्ख हूं। तब मैं न उस मिस साहिबा के विषय में बातचीत किई

जिस से मेरी भेंट हुई थी और मैं ने कहा कि मैं तुम्हें पढ़ाने के लिये उस से पूछूंगा। पहिले पहिल तो वह विदेशी मिस साहिबा से मिलने के लिये कुछ डरी परन्तु मैं ने कहा कि तुम्हें डरने की कोई बात नहीं है क्योंकि अंगरेज स्त्रियां सब बड़ी दयालु और सुशील होती हैं और यदि तुम अपना पाठ भी जल्दी न सीखो तोभी वह तुम से अप्रसन्न न होगी और न धमकावेगी। फिर और कुछ नहीं कहा गया और दूसरे सप्ताह में मैं उस मिस साहिबा के खोज में रहा। और अब वह गली में निकली मैं ने उस से भेंट किई और पूछा कि क्या आप कृपा करके मेरे घर आवेंगी और मेरी स्त्री को पढ़ावेंगी।

तब जेठे भाई ने कहा अरे भाई। तुम ने तो बड़ा विचित्र काम किया क्योंकि तुम जानते हो कि यह हम लोगों की रीति नहीं है कि विदेशियों को अपनी स्त्रियों के पास आने देवें या अपनी स्त्रियों को उन से पढ़वावें भी। यह काम करने के पहिले तुम्हें मेरी सम्मति लेनी थी।

पत्तनलाल ने उत्तर दिया अरे भाई। क्या आप नहीं जानते हैं कि हम लोगों की रीतियां बदलती जाती हैं। आप तो गांव में रहते हैं जहां सब बातें वैसी ही चली जाती हैं जैसी अपने पिता के समय थीं परन्तु मैं तो नगर में रहता हूं जहां प्रति-दिन कुछ नई बात होती रहती है। संसार तो सदा उन्नति करता जा रहा है और यदि हम लोग उन्नति न करें तो जैसे के तैसे ही रह जावेंगे।

बिहारीलाल कुछ गंभीर सा दिखाई पड़ा। यह छोटा भाई कई बातों में उस से बढ़ गया था अब वह उसे कैसे पीछे फेर ला सकता था। वह और सब लड़कों से जल्दी चलने लगा था और तब ही से वह सदा उन्नति चाहता था वह अपना हुक्का छोड़कर अपने भाई के सुन्दर और बुद्धिमान से झलकते हुए मुख की ओर देखने लगा जो उजियाली चांदनी में स्पष्ट दिखाई पड़ता था तब उस ने लंबी सांस लिई क्योंकि उस को जान पड़ा कि मेरे और उस के बीच में जिसे मैं बहुत प्यार करता हूं भेद बढ़ता ही जाता है।

बिहारीलाल को और कुछ न कहते देखकर पन्नलाल फिर बोला पहिले तो मेरी स्त्री बहुत लजाती थी मैं दूसरी कोठरी में यह सुनने के लिये कि देखूं क्या होता है ठहर गया परन्तु वह मिस साहिबा इतनी दयालु और धीरजवान थी कि मेरी स्त्री का मन लग गया और पाठशाला जाने के पहिले ही मैं ने उसे बड़े उत्साह से अ आ इ ई पढ़ते सुना।

बिहारीलाल बोला तो तुम्हारा कहना है कि तुम ने अपनी स्त्री को इस विदेशी अंग्रेज मिस साहिबा के हाथ में सौंप दिया। क्या तुम समझते हो कि वह केवल अक्षर पढ़ाने से ही सन्तुष्ट रहेगी। वह उसे ईसाई कर लेवेगी। यही उन का मुख्य अभिप्राय है। पन्नलाल ने हंसकर कहा कि तुम्हें डरने की कोई बात नहीं है। मेरी स्त्री को अपने निज धर्म्म से इतनी अधिक रुचि है कि कोई उस

कि मरकर सदा के लिये चला गया हो उस यीशु ख्रीष्ट को जो अपने शिष्यों ही के कथनानुसार लगभग दो सहस्त्र बर्ष हुए क्रूश पर मर गया था। पन्नलाल से जो कि उन्नीस की सदी के समय में जीवता और शिक्षित हिन्दू विद्यार्थी था क्या करना था। निःसंदेह कुछ भी नहीं।

परन्तु एक दिन ऐसा हुआ कि एक नया विद्यार्थी उस की कक्षा में आया जो लगभग उसी की उमर का एक तरुण पुरुष था दूसरे दिन तक उस ने उस पर विशेष ध्यान नहीं दिया और जब कि मार्क रचित सुसमाचार का पाठ पढ़ाया जा रहा था तो इस नये विद्यार्थी के उत्साह को देखकर जो कि बहुतों के निरुत्साह से बिलकुल भिन्न था वह चकित हो गया। उसे पाठक से प्रश्न पूछते हुए और हर एक बात ताकते हुए देखकर पन्नलाल को आश्चर्य्य हुआ। इतना तो पूर्ण निश्चय था कि यह पाठ इस नये बिद्यार्थी के लिये इतनी भारी बात थी जितनी कि और किसी के लिये नहीं थी। वह यीशु ख्रीष्ट के विषय में इस लिये नहीं सीखता था क्योंकि वह नियत विषयों में से एक विषय था परन्तु इस लिये कि वह सचमुच प्रभु यीशु ख्रीष्ट के विषय में जानना चाहता था। यह तो पन्नलाल के लिये बिलकुल नया बिचार था जिस को वह पूरी २ रीति से नहीं समझ सकता था परन्तु उस ने कुछ भी न कहा।

लगभग एक पाख के उपरान्त पन्नलाल एक दिन कक्षा में आया जब कि और और लड़के बाहर

तरस्सा खेल रहे थे। और उस ने नये लड़के सुदर्शनदास को मन लगाकर पुस्तक पढ़ते हुए देखा उस ने उस से कहा तुम तो बड़े पढ़नेवाले दिखाई पड़ते हो क्योंकि तुम ऐसे समय पर भी पढ़ते रहते हो जब कि और सब लोग खेलते हैं। मुझे बतलाओ कि वह विशेष बात क्या है जिस में तुम इतने मग्न हो। उसी समय उस विद्यार्थी के पीछे की ओर से झांककर पन्नालाल आप ही उस बात को जान गया इस से यह बात कहने की आवश्यकता न रही कि वह धर्म्मपुस्तक थी जो ऐसे मन लगाकर पढ़ी जा रही थी। अब उस के लिये इस भेद के समझने का अवसर था इस लिये वह भी मेज के पास बैठ गया और सुदर्शनदास की ओर देखकर कहा मुझ से सचमुच तो कहो कि तुम ईसाई हो या हिन्दू। तुम अपने नाम और पहिरावे से तो हिन्दू जान पड़ते हो परन्तु ईसाइयों की पुस्तक और धर्म्म में तुम्हारी रुचि होने के कारण मुझे ऐसा समझ पड़ता है कि तुम ईसाई हो।

क्षण भर तक तो कोई उत्तर न दिया गया और जब सुदर्शनदास ने धीरे से और विचार पूर्वक माना कि वह अपने शब्दों को तोलता होवे यूं कहा यदि तुम उस मनुष्य को ईसाई कहते हो जो बपतिस्मा पा चुका हो जिस ने ख्रीष्ट पर विश्वास लाने को स्वीकार किया तो मैं ईसाई नहीं हूं और इस के साथ भी यदि तुम उस मनुष्य को हिन्दू कहते हो जो अपने बापदादों के धर्म्म को ही केवल अच्छा धर्म्म समझता है तो मैं हिन्दू भी नहीं हूं।

तब पन्नलाल ने पूछा तो क्या मुझे यह समझना चाहिये कि तुम आधे ईसाई और आधे हिन्दू हो या तुम हिन्दू से अब ईसाई होनेवाले हो ?

सुदर्शनदास ने मुस्कुरा कर उत्तर दिया मैं ठीक ठीक नहीं समझता कि किसे मनुष्य की मति और इच्छाओं के जानने में जिस से कि तुम्हारी पूरी पूरी जान पहचान नहीं है तुम्हारा क्या अभिप्राय है या खोज ही के लिये तुम ऐसे प्रश्न कर रहे हो यदि तुम मुझे यह बतला दओगे तो मैं और भी कुछ कहूंगा ।

उस ने उत्तर दिया कि मैं ठीक तो नहीं कह सकता हूं कि यही बात है या कोई दूसरी । ज्योंही तुम आये हो त्योंही मैं ने देखा कि तुम्हारी रुचि ख्रीष्ट का जीवन चरित्र पढ़ने में बहुत अधिक दिखाई पड़ती है और इस का कारण मैं ठीक ठीक नहीं समझता ।

सुदर्शनदास ने दूसरा प्रश्न पूछकर तुरन्त उत्तर दिया तुम ने भी तो ख्रीष्ट का जीवन चरित्र पढ़ा है । निस्सन्देह तुम ने उस आत्मत्यागी पवित्र जीवन के और उन की कहानियों के बीच में जिन का हिन्दू लोग प्रगट रूप से पूजते हैं भेद देखा होगा । यदि हम लोग उस सब से पूर्ण मनुष्य के जो इस संसार में आया पीछे जाना और उस की आज्ञा मानना अस्वीकार कर सकते हैं । किसी दूसरे धर्म्म में मुझे किसी को भी बतलाओ जो उस की अपेक्षा जिसे हम लोग इतना तुच्छ समझते हैं मेरे

विश्वास और आज्ञा पालन के अधिकार योग्य होवे और मैं उस के पीछे हो लेऊंगा।

तब पन्नलाल ने पूछा कि तुम फिर ईसाई क्यों नहीं हो जाते हो। क्या तुम भी तुच्छ समझे जाने से डरते हो। उस ने उत्तर दिया मैं तुम से कहता हूं जैसा कि मैं कह चुका हूं कि यदि सुसमाचार सत्य है तो मैं विश्वास करता हूं कि यीशु खीष्ट सब से पूर्ण मनुष्य है जो संसार में आया परन्तु वह मेरे किस काम का है जो दो हजार वर्ष पहिले हुआ और मरकर चला गया। यदि मैं खीष्ट के जीवन चरित्र की प्रशंसा करूं तो मुझे उस के समान जीवन बिताने का यत्न करना पड़ेगा परन्तु मैं यह कैसे करूं मैं अपने स्वभाव की दुष्टता को जानता और धर्मात्मा के समान जीवन बिताने की शक्ति कहां से पाऊं।

पन्नलाल ने उत्तर दिया कि इस हम लोग कहते हैं कि यीशु खीष्ट अब भी जीवता है और वह मृतकों में से जी उठा है। हां मैं तो इस बनावटी बात में विश्वास नहीं करता हूं परन्तु मैं इस बात पर आश्चर्य करता हूं कि तुम इतने सीखने पर भी विश्वास नहीं करते हो।

सुदर्शनदास ने उत्साह पूर्वक कहा यही तो बात है। यदि मैं जान सकता हूं कि यीशु खीष्ट आज तक भी जीवता है और अपने समान होने के लिये मुझे शक्ति दे सकता है तो मैं पल भर भी न हिचकिचाता। तुम ने मुझ से पूछा कि क्या तुम तुच्छ समझे जाने

से डरते हो। इस प्रश्न का उत्तर तो सहज से दिया जा सकता यदि मुझे यीशु ख्रीष्ट की मृत्यु और पुनरुत्थान के विषय में निश्चय हो जाता। उन लोगों से जो ईश्वर के पुत्र को तुच्छ समझते हैं तुच्छ समझे जाना प्रतिष्ठा की बात है। उसे अपना साथी पाकर मुझे किसी बात से न डरना चाहिये।

तब पन्नलाल बोला परन्तु मुझ से कहो क्या तुम समझते हो कि यह हो सकता है कि परमेश्वर का पुत्र ऐसी नीच और लज्जित मृत्यु से जैसी कि हम लोग सुसमाचार में पढ़ते हैं मरे। निस्सन्देह यदि परमेश्वर अवतार लेना चाहता तो वह अपने सृजे हुओं से ठट्ठा किये जाने के बदले संसार को अपनी शक्ति और गौरव से जीतता। नहीं नहीं भाई मेरा इस बात में विश्वास करो कि ऐसा नहीं हो सकता क्रूश पर घात किया हुआ दुष्कर्म्मी ईश्वर का पुत्र नहीं हो सकता। मुझे तो ऐसे शिष्य बनने में बड़ी लज्जा आवेगी। सुदर्शनदास ने उदास होकर उत्तर दिया कि मैं कह चुका हूं कि मैं आपही नहीं जानता हूं कि यह बात सच है कि नहीं यदि यह सच है तो परमेश्वर जो कुछ हम लोग उसे समझते हैं उस से बहुतही भिन्न होगा। यीशु ख्रीष्ट ने कहा कि मैं तुम लोगों को परमेश्वर को बतलाने के लिये आया हूं। जब हम लोग उस से सीखेंगे कि परमेश्वर सचमुच क्या है तो कदाचित् हम लोग समझ जावेंगे कि यह बात कैसे हो सकती है।

इस बीच मे तुम क्या करना चाहते हो। क्या

तुम ऐसे ही रहोगे न ईसाई न हिन्दू । मैं तो तुम्हें यह सम्मति देता हूं कि तुम जैसे थे वैसे ही फिर हो जाओ । जो धर्म्म हमारे बापदादों के लिये अच्छा था। वह ही हमारे लिये भी निस्सन्देह अच्छा है तो फिर उस बात के समझने की चिन्ता में तुम्हें क्यों पड़ना चाहिये जो कि तुम से कुछ संबंध नहीं रखती है ।

सुदर्शनदास ने कहा जो कुछ तुम कहते हो सो तो असंभव है । मैं ने इतना अधिक प्रकाश देख लिया है कि अब मैं अंधेरे मे नहीं लौट सकता । या तो मै उस परमेश्वर को पाऊं और जानूं जिसे यीशु खीष्ट प्रगट करने को आया था या मैं परमेश्वर को बिलकुल मानूंगा ही नहीं । हिन्दुओं के परमेश्वर पर तो मैं न बिश्वास कर सकता और न करूंगा ।

इतने में बाहर से यह हल्ला सुनाई पड़ा कि गेंद बल्ले का खेल पूरा हो गया । पन्नलाल यह देखने को चला गया कि कौन जीता ।

तीसरा अध्याय ।

यदि कोई उस की इच्छा पर चलने चाहे तो इस शिक्षा के विषय में जानेगा ।

सुदर्शनदास अकेले रह जाने से प्रसन्न हुआ । जो कुछ बातचीत अभी हुई वह उस के जीवन का बहुत ही बिशेष समय था यह पहिला ही समय था कि

उस ने जो कुछ उस के मन में बीत रहा था दूसरे से कहा और ऐसा करने से उस का सिद्ध हो गया था कि ईसाई धर्म्म की सत्यता मेरे मन में कितनी गड़ गई है। अब तो पीछे हटना नहीं हो सकता था केवल आगे आगे ही बढ़ना था यह प्रकाश जिस का कि झलक उस के पास तक पहुंची थी कहीं पूर्ण रूप से अवश्य चमकता होगा और उस प्रकाश की ओर उसे अवश्य बढ़ना चाहिये।

पत्तनलाल के शब्द अर्थात् "क्या तुम समझते हो कि ऐसा हो सकता है कि मनुष्य का पुत्र ऐसी लज्जित और नीच मृत्यु से मरे" उस को फिर स्मरण हुआ। यह बात तो निस्सन्देह सत्य है। कि कोई मनुष्य अपनी इच्छा से दूसरों के लिये न इतना क्लेश सहेगा और न मरेगा यदि यह बात सत्य हो कि ख्रीष्ट ने ऐसा किया है तो क्या यह सिद्ध न होवेगा कि वह सचमुच परमेश्वर का पुत्र है। जो कुछ मनुष्यों के लिये असंभव है सो निस्सन्देह परमेश्वर के लिये संभव है। पत्तनलाल कह चुका था कि मुझे क्रूश पर घात किये हुए दुष्कर्म्मी के शिष्य बनने में बड़ी लज्जा आवेगी। सुदर्शनदास ने बहुधा इस से भी बहुत बड़ी बात सुनी थी। परन्तु वह उस के मन में इतनी नहीं लगी थी जितनी कि आज की बात। क्या यह कारण न था कि यीशु ख्रीष्ट जितना वह समझता था उस से भी अधिक उस के लिये होता जाता था। उस ने धर्म्म पुस्तक के पन्ने जो उस के साम्हने रखी थी उलट पुलटकर एक बार

फिर भी उस सबही पूर्ण मनुष्य के जीवन चरित्र की अन्तिम घटनाओं को जो इस संसार में आया था पढ़ने के लिये अपने मन में ठाना ।

तब उस ने बाइबल रचित सुसमाचार खोलकर पढ़ी और ज्योंही उस ने उस अद्भुत घटना के विषय में जब कि वह निर्दोषी पापी न्यायियों के सन्मुख लाया गया और जब कि उस राजा के लिये उस की प्रजा ने मृत्यु दण्ड ठहराया पढ़ा त्योंही वह और सब कुछ भूल गया ।

इस दोषी ठहराये हुए मनुष्य के गौरव की उपमा किस से दी जा सकती है । यद्यपि उस का प्राण संकट में था तथापि अपने पक्ष में एक शब्द भी न बोला । जो हुल्लड़ करनेवाली भीड़ के बीच में अकेला ही भय में पड़ा हुआ शांति और स्थिर रहा । उस पढ़नेवाले के मुख से यह बात निकली कि निस्सन्देह वह मरना चाहता होगा नहीं तो वह अपने बचाने के लिये अवश्य यत्न करता । यदि उस ने मृतकों को जिलाया तो यह काम करना उस के लिये बहुत ही सहज था । परन्तु वह क्यों मरना चाहता था । यह तो सब से अधिक आश्चर्य्य की बात है ।

इस प्रश्न का उत्तर देने के लिये वहां कोई न था । उस सत्य के खोजी को कोई बतलानेवाला न था कि उस महान प्रभु ने अत्यंत लज्जा और क्लेश की मृत्यु से इस लिये मरना चाहा कि वह उन लोगों को जिन्हें पाप ने नष्ट कर डाला था अपने साथ पर-मेश्वर के अनन्त जीवन में भागी होने के लिये उठावे । वह अपने को इस लिये नहीं बचा सका क्योंकि वह

अपने बड़े ईश्वरीय प्रेम के कारण ऐसा करने से रुक गया। वह संसार में दूसरों को बचाने आया था और यह काम चाहे जो कुछ हो अवश्य पूरा होना चाहिये था।

सुदर्शनदास ने पढ़ा कि उन लोगों ने उसे कैसा तुच्छ समझा और उस का ठट्ठा किया तिसपर भी उस के मुख से जिसे मृतकों को जिलाने की शक्ति थी एक भी निन्दा की बात न निकली। वह दुःख उठानेवाला इस अत्यन्त क्लेश के समय में दूसरों से प्रबोध के शब्द बोलने के लिये अपने को कैसा भूल गया। तब उस ने पूरा हुआ इस विजय की पुकार के विषय में पढ़ा जो क्रूश पर घात किये हुए राजा के मुख से निकला और ज्यों ज्यों वह पढ़ता था त्यों त्यों उस का विश्वास होता जाता था कि यह सत्य ही है हां सत्य ही है।

तब यह कथा आरम्भ हुई कि वह जो प्रत्यक्ष रूप में मृत्यु के आधीन हुआ कैसे विजयी होकर कब्र से जी उठा। एक बार फिर भी वह पहिले की नाईं प्रबोध और सम्मति के शब्द बोलने के लिये उपस्थित हुआ। वही यीशु जो क्रूश पर लटकाया गया था। क्योंकि क्या उस के हाथ पांव में कील के चिन्ह नहीं थे। अंधेरा होता जाता था और इस लिये सुदर्शनदास देखकर नहीं पढ़ सकता था। उस ने अपने साम्हने की पुस्तक पर सिर झुकाया और उस के अन्तःकरण और मुख से यह शब्द निकला हे यीशु ख्रीष्ट यदि यह सत्य है कि तू अभी तक जीवता है यद्यपि तू

एक बार मर चुका था तो मुझ से बोल और अपने को मुझ पर प्रगट कर जिस से मैं जानूं कि यह सत्य है।

वह जीवता और महान ख्रीष्ट उस के साथ था जिस ने उस को इस प्रकार पुकारा और उस की पुकार व्यर्थ नहीं गई। वह गुरु जो ईश्वर है और जो कुछ समय तक तो मनुष्यों की दृष्टि में नहीं आता उस खोजी शिष्य पर प्रगट हुआ। और एक बार फिर भी यह उत्तर दिया गया मेरे प्रभु और मेरे ईश्वर।

उस दिन से जब कि सुदर्शनदास और पन्नलाल आपस में खाली शालागृह में बातचीत कर रहे थे एक हफ़्ता बीत चुका था और तब एक दिन सबेरे पन्नलाल ने अपने घर जाते हुए पीछे से किसी के जल्दी जल्दी आने की आहट सुनी और एक शब्द भी जिस को कि उस ने अपने सहपाठी का शब्द जान यह कहते हुए सुना कि मैं तुम से बात चीत करने का अवसर ढूंढ रहा था सो यदि आप चाहें तो मैं आप के साथ चलूं।

पन्नलाल ने प्रसन्नता पूर्वक स्वीकार कर लिया और सुदर्शनदास तुरन्त कहने लगा तुम्हें स्मरण होगा कि एक हफ़्ता हुआ हम लोगों की आपस में बात-चीत हुई थी और तुम ने मुझे अपनी पहिली दशा में लौट जाने की सम्मति दी थी। मैं जानता था कि यह बात नहीं हो सकती थी और अब मैं तुम से कहना चाहता हूं कि जो सन्देह मेरे मन में था सो अब सदा के लिये निवारण हो गया अब मैं

अपने पूर्ण हृदय से विश्वास करता हूं कि यीशु ख्रीष्ट सचमुच परमेश्वर का पुत्र है और यह भी कि वह अपनी निज इच्छा से क्रूश पर घात हुआ। परन्तु फिर जी उठा और आज के दिन भी जीवता है।

पत्तनलाल ने कुछ ठट्ठा करते हुए कहा ठीक है परन्तु कृपा करके कहिये कि आप ने यह अद्भुत खोज कैसे लगाया। हो सकता है कि यीशु ख्रीष्ट ने आपको तुम्हें दर्शन दिया हो और इस प्रकार तुम्हारे मन को इस विषय में स्थिर कर दिया हो।

सुदर्शनदास ने बड़े आदर के साथ उत्तर दिया। हां सचमुच उस ने ऐसे स्पष्ट रीति से दर्शन दिया कि मैं अब यह कभी नहीं सोच सकता कि वह उन्नीस सौ वर्ष के पीछे नहीं जीवता है।

अरे भाई। यदि तुम यह जानना चाहते हो कि यीशु ख्रीष्ट जीवता है तो उस से मेरे समान प्रार्थना करो कि वह तुम्हें दर्शन देवे।

पत्तनलाल ने कुछ उत्तर नहीं दिया। वह उस से जिस ने इतने विश्वास और उत्साह के साथ बात-चीत किई निन्दा के शब्द न बोल सका और तिसपर भी वह बातचीत करनेवाले के साथ सहमत दिखाई पड़ने की भूल बिलकुल न करना चाहता था।

जब कि दोनों तरूण पुरुष थोड़ी देर बातचीत करने से रूककर चुपचाप चले जा रहे थे पत्तनलाल ने पूछा अब तुम क्या करोगे।

सुदर्शनदास ने उत्तर दिया तुम पूछते हो मैं क्या कर सकता हूं उसे जो मेरे विश्वास और प्रेम के

योग्य है पाकर मैं खुलाखुली उस का शिष्य बनना स्वीकार करूंगा और इस बात को मैं ज्योंही ठीक अवसर पाऊंगा त्योंही करूंगा।

क्या तुम ने सोच लिया है कि इस का क्या फल होगा तुम्हारे माता पिता ही तुम से घिन्न करेंगे और तुम्हें तुच्छ समझेंगे।

उस ने उत्तर दिया हां मैं सब कुछ जानता हूं क्योंकि ख्रीष्ट उन से छल नहीं करता जो उस के पीछे हो लेना चाहते हैं। मैं तुम से जो कुछ उस ने कहा है ठीक ठीक कह सकता हूं क्योंकि मैं ने वे शब्द कंठ कर लिये हैं।

पत्तनलाल ने कहा कहिये।

तब सुदर्शनदास ने इन शब्दों को सुनाया। तुम्हों में से जो कोई अपना सर्वस्व त्यागन न करे वह मेरा शिष्य नहीं हो सकता है। जो माता अथवा पिता को मुझ से अधिक प्रेम करता है सो मेरे योग्य नहीं। परन्तु सुनो मैं तुम से बड़े बड़े और सदा रहनेहारे फलों के विषय में कहता हूं यीशु ख्रीष्ट ने यूं कहा है कि जो कोई मनुष्यों के आगे मुझे मान लेगा उसे मैं भी अपने स्वर्गवासी पिता के आगे मान लेऊंगा। क्या तुम समझते हो कि ऐसा हो सकता है कि उस समय में यह विचार करूं कि मैं किस प्रकार पृथिवी पर तुच्छ समझा गया। उन मुख्य बातों में जो यीशु ख्रीष्ट हम लोगों को सिखलाता है एक यह है कि हम को केवल वर्त्तमान सुख ही के लिये इस जीवन की बातों पर ध्यान न देना चाहिये परन्तु भविष्य की ओर देखना चाहिये कि हम को उस समय क्या मिलेगा।

पत्तनलाल इन शब्दों के सुनने से बिचार में पड़ा। उस के हृदय के बिचार उस के साथी के शब्दों की ओर झुकते थे और यदि वह सत्य बोलता तो कदाचित् यह कहता तुम तो मुझे समझाकर ईसाई ही बनाने पर हो। परन्तु इस के बदले उस ने यह उत्तर दिया कि इन बातों पर बिश्वास करने से तुम्हें कोई हानि तो न पहुंचेगी परन्तु मैं यह नहीं समझ सकता कि तुम अपने मित्रों को कलंक लगाने और शोक में डालने के बदले उन्हें अपने मन ही में क्यों नहीं रखते हो।

सुदर्शनदास ने उदास होकर उत्तर दिया यही तो सब से कठिन बात है मैं उन्हें शोक से बचाने तो चाहता हूं बिशेष करके अपनी माता को जिसे अधिक शोक होगा। परन्तु मेरा पहिला कर्त्तव्य कर्म्म उस की आज्ञा पालन करना है जो माता पिता से भी बढ़कर है। यदि मैं उस के बचन के अनुसार न चलूं तो मैं उस के योग्य नहीं हूं।

पत्तनलाल ने और फिर कुछ न कहा क्योंकि वह जान गया कि मेरा मित्र समझाने से न मानेगा अब तो वह अपने घर पहुंच गया और इस लिये वे एक दूसरे से बिदा हुए। जब लगभग एक महिना हो चुका तब सुदर्शनदास ने एक दिन उस से कहा कि मेरा बपतिसमा आनेवाले इतवार को होनेवाला है इस लिये मैं चाहता हूं कि तुम वहां आओ। पत्तनलाल ने जाने की प्रतिज्ञा तो नहीं किई थी परन्तु जब वह दिन आया तब वह किसी अदृष्ट शक्ति के द्वारा

गिरजे घर में आ पहुंचा और जब उस ने अपने सहपाठी को उस पर जिसे कि उस के कितने एक देशवासी तुच्छ समझते थे अपना विश्वास निडर होकर स्वीकार करते सुना तो उस के मन में यह प्रश्न उठा यदि यीशु ख्रीष्ट अभी तक जीवता नहीं है तो कहां से यह शक्ति आई जिस से सुदर्शनदास ने उस के निमित्त अपनी प्यारी से प्यारी वस्तु को भी त्याग देने के लिये तैयार हो गया। यदि वह जीवता है तो वह अवश्य मनुष्य से बढ़कर रहा होगा। उस ने अपने मन में ठान लिया कि मैं अपना मित्र से मुख न मोड़ूंगा क्योंकि जो कुछ वह सत्य समझता था उस के स्वीकार करने में उस ने साहस किया और यद्यपि मैं ईसाई कहलाना चाहता हूं तिसपर भी मैं ख्रीष्टीय धर्म्म से जो कुछ लाभ हो सकता है उठाऊंगा और सुदर्शनदास को यह सिद्ध कर दिखाऊंगा कि यही उत्तम रीति है।

इस लिये ऐसा हुआ कि पन्नलाल चांदनी रात में अकेला बैठा था और यह सोच विचार कर रहा था कि मेरा भाई क्या समझेगा यदि वह जान पावे कि मैं ईसाई पुस्तक प्रतिदिन पढ़ा करता हूं और कुछ कुछ उस की शिक्षा के अनुसार भी चलने का यत्न करता हूं।

चौथा अध्याय ।

सुन्दरी ।

अपने पाठकों को सुदर्शनदास से परिचय कराके और उस का कुछ पूर्व वृत्तान्त कहकर अब हम उस के घर का बर्णन करेंगे ।

उस समय से सात बर्ष हो चुके थे जब कि सुदर्शन-दास ने अपनी जीवन की यह बड़ी तबदीली किई अर्थात् कि उस ने अपने बापदादों का धर्म्म छोड़कर प्रभु यीशु ख्रीष्ट को अपना गुरु और अगुवा स्वीकार किया । इस तबदीली का पछतावा उसे छण भर के लिये भी कभी नहीं हुआ यद्यपि इस के कारण उसे अपने सब प्यारों से अलग होना पड़ा और वे लोग उस से घृणा करने लगे और उसे तुच्छ समझने लगे जिन को कि आपत्ति के समय में उस की रक्षा और सहायता करना चाहिये था ।

उस के कुटुम्बियों ने जिन्हों ने उसे मरा समझ लिया था दो बर्ष तक उसे कोई चिट्ठी नहीं भेजी । तब ऐसा हुआ कि एक दिन एक चिट्ठी आई । उस में कोई मुहर छाप न थी और उस का लिखना भी ऐसा था जो केवल पढ़ा ही जाता था उस के भीतर कागज़ का एक छोटा सा टुकड़ा था जिस पर जान पड़ता था कि कठिनाई से यह शब्द लिखे गये थे कि मैं भी ईसाई होना चाहती हूं और मुझे ले चलो ।

जब सुदर्शनदास ने इस बुरे अक्षरों में लिखे हुए

सन्देश को पढ़ा तो उसे निश्चय हो गया कि इसे अवश्य करके मेरी स्त्री ने लिखा होगा। जिस को कि मैं ने अपने में बिचार किया कि वह मुझ से सदा लों अलग रहेगी परन्तु यह लिखना बिलकुल न जानती थी मुझे जान पड़ा कि उस ने इस में निःसन्देह बहुत यत्न किया होगा और ज्योंही उस ने चिट्ठी के शब्द पढ़े त्योंही उस की आंखें भर आईं। सचमुच वह बड़ी प्रसन्नता से जाना चाहता था यद्यपि वह उस सोच बिचार में था कि मैं अपना मनोरथ कैसे सिद्ध कर सकूंगा। डाक की मुहर से उसे जान पड़ा कि वह कुछ मील दूर एक गांव में अपने पिता के घर में रहती थी। छुट्टी लेकर वह चला और तुरन्त ही उस घर के समीप पहुंचा जिस में वह रहती थी जिस की खोज में वह निकला था। तब वह सोच बिचार करने लगा कि क्या मैं खुला खुली जाकर अपनी स्त्री को बिदा कर देने के लिये कहूं या छिपकर उस से भेंट करूं।

इस सोच बिचार में उस ने वह एक्का जिस में वह बैठकर आया था वहीं छोड़ दिया और एक्केवाले से थोड़ी दूर पीछे अपने पीछे पीछे आने के लिये कहकर धीरे धीरे चला। आंगन का द्वार खुला था। सीधे चले जाना बहुत सहज बात थी परन्तु ऐसा करने के पहिले उस ने यह पूछकर अपना आना प्रगट किया क्या कोई घर में है। मैं भीतर आऊं।

उस की स्त्री ने उत्तर दिया आइये और ज्योंही उस ने द्वार खोला त्योंही वह उस से भेंट करने के लिये गई क्योंकि वहां और कोई नहीं दिखाई पड़ता था।

पति और स्त्री के अलग हुए दो बरस से अधिक हो चुके थे और इस बीच में वह जो कि बच्चा ही के तुल्य थी अब पूरी स्त्री हो गई थी। पहिले पति ही बोला और यह कहा कि मैं ने तुम्हारी चिट्ठी पाई और तुम्हें लेने को आया हूं परन्तु यह कैसे हो सकता है। क्या वे तुम्हें जाने देवेंगे।

उस स्त्री ने उत्तर दिया मेरे पिता को मरे एक महीना हो चुका और तब से मेरी माता बिलाप करती रहती है कि अब उस को सदा के लिये मेरा पालन करने पड़ेगा इस लिये मैं समझती हूं कि वह मुझे जाने देवेगी। और ऐसा ही हुआ। बिधवा होने की अपेक्षा ईसाई पतिवाली स्त्री होना अच्छा है और इस लिये सम्मति दे दिई गई और थोड़ी देर में उस एक्के में एक के बदले दो बैठकर चले अब तो सुदर्शनदास संसार में अकेला न रहा। यह सब छः बर्ष में हुआ था। और अब इस बीच में दो लड़कियों के उत्पन्न होने से उन का कुटुम्ब बढ़ गया था जिस से पिता को बहुत ही आनन्द हुआ जो कदाचित इतना खो बैठने के कारण उन को बहुत ही अधिक प्यार करता था। परन्तु एक कारण से उस को बड़ा शोक रहता था। ज्यों ज्यों दिन बीतते जाते थे त्यों त्यों वह यह बिना सो। नहीं रह सकता था कि मेरी स्त्री केवल मेरे ही कारण आई और ख्रीष्ट के निमित्त नहीं जिस नाम के पीछे वह आज कल पुकारी जाती है। यह बात सच है बपतिस्मा होने के पहिले उसे भली

और सावधानी से शिक्षा मिली थी और उस ने उन सत्य बातों को भी ग्रहण कर लिया था जो उसे बतलाई गई थीं। परन्तु समय बीतने पर यह सिद्ध हो गया था कि उस ने प्रभु यीशु को अपने हृदय से ग्रहण नहीं किया था और न उसे उस के विषय में जानने की और उस की आज्ञा पालन करने की कोई सचमुच इच्छा थी। वह उत्साहपूर्वक प्रार्थना किया करता था कि उस की आंखें खुल जावें जिस से कि वह त्राणकर्त्ता की आवश्यकता देखे और अपने को उस के हाथ में सौंपे जो उसे ग्रहण करने के लिये सदा तैयार रहता है। यह केवल दुःख ही की बात नहीं थी कि सुन्दरी अच्छी ईसाई न थी। परन्तु वह भली स्त्री और माता भी न थी। वह घर को मैला कुचैला और बुरा रखती थी। और उस की दोनों छोटी लड़कियां जैसा वे चाहती थीं वैसा करने पाती थीं। वह अल्पवय माता यह बात बिलकुल नहीं समझती थी कि ईसाई स्त्री और माता को हिन्दू स्त्री और माता से बिलकुल भिन्न होना चाहिये और इस लिये जैसी उस की माता ने उस को शिक्षा दिई थी वैसी ही उस ने अपनी दोनों छोटी लड़कियों को भी दिई जिस का सचमुच यही अर्थ होता था कि उन को बिलकुल शिक्षा मिली ही नहीं। उस उक्त दिन की दशा और दिनों की दशा से भी बुरी थी वह घर जो कभी स्वच्छ नहीं रहता था और दिनों की अपेक्षा उस दिन और भी अधिक मैला कुचैला था। उस दिन पहिले बड़ी आंधी चली

जिस से घर धूल से भर गया था। उस के स्वच्छ करने के लिये प्रयत्न न किया गया था और जब कि सुदर्शनदास अपने दिन भर के काम के लिये तैया-रियां करने लगा तो हर एक वस्तु जिसे वह छूता था धूल से भरी पाता था। उस की दोनों छोटी लड़कियां जिन को वह बहुत प्यार करता था मैले से मैले कपड़े पहिने हुए इधर उधर खेल रही थीं यहां तक कि पिता को उन्हें अपनी लड़की कहने में लज्जा आती थी। उस की स्त्री भी बहुत कुछ वैसी ही दिखाई पड़ती थी और उस उदास रूपी स्थान में आलस्य से बैठी थी और उसे सुधारने के लिये न आप ही प्रयत्न करती थी और करने के लिये न किसी को लगाती थी। सुदर्शनदास बड़ा क्षमाशील पुरुष था और उसे ऐसे मैले कुचैले में रहने का कुछ अभ्यास हो गया था परन्तु आज की दशा उस के सहने योग्य न थी और उस ने अपनी स्त्री से झिड़ककर कहा कि इस प्रकार का घर तो नीच से नीच जाति के हिन्दू के लिये भी अप-मान की बात होगी। स्त्री ने भी उसी प्रकार झिड़क-कर उत्तर दिया कि यदि आप अपना घर स्वच्छ कराना चाहते हैं तो नौकर लगाइये क्योंकि झाड़ना बुहारना मेरा काम नहीं है। इसी प्रकार और भी कहाकुही हुई। और थोड़ी देर के पीछे सुदर्शन-दास अपनी आलसी स्त्री से और दिनों की अपेक्षा अधिक अप्रसन्न होकर घर से चला गया।

ज्योंही उस का क्रोध शांत हुआ त्योंही सुन्दरी

बहुत उदास होने लगी। उस का पति सदा ऐसा दयालु और कोमल चित्त रहता था कि उसे तीक्ष्ण शब्द जिन के योग्य वह बहुत कुछ थी कभी नहीं सुनना पड़े थे। और जब दोनों छोटी लड़कियां अपना कलेवा कर चुकीं तो उस ने अपना कलेवा छोड़ दिया हुआ भी नहीं और बैठकर रोने लगी। इतने में उसे यह कहते हुए एक शब्द सुनाई पड़ा जिसे वह नहीं पहचानती थी कि क्या मैं भीतर आऊं। क्योंकि द्वार खुला था इस लिये पुकारनेवाली उत्तर के लिये न ठहरकर भीतर चली गई। जब कि वह स्वच्छ श्वेत साड़ी जिस पर कि एक छींटा तक भी न पड़ा था पहिरे हुए धूप में खड़ी हुई तो उस के और उस घर की स्वामिनी के बीच में बड़ा ही भेद दिखाई पड़ा। अपने पति की घुड़की से मन में दुःखित होकर सुन्दरी भी अपने और अपने आस-पास की दशा के कारण लज्जित हुई और पछताने लगी। अपनी आंखें पोंछती हुई वह भीतर के कोठे में गई और एक चौकी निकालकर लाई परन्तु पाहुनी ने उस की दशा देखकर बिछौने पर बैठना ठीक समझा जो कुछ कुछ स्वच्छ दिखाई पड़ता था। तब उस ने कहा क्या तुम मुझे जानती हो। थोड़े दिन हुए कि मेरा पति यहां बदलकर आया है क्योंकि वह तुम्हारे पति को पहचानता था इस लिये उस ने उसे अपने घर बुलाया और जब कि वह आया तब उस ने मुझ से यहां आकर तुम से भेंट करने के लिये कहा आज मुझे अवकाश मिला

इस लिये मैं आई हूं। तब सुन्दरी को स्मरण हुआ कि मेरे पति ने मुझ से इस आनेवाली पाहुनी के विषय में कहा था परन्तु अपने दुःख के कारण उस दिन वह और सब कुछ भूल गई थी।

जब बातचीत होने लगी तब दोनों छोटी लड़कियां दौड़ती हुई आ गईं और तब वे उस स्वच्छ वस्त्र पहिरे हुई पाहुनी के पास खड़ी हुईं जिस ने कि उन्हें अपने पास बुला लिया था तब सुन्दरी फिर भी लज्जित हुई। पाहुनी ने कहा कि मेरी छोटी लड़कियां इतनी बड़ी हैं कि पाठशाला जाने लगी हैं और जब वे घर में नहीं रहतीं तो घर बहुत ही सुनसान जान पड़ता है। तुम अपनी माता के साथ किसी दिन मेरे घर आकर मुझ से भेंट करो तो अच्छा हो। दोनों छोटी लड़कियों ने बड़े प्यार से उत्तर दिया अच्छा हम आवेंगी क्योंकि उस मधुर शब्द में और प्रसन्न मुख में कुछ ऐसा प्रभाव था जिस से कि लड़कियां तुरन्त मोहित हो गईं। जब वह जाने लगी तब उस ने कहा हे बहिन तुम उदास और दुःखित दिखाई पड़ती हो। यदि तुम किसी प्रकार की सहायता चाहो तो मैं प्रसन्नता-पूर्वक जहां तक बन पड़ेगा करूंगी।

इन दयालु शब्दों से उसे फिर रुलाई आ गई और यह सिद्ध हो गया कि वह उदास केवल दिखाई ही नहीं पड़ती थी परन्तु सचमुच में उदास थी। पाहुनी ने उसे अपने पास बैठा लिया और दयापूर्वक कहा कि

मुझे अपना दुःख बतलाओ कदाचित मैं तुम्हारी सहायता कर सकूं।

सिसकते हुए सुन्दरी ने कहा मेरा पति मुझ से अप्रसन्न है और मैं नहीं जानती कि मैं किस रीति उसे प्रसन्न करूं।

जब पाहुनी ने घर को चारों ओर मैला कुचैला देखा तो उसे उस अप्रसन्न पति के साथ उतनी ही हमदर्दी हुई जितनी कि उस दुःखित स्त्री के साथ। क्योंकि यह आवश्यकता नहीं थी कि कोई उस से इस विपत्ति का कारण कहता।

तब उस ने धीरे से कहा कदाचित तुम्हारे पति को तुम से अप्रसन्न होने का कोई कारण है। मैं समझती हूं कि मैं उस का अनुमान कर सकती हूं।

सुन्दरी ने क्रोधित होकर उत्तर दिया कि मेरी माता को कभी यह आशा नहीं थी कि मुझे झाड़ना बहारना पड़ेगा। यह मेरा काम नहीं है और मैं उसे न करूंगी। पाहुनी ने मुसकुराकर कहा मैं समझती हूं कि जब मैं आई तब मैं ने एक नौकरनी देखी क्या वह नहीं झाड़ सकती।

उस ने उत्तर दिया हां जब वह चाहती तब झाड़ती है परन्तु वह बड़ी आलसी है और कल रात को जब वह अपने घर गई तब से अभी आई है।

तब पाहुनी ने पूछा कि क्या तुम अपने पति को अप्रसन्न करने की अपेक्षा झाड़ने बहारने से अधिक डरती हो। क्या तुम्हें स्मरण नहीं है कि हमारे प्यारे यीशु ने अपने शिष्यों के पांव धोये। तो हम

लोगों को अपने घर झाड़ने में क्या लज्जित होना चाहिये जब कि उस काम को करने के लिये और कोई नहीं है। उसी समय वह भागी हुई नौकरनी आ पहुंची और उस की स्वामिनी ने जो कुछ गड़बड़ हुई थी उस सब का दोष उस पर लगाकर अपना दुःख हलका किया। पाहुनी के मन में आया कि मैं इस मैले कुचैले घर को स्वच्छ करने में सहायता दूं परन्तु उस ने देखा कि अभी इस की आवश्यकता नहीं है। इस लिये वह फिर भी जाने को तैयार हुई और उस नेवते को फिर से दुहराया जिसे कि वह उन दोनों छोटी लड़कियों को दे चुकी थी और भेंट का दिन भी ठहराया।

पांचवां अध्याय।

गमोलीन।

गमोलीनसिंह उदास चित्त से अपने घर लौटी जहां वह पहिले थी तहां ही वह सुदर्शनदास के विषय में सुन चुकी थी और वह उस से हमदर्दी और संगति करने की बाट जोहती थी जो ख्रीष्ट के निमित्त इतना दुःख उठाकर जैसा उस का निश्चय था उस के अनुरागी भक्त बन गये थे। सुन्दरी के पति की भेंट से कुछ निराश हुई परन्तु जब उसे उस उदास हृदय का स्मरण आया जिसे वह तुरन्त छोड़कर आई थी तो उस के मन में

उदासी छा गई । जब कि उस ने अपने मन में यह सोचा कि हमारे ईसाई कहलाने से क्या लाभ है यदि हम ने सीखा है उस से हम अच्छी स्त्रियां और माता बन सकती हैं । तब वह पति स्त्री और सब से अधिक ख्रीष्ट के निमित्त दुःखित हुई । यदि हम अपने हिन्दू परोसियों से अधिक भले नहीं हैं अथवा उन से बुरे हैं तो हम अपने प्रभु का कैसा अपमान करते हैं ।

तब उस को उस समय का स्मरण आया जब कि वह आपही यह नहीं जानती थी कि ईसाई होने का अर्थ सीखनेवाला और ख्रीष्ट का अनुगामी होना है और जब कि वह कभी २ गिरजा घर जाने ही से और घर में पुस्तक के कुछ पद पढ़ने ही से पूर्ण संतुष्ट रहती थी । वह प्रभु यीशु ख्रीष्ट के विषय में तो जानती थी परन्तु उसे अपना प्रभु और गुरु कभी नहीं समझी थी जिस को प्रसन्न करना उस के जीवन का मुख्य उद्देश्य होना चाहिये था । तब उस को उस की भेंट का स्मरण हुआ जिस का जीवन ऐसा भिन्न प्रकार का था कि वह समझने लगी कि मैं भी स्वार्थी और निरर्थक जीवन व्यतीत करती हूं । मोनिका मुकरजी ने उस को सिखलाया था कि ईसाई होने का अर्थ ख्रीष्ट का होकर रहना है और उसे सब बातों में प्रसन्न करने का यत्न करना है ।

पहिले पहिल तो उसे इस नये जीवन के जीवन की कोई इच्छा न थी । परन्तु शोक और भय के समय में उस ने ख्रीष्ट का शब्द यह कहते सुना था कि

हे सब लोगो जो परिश्रम करते और बोझ से दबे हो मेरे पास आओ और मैं तुम्हें बिश्राम देऊंगा। उस ने उसे सुनकर माना और तब से उस का जीवन बदल गया था।

उसे यह अविचारी और यह असावधान स्त्री ऐसी दिखाई पड़ी जैसी कि वह पहिले आप ही थी और उस के हृदय से यह प्रार्थना उत्साहपूर्वक निकली कि हे प्रभु यदि वह तुझे और तेरे प्यार को नहीं जानती है तो यह बर दे कि मैं उसे तेरे पास ले आऊं।

जब वह अपने घर पहुंची तो उस ने अपने घर में और उस में जिस को वह तुरन्त ही छोड़कर आई थी क्याही भिन्नता देखी धन और सुख चैन के चिन्ह तो नहीं परन्तु केवल स्वच्छ और शांति के चिन्ह वहां थे। यह घर उतनाही अपनी स्वामिनी के योग्य था जितना कि दूसरा अपनी स्वामिनी के योग्य था। एमीलीन सिंह सीधी भीतर के कोठे में चली गई और वहां घुटने टेककर उस ने एक बार फिर भी इस कुटुम्ब को परमेश्वर के हाथ में सौंपा और यह बिनती किई कि हे ईश्वर यदि मैं उन को अधिकतर अच्छे जीवन में ले जाने के लिये ठहराई जाऊं तो मैं उस काम को जो कि मुझे सौंपे जावें सच्चे प्रकार से कर सकूं। जब से वह ख्रीष्ट के शिक्षालय में आई थी तब से उस ने कई सीखने योग्य शिक्षायें पाई थीं परन्तु उन में एक मुख्य शिक्षा यह थी कि प्रार्थना के बिना कोई काम न करना। उस के बिन जाने धीरे २ यह उस के जीवन की रीति होती

आती थी जैसे वह अपने संबंध और लाभ की बातों को अपने पति से स्वाभाविक प्रकार से कहा करती थी वैसे ही उन सब बातों को जो उस के साम्हने पड़ती थीं अपने प्रभु से स्वाभाविक प्रकार से कहने के लिये सीख रही थी।

उस ने एक दिन अपने मित्रों से कहा मुझे कोई भी बात उससे क्यों छिपाना चाहिये जब कि वह मुझे अपने में रहने के लिये कहता है। यदि मैं ऐसी अगनता से उस में मिली हूं तो सब कुछ जो कुछ मुझ से संबंध रखती है उस का भी अवश्य होना चाहिये।

एक बात और भी करनी थी। ख्रीष्ट की यह दासी उन लोगों की सदा एक नाम की पत्री रखती थी जो विशेष उस के हृदय में रहते थे और जिन के लिये वह नित्य प्रार्थना करना चाहती थी इस लिये नये नाम जुड़ गये और सुदर्शनदास और उस की स्त्री और लड़केवाले नित्य प्रार्थना में राजाओं के राजा के सन्मुख लाये जाते थे। एमीलीन बहुत देर तक अकेली न रहने पाई। एक गाड़ी आ पहुंची और तब उस ने एक शब्द को जिस को वह पहचानती थी यह कहते सुना कि क्या कोई घर में है।

उस पाहुनी को बहुत देर नहीं खड़े रहने पड़ा। वह तुरन्त बैठकर अपनी बातचीत करने लगी। उस ने कहा तुम्हें स्मरण होगा कि एक बार तुम ने मुझ से कहा था कि मैं प्रसन्नतापूर्वक कुछ जनाना काम करूंगी यदि कोई ऐसा निकट होवे जहां मैं जा सकूं। मेरा एक विद्यार्थी अभी यहां निकट

ही आकर रहा है इस लिये मुझे उस के यहां जाने में अब बड़ी कठिनाई पड़ती है। परन्तु तुम्हारे लिये बहुत सहज पड़ेगा यदि तुम उस के पढ़ाने का काम अपने हाथ में ले लेओ तो मैं यह घर तुम्हारा ही समझूंगी।

समीलीन का मुख झलकने लगा। इस नये स्थान में अपने प्रभु के लिये कुछ काम करना यह बहुत ही चाहती थी। और अब बिना ढूंढ़े हुए वह उसे अकस्मात मिल गया उस ने अपने हृदय में कहा कि हे प्रभु मैं तेरा धन्य मानती हूं। और उस ने अपने मुख से कहा मैं उस घर को जाने मे बड़ा उपकार मानूंगी। इस नये स्थान में आकर मानो फिर से जीवन आरंभ करना है और मैं प्रति-दिन यही आशा करती रहती हूं कि मुझे कोई काम करने को मिले।

पाहुनी ने उत्तर दिया इस बात की कोई चिन्ता नहीं है। परमेश्वर को इस देश में इतना अधिक काम कराना है और उसे इतने कम करनेवाले हैं कि हम लोगों को निश्चय हो सकता है कि वह किसी को जो उस को करने के लिये तैयार है आलसी न बैठा रखेगा। तब उस घर का पता बतलाकर वह पाहुनी चली गई। वह अपने हृदय में कैसी आनं-दित हुई जब कि उस ने यह जाना कि यह नई आई हुई ऐसी स्त्री है जिस ने अपना हृदय और जीवन ख्रीष्ट को सौंप दिया है जिस ने उसे मोल ले लिया है और इस लिये वह उन लोगों के लिये

जिन के बीच में वह रहने को आई है निस्सन्देह आनंद का कारण होगी। मार्ग में जाते हुए उस ने आनन्दपूर्वक अपने मन में कहा मुझे तो ऐसा जान पड़ता है कि माना मुझे एक नई मित्र और सहकर्म्मी मिल गई है। अब तो दस बज गये थे और उस का पति अपने काम से और लड़के पाठशाला से जल्दी ही आनेवाले थे इस लिये अब इस नये घर को जाने के लिये समय न था क्योंकि यह स्त्री और माता जानती थी कि उन लोगों की जिन्हें कि परमेश्वर ने मुझे दिया है चिंता करना और अपने घर को ठीक रखना भी विशेष काम है जिस को परमेश्वर ने मुझे सौंपा है।

छठवां अध्याय।

शिखरानी।

उस दिन कोई हिन्दू तेवहार था इस लिये पन्नालाल की छुट्टी थी और वह घर ही में था यह बात और किसी दिन नहीं हो सकती थी। उस का मन एक पुस्तक के पढ़ने में लगा कि इतने में किसी के पैरों की आहट से उस ने ऊपर ताका और देखता क्या है कि एक हिन्दुस्तानी स्त्री स्वच्छ और श्वेत साड़ी पहिरे हुए मेरे साम्हने खड़ी है।

उस के रूप से और इस बात से कि वह पैदल चलकर आई थी पन्नालाल जान गया वह निः-

सन्देह ईसाई है और आश्चर्य करने लगा कि ऐसी पाहुनी जो पहिले कभी नहीं आई आज कैसे मेरे घर पहुंची। उस को बहुत देर तक सन्देह में न रहना पड़ा। उस पाहुनी ने कहा कि उस मिससाहिबा ने जो कि आप की स्त्री को पढ़ाती थी मुझ से यहां आने के लिये कहा। क्या मैं आप की स्त्री से भेंट करके यह प्रबन्ध करूं कि मेरे लिये आकर उसे पढ़ाने का कौन सा उत्तम समय होगा।

पन्नलाल यह बात चाहता ही था और इस लिये अपनी स्त्री को बुलाने के लिये गया। पहिले वह लजाती थी और कुछ नहीं बोलती थी परन्तु जब एमोलीन के कहने पर पन्नलाल चला गया तो उस का मुंह खुला और फिर अच्छी रीति से बातचीत होने लगी। यह नहीं हो सकता था कि रुक्मिणी अपने उस छोटे लड़के के विषय में बातचीत किये बिना रह सकती जिस को कि वह बहुत प्यार करती थी और जो केवल थोड़े ही दिन जीवता रहा। ज्यों ही वह अपनी छूछी गोद और सूने घर के विषय में बोल रही थी एमोलीन ने उस का हाथ पकड़कर कहा हे प्यारी बाई मैं जानती हूं कि यह दुःख कैसा होता है क्योंकि मेरा पहिलौठा छोटा लड़का भी एक वर्ष का होकर जाता रहा और मैं भी यही कहा करती थी कि मेरी गोद छूछी हो गई। परन्तु तब से मैं यह समझ गई हूं कि परमेश्वर ऐसा आनन्द दे सकता है जिसे कोई नहीं ले सकता। रुक्मिणी ने उदास होकर कहा कि जब

तक मेरे दूसरा लड़का न हो तब तक मैं फिर कभी सुखी नहीं रह सकती। एमीलीन ने तुरन्त उत्तर नहीं दिया उस को रुक्मिणी से जो कि जानती थी कि शोक क्या है परन्तु शांतिदाता परमेश्वर के विषय में कुछ भी नहीं जानती थी इतना कुछ कहना था कि उसे यह सोचना पड़ा कि कैसे आरंभ करूं और पहिले क्या कहूं।

उस ने क्षणभर ठहरकर पूछा कि क्या मैं तुम से उस विधवा स्त्री की कथा कहूं जिस का एकलौता पुत्र मर गया परन्तु जिस को वह फिर मिल गया।

रुक्मिणी ने कहा वह मरा न होगा नहीं तो वह उसे फिर कैसे मिलता। जो मरता है सो फिर कभी नहीं लौटता। कैसे लौट सकते हैं।

एमीलीन ने कुछ उत्तर नहीं दिया परन्तु उस कथा को पढ़ने लगी। जब वह पढ़ चुकी तो रुक्मिणी ने कुछ ध्यान न देकर कहा कि मैं यीशु ख्रीष्ट के विषय में जानती हूं यह उस की पुस्तक है। मेरे पति के पास धर्म्मपुस्तक का नया नियम है और कभी २ मैं ने उस को उसे पढ़ते सुना है। मैं चाहती हूं कि मैं भी उन दिनों में होती तो कदाचित् वह मेरे बच्चे को जिला देता। परन्तु अब तो कोई नहीं है जो ऐसा कर सके।

तब एमीलीन ने उस से कहा कि मैं इस बात का बिश्वास करती हूं कि मेरा छोटा लड़का जो दस बर्ष हुए मर गया अभी तक परमेश्वर के घर में जीवता है और किसी दिन मैं जाकर उस के साथ रहूंगी।

रुक्मिणी ने निश्चिन्तता से उत्तर दिया कि आप ईसाई हैं और यह तुम्हारा धर्म्म है परन्तु मैं हिन्दू हूं और हमारा धर्म्म भिन्न है।

एमोलीन ने जाना कि यह ऐसी स्त्री है जिस को मैं बातचीत करने की अपेक्षा प्रार्थना करने के द्वारा अधिक लाभ पहुंचा सकती हूं। इस लिये उस ने उस से अपनी पुस्तक लाने के लिये कहा जिस विषय में उस का मन अधिकतर लगता हुआ दिखाई पड़ा। और तब प्रतिदिन पाठ पढ़ाने का समय नियुक्त करके वह चलने लगी।

रुक्मिणी ने पूछा कि क्या आप भजन न गावेंगी मिससाहिबा जो आती थीं सदा गीत गाया करती थीं।

एमोलीन फिर बैठ गई और तुरन्त ही उस की स्तुति के शब्द जो हिन्दुओं और ईसाइयों का भी त्राणकर्त्ता है गूंजने लगे।

जब यह पाहुनी घर से निकलकर जाने लगी तो धत्तनलाल साम्हने आ गया और विनयपूर्वक कहने लगा कि मैं समझता हूं कि आप मेरी स्त्री को बहुत ही मूर्ख और अज्ञान पावेंगी।

एमोलीन ने तुरन्त उत्तर दिया कि नहीं नहीं। यदि वह ऐसी होवे भी तो केवल इस लिये कि वह पढ़ाई नहीं गई है। तब एकाएक इस के साथ ही उस ने उत्साह पूर्वक यह भी कहा कि क्या हम लोग सब बड़े मूर्ख और अज्ञा हैं? तौभी परमेश्वर हमें सिखाने के लि

तैयार रहता है। हम लोगों को चाहिये कि उस की इच्छा को जानें और पूरी करें। इतना कहकर वह चली गई।

पत्तनलाल इन शब्दों को अर्थात् हम को चाहिये कि परमेश्वर की इच्छा को जानें और पूरी करें सोचता खड़ा रहा। उस को यह संभव जान पड़ता था कि यदि मैं परमेश्वर की इच्छा को जानूं भी तो उसे पूरी करना न चाहूंगा। इस से यही अच्छा होगा कि मैं उसे जानूं ही नहीं। इतने में चिट्ठीरसा चिट्ठी लेकर आ पहुंचा और इस लिये उस का मन और दूसरी बातों में लग गया यह चिट्ठी उस के भाई के पास से आई थी जिस ने यह लिखा था कि मेरी स्त्री कुछ दिन के लिये अपने मैके जानेवाली है इस से मैं अपनी बिधवा बहिन को भेजना चाहता हूं कि वह जाकर कुछ दिन अपने छोटे भाई के साथ रहे।

जब पत्तनलाल ने यह बात पढ़ी तो उस ने सोचा जान पड़ता है कि मेरा भाई अब अंग्रेज मिस साहिब के आने के डर को भूल गया है क्योंकि वह अब शिवरानी को उसी भय में भेजना चाहता है। कुछ भी हो अब तो मेरा पूरा बचाव है मैं अपनी बहिन से जब वह आवेगी तो कह दूंगा कि तुम बिहारीलाल की सम्मति के बिना नहीं पढ़ सकती हो।

इस लिये ऐसा हुआ कि दूसरी बार जब एमी-लीन अपनी विद्यार्थी के पास आई तो उस ने घर में एक नई स्त्री को देखा। उस को यह बतलाये जाने की आवश्यकता न थी कि वह साधारण श्वेत

साड़ी पहिरनेवाली बिधवा थी। उस सुकुमारी सुन्दर और उदास चित्तवाली लड़की के देखकर उस के करुणा आई और तुरन्त ही उस ने अपने मन में यह प्रार्थना किई कि हे प्रभु यह बर दे कि वह तुझे जानने लगे और उस शांति के पावे जो तू दे सकता है।

एमीलीन ने तुरन्त कहा कि मैं तुम के भी पढ़ाऊंगी। परन्तु उस के बड़ी निराशा हुई जब कि उस लड़की ने यह उत्तर दिया कि मेरा भाई कहता है कि तुम अपने बड़े भाई की सम्मति बिना नहीं पढ़ सकती हो और मैं जानती हूं कि वह इस बात के कभी न चाहेगा। परन्तु मैं पास बैठी रहूंगी कदाचित् मैं अपनी भौजाई का पढ़ना सुनते २ कुछ सीख जाऊं। और ऐसा हुआ कि जब परमेश्वर के पुत्र के विषय में कथा सुनाई गई जो कि मनुष्यों के परमेश्वर की ओर लाने के लिये देहधारी हुआ तो उस ने जो कि विद्यार्थी थी शब्दों के तो सुना परन्तु उन पर ध्यान नहीं दिया परन्तु उस ने जो पास बैठी थी और जिस का मन उदास था क्योंकि जो कुछ वह इस जीवन में सब से अधिक बहुमूल्य और प्रिय समझती थी सो खो बैठी थी उस समाचार के आनन्दपूर्वक सुना जो उस जीवन का मार्ग बतलाता है जिस पर मृत्यु की छाया कभी नहीं पड़ सकती है और जिस की सुन्दरता के न क्लेश नष्ट कर सकता है।

एक दिन जब पत्तनलाल कोठे में से निकला तो

उस ने अपनी बहिन को उस ईसाई पाठिका की बातों को बड़े ध्यानपूर्वक सुनते देखा। उस ने अपने मन में बिचार किया कि न जाने बिहारीलाल इस बात को सुनकर क्या कहेगा। कुछ भी हो मैं अपनी बहिन को न पढ़ने देने में उस की इच्छा पालन करता हूं और मैं उस को कोठे के बाहर तो निकाल ही नहीं सकता। इस के सिवाय मैं जानता हूं कि उस को कुछ हानि न पहुंचेगी। यदि कोई धर्म्म है जिस से उदास मन को शांति मिल सकती है तो वह ईसाई धर्म्म ही है। इस प्रकार इस भूखे आत्मा को जीवन की रोटी मिलती रही। और उसे उस से छुड़ाने के लिये किसी ने प्रयत्न भी न किया।

सातवां अध्याय।

शिवरानी की प्रतिज्ञा।

एक दिन रात को बड़ी गर्म्मी थी इस लिये शिवरानी छत पर चली गई थी क्योंकि वही एक स्थान था जहां कुछ ठंढा था। वह एकान्त स्थान चाहती भी थी क्योंकि उसे अपनी भौजाई की सदा बक २ से अलग रहने में बिश्राम मिलता था। यह लड़की शोक में पड़ने से पहिले भी सदा शांत और बिचारशील रही थी। गये वर्षों में भी वह अपने भाई पत्तनलाल की बड़ी बिश्वस्त मित्र थी। यद्यपि वह उस से कुछ वर्ष छोटी थी और जब कि पत्तन-

लाल जो कुछ वह सीखना और करना चाहता था सो उस से कहता था तो वह अपने मन में विचार किया करती थी कि यदि मैं भी पुरुष होती तो विद्वान बनती परन्तु क्या करूं मैं तो केवल स्त्री ही हूं। धीरे २ भाई और बहिन में बड़ा भेद पड़ गया। एक तो सर्वथा मूर्ख ही रह गई और दूसरा अधिक विद्वान हो गया। इस के पीछे रुक्मिणी का अपने पति के घर जाने का समय आ पहुंचा और पत्तनलाल भी नगर में रहने के लिये चला गया और तब से फिर उन की आपस में बहुधा भेंट नहीं होती थी।

पांच वर्ष पीछे यह बहिन अपने भाई के घर में फिर आई। इस समय उस का पति मर गया था और इस से भी अधिक शोक की बात यह थी कि उस का छोटा लड़का भी जिसे वह बहुत प्यार करती थी मर गया था और इस के सिवाय उस की छोटी लड़की भी जिस को देख २ कर उसे कुछ समय तक प्रबोध रहा था मर गई। और इस प्रकार उस की माता उदास और अकेली रह गई।

यह बहुत ही साधारण बात थी और इस लिये किसी को विचार न हुआ कि शिवरानी द्विगुण प्रेम और हमदर्दी के योग्य है। और वह बीती बातों के विषय में जो फिर लौटकर नहीं आ सकती थीं अपना जीवन बिताती रही। परन्तु जब से वह अपने भाई के घर आई तब से बहुत तबदीली हो गई। वे दोनों जो आपस में एक दूसरे को बहुत कुछ समझते थे फिर भी आपस में मिलने लगे और

इस प्रकार संसार उस के लिये जो कि बहुत कुछ खो बैठी थी अब सूना नहीं जान पड़ता था। फिर उस को उस की भौजाई की पाठिका एक नई मित्र मिल गई थी जो उस के दुःखों को अपने निज दुःखों के समान समझती थी। और इस लिये उस के दुःखों के कारण वह उसे और भी अधिक प्यार करती थी। उस के मुख से उस ने उस के विषय में सुना जो परमेश्वर होकर मनुष्य हुआ और जिस ने अपने को ईश्वरत्व युद्ध के बड़े २ काम करके और अपने से निर्बलों को दबाकर नहीं परन्तु बोझ से दबे हुओं का बोझा उतारकर और पीड़ितों की पीड़ा को चंगा करके और मृत्यु के फंदे में पड़े हुए लोगों को मुक्ति देकर प्रगट किया। उस ने यह भी सुना कि उस ने अपनी शक्ति अपने स्वार्थ के लिये नहीं लगाई परन्तु अपने ऊपर क्रोध का ऐसा बोझ लिया जैसा कि किसी ने कभी नहीं लिया था। और जिस ने कि इस संसार में एक ही निष्पाप होकर संपूर्ण संसार के पापों का बोझा अपने ऊपर लिया और जिस ने उन्हें निवारण करने के लिये क्रूश की मृत्यु सही। वह जिसे इस बात के जानने का प्रयोजन भी नहीं था कि दुःख क्या है अत्यन्त भारी दुःख सहा। उस ने जिस ने कि कभी पाप नहीं किया था पाप का सब से बड़ा दंड सहा।

क्या आश्चर्य की बात है कि उस ने एकान्त में जाना चाहा इस लिये कि वह इन बातों पर विचार करे।

वह बहुत देर तक अकेली नहीं रह गई। पैरों की आहट सुनाई पड़ी और तुरन्त ही पत्तनलाल छत पर आ पहुंचा अपनी बहिन के अपने पहिले ही वहां देखकर उसे अचंभा हुआ परन्तु वह उस के पास यह कहता हुआ बैठ गया कि बड़ी गर्म्मी है मैं यहां आया हूं कि देखूं यहां कुछ ठंढ मिले।

शिवरानी ने बिचारपूर्वक कहा हां मैं इस के लिये और इस के सिवाय और २ बातों के लिये भी यहां आई हूं। फिर उस ने कुछ हिचकिचाते हुए यह भी कहा कि मेरे मन में बहुत सी बातें हैं और उन के मैं नीचे की अपेक्षा यहां अधिक सहज से सोच सकती हूं।

उस के भाई ने कुछ अचंभित होकर उत्तर दिया हां ऐसी बात है। तुम के किस बात का सोच बिचार करना है। तुम के तो इस बात का भी सोच बिचार नहीं होता है कि अब भोजन बनाने के लिये कितना आटा और घी लगेगा।

शिवरानी ने उत्तर दिया कि हां यह तो सच है। परन्तु संसार में आटा और घी के सिवाय और भी बहुत सी बातें हैं। आटा और घी से तो केवल हमारी भूख तृप्त किई जा सकती है परन्तु इन वस्तुओं से हमारा हृदय तृप्त नहीं हो सकता है।

पत्तनलाल चौंक पड़ा और जब उस ने इस सुन्दर मुख के अपने साम्हने देखा तो उस के यह बिचार हुआ कि मेरी यह सुन्दर बहिन और दूसरों की नाईं जो सदा घर की छोटी २ बातों में लगी

रहती हैं नहीं है। परन्तु उस बड़े २ नेत्रवाली स्त्री के मुख से ऐसी इच्छा झलकती थी जिस से जान पड़ता था कि उस का मन बड़ी २ बातों के खोज में है।

पत्तनलाल ने गंभीरता से कहा कि उन बातों को मुझ से कहो जिन का तुम सोच बिचार करती हो।

उस ने क्षणभर ठहरकर उत्तर दिया कि तुम से कहने से क्या लाभ जब कि तुम असंभव कहोगे। कई वर्षों से मैं पढ़ना चाहती हूं और मेरी भौजाई अब पढ़ने भी लगी है तो फिर मैं क्यों न पढ़ूं। अब तो पहिले की अपेक्षा और भी अधिक पढ़ना चाहती हूं क्योंकि एक पुस्तक है जिसे मैं स्वतः पढ़ना चाहती हूं।

पत्तनलाल ने उत्तर देकर यह पूछा वह कौन सी पुस्तक है।

शिवरानी ने उत्तर दिया कि तुम उस के विषय में क्या जानोगे। वह अपने धर्म्म की पुस्तक नहीं है परन्तु यीशु ख्रीष्ट के विषय में है और मैं उस के विषय जानना चाहती हूं।

पत्तनलाल ने यह जानने के लिये कि मेरी बहिन इस विषय में कितना जानती है पूछा कि यीशु ख्रीष्ट कौन है।

शिवरानी ने उत्तर दिया कि उस ने कहा कि मैं परमेश्वर का पुत्र हूं और मैं समझती हूं कि वह अवश्य होगा क्योंकि उस ने बहुत बड़े २ काम किये और वह बहुत भला भी था। पत्तनलाल ने अपने भाई के विषय में सोचते हुए उत्तर दिया हम को

यीशु ख्रीष्ट से कुछ नहीं करना है। हमारा निज धर्म्म भिन्न है। यीशु तो ईसाइयों का है इस लिये अच्छा होगा कि तुम उस के विषय में और कुछ न सोचो। बिहारीलाल बहुत क्रोधित होगा यदि वह जान पावे कि तुम ईसाइयों की पुस्तक पढ़ती हो।

शिवरानी ने अपने भाई का नाम लिये जाने पर कुछ ध्यान न दिया परन्तु वाक्य के पहिले भाग के उत्तर में यह कहा कि मेरी भौजाई की पाठिका यह कहती है कि यीशु ख्रीष्ट संसार भर का है और इस लिये जैसा ईसाइयों का तैसा हम लोगों का भी है। उस ने मुझे कुछ शब्द मुखाग्र करने के लिये सिखाये हैं यदि तुम चाहो तो मैं कहूं। "क्योंकि ईश्वर ने जगत को ऐसा प्यार किया कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दिया कि जो कोई उस पर बिश्वास करे सो नष्ट न होय परन्तु अनन्त जीवन पावे।"

पत्तनलाल ने बड़ी सावधानी से सुना केवल यही बात नहीं थी कि उस की बहिन ने यह पद कंठ कर लिया था परन्तु यह भी कि उस ने उसे ऐसे उत्साहपूर्वक सुनाया जिस से पत्तनलाल को भय न हुआ। वह पूरे समय तक अपने भाई के विषय में और इस विषय में कि वह क्या कहेगा सोचता रहा। चाहे वह आप इन बातों के विषय में कुछ भी समझे परन्तु उसे अपनी बहिन को यह समझाने का यत्न करना पड़ा कि वे बातें सच नहीं हैं इस

लिये उस ने फिर भी कहा कि मैं उस पुस्तक को पढ़ चुका हूं जिस को तुम कहती हो कि मैं पढ़ना चाहती हूं और मैं उन बातों के विषय में इतना अधिक जानता हूं जितना तुम कभी न जान पाओगी। परन्तु तुम को यह न समझना चाहिये कि जो कुछ उस पुस्तक में लिखा है सो सब सत्य ही है। यीशु ख्रीष्ट नाम का भला मनुष्य बहुत पहिले हुआ होगा परन्तु अब तो वह मरकर कबर में गया और इस लिये अब हम को उस से कुछ काम नहीं।

तब शिवरानी ने उत्तर दिया कि हे भाई तुम मुझ से बहुत अधिक बुद्धिमान हो क्योंकि मैं केवल एक स्त्री हूं और बहुत अज्ञान हूं। परन्तु मैं मन की बड़ी भूखी हूं और जब मैं यीशु ख्रीष्ट के विषय में सुनती हूं तो मुझे ऐसा लगता है कि मानो मैं तृप्त हो गई हूं इस लिये मैं समझती हूं कि जो कुछ लिखा है सो सब सत्य ही है। तुम्हारे लिये तो कुछ बात ही नहीं है परन्तु मुझे सुखी करने के लिये कुछ भी नहीं है और जब मैं यीशु ख्रीष्ट से बातचीत करती हूं तो मुझे ऐसा लगता है कि मानो कोई मेरी बातों को सुन रहा है।

पन्नलाल चौंक पड़ा। उस की बहिन के शब्दों से उस बात का स्मरण हुआ जो सुदर्शनदास ने उस से बहुत दिन पहिले कही थी अर्थात् यह कि यदि तुम यह जानना चाहते हो कि यीशु ख्रीष्ट अब भी जीता है तो उस से यह बर मांगो कि वह अपने

को तुम पर प्रगट करे। दूसरी बात जो उस के ६ सहपाठी ने किई थी सो यह थी कि उस ने खीष्ट को प्रगट रूप से स्वीकार किया। शिवरानी की दशा में भी चाहे जो कुछ हो जाय और यदि कहीं शिव रानी ईसाई हो गई तो बिहारीलाल उसे कभी क्षमा न करेगा क्योंकि उस ने उसे जता दिया था। उस स्त्री के लिये उत्तम बात यही होगी कि जितनी जल्दी हो सके उतनी ही जल्दी वह अपने बड़े भाई के घर को लौट जावे जहां कि जो कुछ हानि हुई है ठीक हो जावेगी। वह अपनी बहिन को तो दोष नहीं लगा सकता था जब कि वह अपने मन में उसी बात पर विश्वास करता था जिस पर कि उस की बहिन करती थी। कदाचित् यही कुशलता की बात थी कि वह उस से इन विचारों को अपने मन में रखने के लिये उस से प्रतिज्ञा करा लेवे। इस लिये दूसरी बार वह यह बोला कि हे बहिन यीशु खीष्ट के विषय में सीखने से तुम को कुछ हानि न पहुंचेगी। और यदि उस से तुम सुखी होती हो तो मैं तुम को रोकने का प्रयत्न न करूंगा। परन्तु मैं तुम से एक बात की प्रतिज्ञा कराना चाहता हूं कि तुम मुझे छोड़ और किसी से अपने मन की बात मत कहो। यदि तुम ऐसी बातें बिहारीलाल से कहोगी तो वह तुम पर क्रोधित होकर और फिर तुम को यहां न आने देगा। तुम मुझ से जितनी चाहो तितनी बात कर सकती हो परन्तु मुझ से इस बात की प्रतिज्ञा करो कि मैं इस बात को सब से गुप्त रखूंगी।

उस ने देखा कि सब कुछ बदला हुआ है। उस ने उस घर को जो पहिले बहुत मैला था अब बहुत स्वच्छ पाया। इस के बहुत पहिले ही उस का क्रोध बिलकुल शांत हो गया था और वह अपनी स्त्री को यह बतलाना चाहता था कि मैं तुम से अब अप्रसन्न नहीं हूं परन्तु यह सहज बात न थी क्योंकि सुन्दरी उस से बोलना नहीं चाहती थी और इस लिये जब सुदर्शनदास बोला तो उस ने कुछ उत्तर न दिया। उसे कुछ चैन आई जब कि उस की दोनों छोटी लड़कियां उस के पास दौड़ती आईं और जो कुछ उस के पीछे हुआ था कहने लगीं। मोती ने उस के घुटने पर चढ़कर कहा दद्दा आज तो एक जिसे हम नहीं चीन्हती हैं हमारे घर आई थी।

और हां शांती बोली वह यह भी कहती थी कि तुम लोगों को मेरे घर आना चाहिये क्योंकि मेरी बहुत छोटी २ लड़कियां नहीं हैं और मैं ऐसी ही छोटी लड़कियों को बहुत प्यार करती हूं। मोती ने ऐसा समझाकर कहा कि उस की छोटी २ लड़कियां अब बड़ी हो गई हैं। हम लोग भी किसी दिन बड़ी हो जावेंगी क्यों न दद्दा। सुदर्शनदास ने पूछा कि यह स्त्री कौन थी और कहां से आई थी।

दद्दा यह तो हम नहीं जानतीं परन्तु उस ने यह कहा था कि मेरा घर निकट ही है। कदाचित उस ने हमारी महतारी से कहा हो।

मोती ने अपने मैले वस्त्र की ओर देखते हुए कहा वह स्त्री ऊंची थी और एक बहुत ही श्वेत

साड़ी पहने हुए थी। इस विषय पर अपनी माता का क्रोध भरा उत्तर स्मरण करते हुए शांती ने विनय-पूर्वक कहा तुम हमारी महतारी से हम लोगों को उस के घर ले जाने के लिये कहोगे क्यों न दद्दा। और यदि हमारी महतारी नहीं जाना चाहती तो तुम ही ले चलोगे क्यों न।

सुदर्शनदास ने अपनी स्त्री की ओर देखकर जो इन बातों में से एक शब्द भी सुनती हुई नहीं जान पड़ती थी कहा कि जब समय आवेगा तब देखा जायगा। उस रात को तो सुन्दरी ने कुछ अधिक बातचीत नहीं किई परन्तु दूसरे दिन सवेरे उस का क्रोध जाता रहा और तब उस ने अपनी उस पाहुनी के विषय में जो आई थी कहा।

इस बात को सुनकर सुदर्शनदास आश्चर्य करने लगा मैं पहिले उस का अनुमान क्यों न कर सका।

सुन्दरी को उस नई पाहुनी से भेंट करने को जाने के लिये समझाने की कुछ आवश्यकता न थी। और इस लिये दूसरे दिन सवेरे दोनों छोटी लड़कियां जो स्वच्छ हो गई थीं अपनी माता के साथ उस भेंट के लिये गईं जिस के विषय में बहुत कुछ बात हुई थी।

जब सुन्दरी ने घर को चारों ओर देखकर उसे स्वच्छ और सुथरा पाया तो उसे अपने मैले कुचैले घर का स्मरण आया परन्तु उस ने इस विषय में कुछ बात-चीत न किई। उस दिन एमीलीन की दोनों लड़-कियां पाठशाला को नहीं गई थीं इस लिये वे इन

छोटी लड़कियों को खिलाने लगी जब कि उन की माता सुन्दरी के साथ बातचीत कर रही थी और और बातों के साथ एमीलीन ने यह भी कहा कि मुझे बताओ कि तुम किस समय ईसाई हो गई थीं। मैं जानती हूं कि यह बात पहिले पहिल सुनने में तो बड़ा आश्चर्य हुआ होगा कि हमारा प्रिय प्रभु स्वर्ग से उतरा और उस ने क्रूस पर अपना प्राण दिया मैं चाहा करती थी कि मैं हिन्दू ही उत्पन्न होती जिस से कि मैं इस बात के विषय में सुनते सुनते निरुत्साह न हो जाती जैसा कि मैं समझती हूं कि हम लोग कभी कभी हो जाया करते हैं। भला यह तो कहो कि तुम ने पहिले पहिल प्रभु यीशु के विषय में कैसे सुना।

बोलनेवाली के उत्साहयुक्त रूप में और सुनने-वाली के निरुत्साह रूप में बड़ा ही भेद था और इस लिये सुन्दरी ने निश्चिन्तता से उत्तर दिया कि मेरा पति ईसाई हो गया था और मेरे पिता के मरने के पीछे मेरी माता के कंगाल होने के कारण इस बात की चिन्ता न थी कि मैं भी ईसाई हो जाऊं। तब मेरा पति आकर मुझे ले गया।

और फिर एमीलीन ने तुरन्त ही यह पूछा तो क्या फिर उस ने आप तुम्हें कुछ सिखलाया।

सुन्दरी ने उत्तर दिया हां उस ने मुझे कुछ बातें बतलाईं और दूसरों ने भी मुझे सिखलाया। तब कुछ दिन पीछे मेरा बपतिस्मा हुआ।

एमीलीन अब समझने लगी कि जिस विषय में

मेरा मन इतना अधिक लगता है उस में सुन्दरी की इतनी कम रुचि क्यों दिखाई पड़ती है। उस की बातों से जान पड़ता था कि उस ने इतना मुक्ति पाने के लिये नहीं जितना अपने पति पाने के लिये अपने पुरखाओं का धर्म छोड़ा था। गर्मालीन इस स्त्री को भी केवल नाम की ईसाई थी परन्तु ईसाई होने के आनंद और प्रतिष्ठा को बहुत ही कम जानती थी यीशु के सुसमाचार के पूर्ण प्रकाश में ले जाना अच्छा कर चाहती थी।

उस ने उस बात को छोड़कर दूसरा प्रश्न यह पूछा कि बाई क्या तुम पढ़ना जानती हो। क्योंकि तुम पर्दे में रहती हो इस लिये कदाचित तुम ने पढ़ना न सीखा होगा। सुन्दरी ने उत्तर दिया नहीं। थोड़ा सा जानती हूं। मेरे पति ने मुझे पढ़ाने का आरंभ किया था और एक समय एक अंग्रेज मिशनरिन मुझे पढ़ाने आया करती थी। परन्तु जब मुझे अपने लड़केवालों की देखभाली करनी पड़ी तो मेरा काम इतना बढ़ गया कि मुझे पढ़ने का अवकाश न मिला और जो कुछ मैं जानती थी सो भी अब बिलकुल भूल गई।

गर्मीलिन ने उस के बात करने पर और लड़के-वालों के विषय में सोचते हुए यह पूछा क्या तुम फिर भी पढ़ना आरंभ करना चाहती हो। क्या मैं आकर तुम्हें पढ़ाऊं। यह जान पड़ता था कि सुन्दरी को पढ़ने या काम करने की कुछ चिन्ता न थी। उस ने आप ही मान लिया कि मैं पढ़ने को तो कुछ

चिंता नहीं करती हूं परन्तु उस दयाल मित्र के आने से जो मुझ से बहुत ही प्रेम रखती है दिन जल्दी पार हुआ करेंगे। सो यह प्रबन्ध किया गया और समय भी नियुक्त हो गया और प्रभु की इस दासी को इस लिये आनन्द हुआ कि उसे अवसर मिला कि वह इस स्त्री से उस प्रभु के प्रेम और महिमा के विषय में चर्चा करे जिस ने अपना प्राण उस को अपना बनाने के लिये दिया। जब सुदर्शनदास ने इस नये प्रबन्ध के विषय में सुना तो उसे भी बड़ा हर्ष हुआ। वह बहुत दिन से जानता था कि मेरी स्त्री से मुझे ऐसी सहायता और सुख नहीं मिलता जैसा कि मिलना चाहिये और न वह अपनी लड़कियों को अच्छी शिक्षा दे सकती है। एक दिन ऐसा हुआ कि एमीलीन से उस की भेंट हुई और उस के बातचीत करने में उस ने कुछ हिचकिचाते हुए यह कहा कि आप कृपा करके उसे अपनी नाई बनाइये। आप प्रभु यीशु को उसी प्रकार जानती हैं जैसे कि हम लोग अपने परम प्रिय मित्रों को जानते हैं और मैं समझता हूं कि सुन्दरी उसे बिलकुल नहीं जानती है। इस लिये आप उसे कृपा करके सिखलाइये। एमीलीन ने उत्साहपूर्वक उत्तर दिया कि आओ हम दोनों प्रार्थना करें इस लिये कि प्रभु आप ही उसे सिखलावे और ऐसा अपने को उस पर प्रगट करे जिस से कि वह उस को किसी भी सांसारिक मित्र से अधिक प्रिय हो जावे। हां हम प्रार्थना करेंगे और प्रभु निस्सन्देह हमारी प्रार्थना सुनेगा।

इस लिये यह नियम ठहरा कि सुन्दरी के लिये प्रार्थना किई जावे परन्तु वह सदा की नाईं अपनी रीति पर चली जाती थी और यह न जानती थी कि मेरे दो उत्तम मित्र मेरे लिये बहुत कुछ कर रहे हैं जैसा कि वे और किसी प्रकार से नहीं कर सकते और कि वे निस्सन्देह सब से बड़ा आशीर्वाद मुझे प्राप्त करावेंगे।

केवल स्त्री ही के लिये नहीं परन्तु पति के लिये भी ग्मीलीन राजदूत हुई। सुदर्शनदास यद्यपि वह किसी समय भली भांति जानता था कि और और वस्तुओं से आत्मिक वस्तुएं अधिक बहुमूल्य हैं और कि ईश्वर के राज्य में आना किसी सांसारिक लाभ से बहुत बढ़कर है अब कुछ कुछ उस बात को भूलने लगा था जो किसी समय उस को बहुत प्रिय थी। वे वस्तुएं जो अदृष्ट और अनन्त हैं उस को धुंधली दिखाई पड़ने लगी थीं। और वह इस जीवन की बातों में अपना विचार और ध्यान बहुत कुछ लगाने लगा था। परन्तु परमेश्वर ने जो अपने सन्तानों की आवश्यकताओं और भयों को जानता है एक ऐसे जन को भेजा जिस के शब्द और उदाहरण उस उत्साह की ज्वाला को जो धीमी जलने लगी थी फिर से सुलगाया और जो फिर उस को उस एक ही जीवनदाता प्रभु के पास ले आया।

एक दिन ऐसा हुआ कि जब सुदर्शनदास पाठशाला से घर आया तो उस की स्त्री ने उस से कहा कि सिंग बाबू की स्त्री यह सन्देश दे गई है कि वह

और उस का पति किसी विषय में आप से बातचीत करना चाहते हैं इस लिये वे चाहते हैं कि आप उन से भेंट करें। सुदर्शनदास को वहां जाने में बड़ा हर्ष था क्योंकि उसे इन मित्रों से जिन की उपस्थित ही का उस पर उत्तम प्रभाव पड़ता था भेंट करने में सदा आनन्द होता था।

सिंह बाबू ने और और बातें करने के पीछे यह कहा कि जिस नगर में हम लोग रहा करते थे वहां हमारे घर में हर सप्ताह में एक सभा हुआ करती थी जिस में हमारे मित्र और पड़ोसी आया करते थे। उस के बिना हम लोगों को अच्छा नहीं लगता है यहां तक कि हम लोग चाहते हैं कि वैसी ही एक सभा यहां पर भी हुआ करे आप कृपा करके हमारी सहायता कीजिये आप हम लोगों से बहुत पहिले से यहां रहते हैं और इस लिये लोगों को भली भांति जानते हैं।

सुदर्शनदास ने उत्साहपूर्वक उत्तर दिया कि मैं तो आया करूंगा कदाचित तुम मेरी स्त्री को भी आने के लिये समझा सको यद्यपि वह बहुधा बहुत कम जाना चाहती है। एमालीन ने मुसकुराकर कहा मैं समझती हूं कि वह आवेगी और अब यह कहिये कि और कौन है।

सुदर्शनदास ने दो तीन नाम लिये और तब उदास होकर यह कहा कि मैं और किसी को नहीं जानता जो कि आवे। सच बात तो यह है कि बहुत से हैं जो आ सकते हैं परन्तु जिस समय सभा होती है

उसी समय पर लोग सदा कुछ काम बतला देते हैं और इस प्रकार सभा में आने के अवसर न मिलने का बहाना कर देते हैं। यह तो बड़े आश्चर्य की बात है कि आलस्य से बैठने और बैठकर बातचीत करने के लिये तो सदा अवकाश मिलता है परन्तु परमेश्वर की चर्चा और उस के काम करने के लिये समय नहीं मिलता।

शर्मालीन ने उत्साहपूर्वक कहा परन्तु देखिये सभा आरंभ करने के लिये हम आठ जन हैं और यह भी तो है कि हम लोग प्रार्थना करके दूसरों को भी ला सकते हैं। इस बात का स्मरण रखना चाहिये कि हम लोग अपनी प्रसन्नता के हेतु नहीं परन्तु अपने प्रभु की महिमा के लिये आरंभ करते हैं और जो कुछ हम पूरा नहीं कर सकते हैं उसे करने के लिये हमें उस पर भरोसा रखना चाहिये।

सिंग बाबू ने कहा हां ठीक है यदि केवल हम ही तीन होते तोभी हम लोगों का एकत्र होना उचित था क्योंकि प्रभु यीशु हमारे बीच में चौथा हो जाता और सचमुच जब कि वह हम लोगों में से एक है तो छोटी से छोटी सभा भी बड़ी कही जा सकती है।

कुछ और बातचीत करने के पीछे उन के लड़के और लड़कियां जो दूसरे दिन के लिये अपने पाठ तैयार कर रहे थे उन के पास आये उन में से एक ने धर्म्मपुस्तक लाकर अपने पिता को दिई जिस ने सुदर्शनदास से कहा कि इस समय पर हम लोग सदा सब कुटुम्ब मिलकर प्रार्थना किया करते

हैं आप भी हम लोगों के साथ मिलकर प्रार्थना कीजिये।

इस के पीछे आध घंटा भी न होने पाया था कि सुदर्शनदास इस बात के लिये बहुत प्रसन्न हुआ कि मैं इस विशेष समय पर उपस्थित हो सका। प्रार्थना के समय उसे ऐसा जान पड़ा कि मैं ठीक उस प्रभु के सन्मुख हूं जिस से कि हम लोग प्रार्थना कर रहे हैं और जब उस कुटुम्ब के प्रत्येक मनुष्य की हर एक बात और हर एक आवश्यकता उस परमेश्वर के साम्हने बतलाई गई जिस के होकर वे रहते थे तो सुदर्शनदास पहिले की अपेक्षा अधिक समझने लगा कि प्रार्थना करने से बहुत ही लाभ और न करने से बहुत ही हानि होती है। जिस सभा के विषय में बातचीत हुई थी वह भुलाई नहीं गई। परन्तु वे सहायता और अगुवाई के लिये प्रार्थना में लगे रहे जिस से सब काम उत्तम रीति से होवे।

जब सुदर्शनदास घर लौटा तो उस का मन बहुत से बिचारों से भरा हुआ था जैसा कि ईसाई को होना चाहिये। वह दो जीवते नमूने देख चुका था उन में से एक तो ऐसा था जिस की जीवते ख्रीष्ट के साथ प्रतिदिन संगति होती थी जो और सब बातों को छोड़ अपने गुरु की प्रतिष्ठा खोजता है जो उत्साह-पूर्वक अपने आसपास रहनेवालों की आत्मिक भलाई चाहता है और जो सब से अधिक प्रार्थना को अपने जीवन का मुख्य कर्म्म समझता है। उस का मन ही साक्षी देता था कि मैं ऐसा ईसाई कभी

नहीं रहा हूं और उस के हृदय से यह उत्साह युक्त प्रार्थना निकली कि हे प्रभु मुझे प्रार्थना करना सिखा। हे प्रभु तू अपने को मुझ पर प्रगट कर उस को कुछ लज्जा के साथ यह भी स्मरण हुआ कि मैं उन लोगों की रीति पर नहीं चलता जिन से मैं अभी भेंट कर-के आया हूं। एक समय था जब कि उस ने स्त्री को पढ़ाने का यत्न किया था और उसे प्रतिदिन धर्म्मपुस्तक पढ़कर सुनाया करता था। परन्तु इस बात को बहुत दिन हो चुके थे और जब कि उसे यह जान पड़ा कि सुन्दरी बिलकुल अपने ही पर छोड़ दिई गई है और उसे कोई न पढ़ाता न सहायता देता है तो उस ने इस बात को स्वीकार किया और कहा इस में कोई आश्चर्य्य की बात नहीं है कि वह ऐसी नहीं है जैसी कि ईसाई को होना चाहिये। दूसरे दिन सवेरे उस ने अपनी छोटी २ लड़कियों को बुलाया और अपनी स्त्री से कहा कि आओ हम लोग मिलकर बचन पढ़ें और प्रार्थना करें।

सुन्दरी ने अनुमान कर लिया है कि कौन इस नई तब्दीली का कारण है क्योंकि एमीलीन ने उस से एक बार पूछा था कि तुम्हारे घर में प्रतिदिन प्रार्थना होती है कि नहीं इस लिये उस ने उस नई रीति को इच्छापूर्वक ग्रहण किया क्योंकि जो कुछ उस की मित्र करती थी सो उस की दृष्टि में ठीक ही दिखाई पड़ता था। सो उस दिन से उन का समय परमेश्वर की संगति में बीतने लगा और परमेश्वर का आशीर्बाद कुटुम्ब के प्रत्येक जन के लिये मांगा जाने लगा।

रुक्मिणी ने भयभीत होकर कहा अरे बापरे। क्या जीते जला देते हैं। सर्कार ऐसी निर्दई कैसे हो सकती है।

सागवाली ने कहा हां यह बात तो सच है कि ऐसा कौन समझेगा परन्तु यह मैं जानती हूं कि यह बात सच है क्योंकि जिस मुहल्ले में मैं रहती हूं वहां एक मनुष्य महीनों से बीमार था जब पुलिस ने सुना तो वे उसे देखने आये और जब उन्हों ने उस के गले में गिलटी देखी जो कि कई वर्षों से थी तो उन्हों ने कहा कि हम तुम को यहां से ले जावेंगे। वे उसे ले गये और वह बिचारा फिर न लौटा। वह कैसे लौट सकता जब कि उन्हों ने उसे जीता जला दिया।

रुक्मिणी के मुख से यह जान पड़ता था कि वह बहुत डर गई थी और इस लिये साग बेचने-वाली को गप मारने का और भी अच्छा अवसर मिला और वह यों कहती ही गई कि बस इतना ही नहीं दो बेगमें जिन को मैं भली भांति जानती हूं क्योंकि मैं बहुधा उन को साग बेचा करती थी। बिचारीं एक दिन बीमार पड़ गईं। एक को कुछ भीतरी ज्वर था और दूसरी के पैर में दर्द था इस लिये उन्हों ने सोचा कि हम लोगों को जनाना अस्पताल में जाना चाहिये क्योंकि सुनते हैं कि वहां डाकृर साहिबा बड़ी दयालु चित्त हैं परन्तु हाय। वे फिर न लौटीं। वे उन डोलियों में जीती जला दिई गईं जिन में वे बैठी थीं।

रुक्मिणी ने कहा कि मुझे इस बात का हर्ष है कि तुम ने मुझ से ये बातें कहीं क्योंकि मैं अब सचेत रहूंगी कि ये बातें मुझे न होने पावें। मैं सदा कुएं का पानी पिया करूंगी जैसे कि हम लोग पिया करते थे और चाहे मैं कितनी भी बीमार होऊं मैं अस्पताल को कभी नहीं जाऊंगी और न डाक्टर बुलाऊंगी।

साग बेचनेवाली ने कहा हां यह सब से अच्छा होगा और यदि तुम को कुछ होवे तो उसे कभी मत बतलाओ। क्योंकि पुलिस उसे अवश्य सुन लेवेगी इस लिये कि वे हर कहीं रहते हैं और बड़े आश्चर्य की बात है कि वे इतनी जल्दी सुन लेते हैं अब तो मुझे अवश्य जाना चाहिये नहीं तो मेरा ताजा साग न बिकने पावेगा। ऐसा कहकर उस ने अपनी टोकरी सिर पर रखी और चली गई।

जब कि यह बातचीत होती थी शिवरानी चुपचाप अपना भोजन बनाने में लगी थी। अब रुक्मिणी ने उस के पास जाकर पूछा क्या तुम ने यह भयानक खबर नहीं सुनी तुम तो अपना भोजन ऐसी चुपचाप बना रही हो मानो कि कुछ हो ही न रहा है।

शिवरानी ने उत्तर दिया कि मैं ने सुना तो है परन्तु पहिले पत्तनलाल से पूछूंगी कि यह बात कहां तक सच है। साग बेचनेवाली कहती थी कि साहिब लोग हम लोगों को मार डालना चाहते हैं परन्तु क्या तुम भूल गईं कि तीन वर्ष हुए जब कि अकाल पड़ा था तो सर्कार ने भूखों को खिलाने के लिये

लाखों रुपये खर्च किये जिस से कि वे मरने न पावें। क्या यह आश्चर्य की बात नहीं है कि वे एक हाथ से हम लोगों को मार डालें और दूसरे हाथ से हम को जीते रखने का यत्न करें।

रुक्मिणी को शिवरानी के कहने पर बिश्वास न हुआ। उस ने अपने मन में यह बिचार किया कि वे लोग क्या जानें जो अपने घर से बाहर कभी नहीं निकलीं। साग बेचनेवाली के समान जो लोग बाहर इधर उधर जाते हैं और सब प्रकार की बातें सुनते हैं वे ही हम लोगों को बतला सकते हैं कि संसार में क्या हो रहा है। इस लिये मैं तो वही बिश्वास करूंगी जो कुछ उस ने मुझ से कहा है।

जब पत्तनलाल उस दिन सांझ को घर आया तो उस को भी वे सब बिचित्र बातें सुन्नी पड़ीं जो कि उस के पीछे घर में हुई थीं। उस ने धीरज से सब कुछ सुना और तब कहा कि मैं ने भी ये सब बातें बरन और बहुत सी बातें सुनी हैं परन्तु मैं उन में से एक पर भी बिश्वास नहीं करता और तुम बड़ी मूर्ख हो क्योंकि यदि कोई मूर्ख स्त्री आकर तुम से कुछ कह देती तो तुम उस की बात मान लेती हो। जब वह फिर आवे और ऐसी मूर्खता की बातें करे तो अच्छा होगा कि तुम उस से यह कह देओ कि यदि तू ऐसी बात करती पाई जावेगी तो तुझे दंड मिलेगा।

रुक्मिणी ने कुछ अचंभे से कहा। अरे क्या बातचीत करने से दंड मिल जावेगा।

पत्तनलाल ने उत्तर दिया हां निस्सन्देह। क्या तुम

नहीं जानती हो कि हत्या करना घोरपाप है और यदि सर्कार ने बीमारी के फैलाने के लिये दवा दिई और लोगों को जीता जला दिया तो सर्कारी कर्म्मचारी हत्यारे हुए। किसी पर ऐसे बड़े अपराध का दोष लगाना तो बड़ी बुरी बात है।

रुक्मिणी ने कहा यदि सर्कार इस बीमारी को नहीं लाती तो फिर कौन करता है। वह कहां से आती है। यहां तो यह पहिले कभी नहीं थी।

पत्तनलाल ने उत्तर दिया यह अवश्य नहीं है कि कोई बीमारी लावे क्योंकि संसार तो बीमारियों से भरा है। चेचक हैज़ा और ज्वर जिन से बहुत से मनुष्य मरते हैं कौन लाता है। यदि यह बीमारी तुम्हारे जीवनकाल में हिन्दुस्तान में नहीं रही है तो पहिले रही थी। जब तुम पढ़ोगी तो तुम जान जाओगी कि इस बीमारी ने इस देश में और अन्यदेशों में कितनी हानि पहुंचाई है। यदि सर्कार चाहती है कि हम लोग मर जावें तो वह अकाल में भूखों को खिलाकर उन अस्पतालों को बनाकर जहां कि हम लोगों की ठीक २ रक्षा हो सकती है और उन औषधालयों को खोलकर जहां से कि हम लोगों को औषधि मिल सकती है हम लोगों को जीते रखने के लिये रुपये क्यों खर्च करती है। हमारे मरने की बहुत सी रीतियां हैं परन्तु मुझे तो ऐसा जान पड़ता है कि सर्कार उसे रोकने के लिये अपनी शक्ति भर यत्न करती है।

शिवरानी जो कि बात होते ही में वहां आई

नहीं चाहती थी कि कोई ऐसा समझे कि मैं इन मूर्ख बातों पर बिश्वास करती हूं जिन का प्रभाव मेरी भौजाई पर इतना कुछ पड़ गया है इस लिये उस ने पत्तनलाल से कहा कि मैं ने रुक्मिणी से कहा था कि हम लोगों को इन बातों पर बिश्वास न करना चाहिये जब तक कि तुम भी इन बातों को सच न कहो।

पत्तनलाल ने तीब्रता से कहा निस्सन्देह यह बातें सच नहीं हैं परन्तु जो कुछ सच है सो मैं तुम से कहता हूं तुम्हारे ही लोग तो किसी न किसी उपाय से भला बुरा कैसा भी हो कुछ रुपया बनाना चाहते हैं इस लिये वे बोतल और दवा लेकर इधर उधर फिरा करते हैं और कहते हैं कि सर्कार ने हम को भेजा है। परन्तु यह सचमुच में उन्हीं की दुष्टता है।

रुक्मिणी ने पूछा परन्तु ऐसा करने से क्या लाभ। पत्तनलाल ने उत्तर दिया कि उन्हें बड़ा लाभ होता है क्योंकि तुम्हारी नाईं मूर्ख लोग जो कुछ वे सुनते हैं सोही मान लेते हैं और उन को रुपये देते हैं इस लिये कि वे इधर उधर चारों ओर दवा न फेंकें। इस प्रकार वे सर्कार को बदनाम करते हैं और तुम लोगों से रुपये लेकर अपनी जेब भरते हैं।

रुक्मिणी ने कहा कि वे मुझ से रुपये नहीं ले सकते।

पत्तनलाल ने उत्तर दिया हां कदाचित तुम से नहीं पा सकते क्योंकि मैं ने तुम को चिता दिया है। परन्तु मुझे बहुत कुछ निश्चय है कि यदि वह स्त्री तुम से यह कहती कि मुझ से तुम्हारे घर में प्लेग फैलानेवाली दवा डालने के लिये कहा गया है तो

तुम उसे उस दवा को और कहीं ले आने के लिये अवश्य रुपया देतीं।

रुक्मिणी ने उत्तर दिया कि मैं तो प्लेग से मरना नहीं चाहती और यह कैसे कह सकते हैं कि क्या सच और क्या झूठ है।

इतना सुनकर पन्नलाल का धीरज छूट गया और वह अपनी स्त्री को उस के ही बिचारों पर छोड़कर बाहर चला गया।

दसवां अध्याय।

शिवरानी बिश्राम पाती है।

जैसे प्यासे को ठंडा पानी तैसे ही ख्रीष्ट की मुक्ति का समाचार शिवरानी के दुःखित हृदय में पहुंचा। उस ने उस के विषय में सुना जो इस पृथिवी पर शोक और दुःख से भरा हुआ और उन लोगों को चंगा करता हुआ और शांति देता हुआ जो उसे ढूंढते थे फिरा करता था और ज्योंही पहिली बार उस ने इस बुलाहट को अर्थात् हे सब लोगो जो परिश्रम करते और बोझ से दबे हो मेरे पास आओ मैं तुम्हें बिश्राम देऊंगा सुना और उसे विशेष रीति पर अपने लिये समझा त्योंही उस के हृदय से यह बात निकली कि यदि मैं केवल उस समय पर होती और यीशु की बुलाहट को सुनती तो मैं अवश्य उस के पास जाकर उस से बिश्राम मांगती। परन्तु तिस पर भी यह कैसे हो सकता क्योंकि मैं स्त्री हूं

और केवल वहीं जा सकती हूं जहां जाने के लिये मुझ से कहा जाता है।

शिवरानी की पाठिका ने जिस ने उस की बातों को आनंदपूर्वक सुना कहा तो आनंद करो कि तुम आज के दिन तक जीवती हो क्योंकि प्रभु यीशु के पास आने से कोई नहीं रोक सकता इस लिये कि तुम को उस के ढूंढने के लिये कहीं जाने की आवश्यकता नहीं है।

शिवरानी ने उत्साहपूर्वक उत्तर दिया कि मुझे बतलाइये कि इस का क्या अर्थ है। और मैं क्या करूं।

पाठिका ने उत्तर दिया कि इस का यह अर्थ है कि हमारा प्रभु यीशु आज के दिन भी वैसा ही है जैसा कि वह उन दिनों में था जब कि उस ने यह कहा हे सब लोगो जो परिश्रम करते और बड़े बोझ से दबे हो मेरे पास आओ मैं तुम्हें बिश्राम देऊंगा। वह आज के दिन भी वैसा ही प्रेम और दया से भरा हुआ है जैसा कि वह उन दिनों में था। उस ने यह शब्द केवल उन्हीं लोगों के लिये नहीं कहे जो कि उन दिनों में उस के चारों ओर खड़े रहते थे। वह जानता था कि जब तक संसार रहेगा तब तक प्रत्येक देश में और प्रत्येक समय में थके और बोझ से दबे हुए लोग रहेंगे जो कि बिश्राम को खोजेंगे और इस लिये उस ने यह कहा मेरे पास आओ और मैं तुम्हें बिश्राम देऊंगा।

शिवरानी ने धीरे से पूछा क्या तुम समझती हो कि वह मेरे विषय में जानता था।

पाठिका ने उत्तर दिया हां मैं समझती हूं बल्कि

मुझे निश्चय है कि वह तुम्हारे विषय में जानता था और इस के सिवाय मैं जानती हूं इस लिये कि उस ने तुम्हारे हृदय को दुःखित देखा और यह कि तुम को कोई किसी बात से शांति देने को नहीं है उस ने मुझे तुम्हारे पास यह कहने को भेजा कि मैं तुम्हें बिश्राम दे सकता हूं और तुम्हारे हृदय को तृप्त कर सकता हूं। क्या तुम्हें स्मरण है कि मैं ने तुम से उस गड़ेरिये के विषय में कहा था जो अपनी खोई हुई भेड़ को ढूंढने के लिये गया था और उसे कैसी बड़ी देर तक ढूंढना पड़ा और निर्जन पथरीले मार्ग से जाना पड़ा जिस से कि उस के पैरों में चोट लगकर लोहू बहने लगा। परन्तु उस ने इस की कुछ चिन्ता न किई क्योंकि वह अपनी भेड़ी को बहुत ही प्यार करता था और केवल उस के ढूंढने के आनंद ही में निमग्न था।

यह बातें शिवरानी के मन में गड़ गईं और उस ने डरते २ पूछा क्या तुम्हारा अर्थ यही है कि मैं भेड़ी हूं और प्रभु यीशु गड़ेरिया है जो मुझे ढूंढता है।

पाठिका ने उत्तर दिया हां यही मेरा अर्थ है और जब गड़ेरिये ने अपनी भेड़ पा लिई तो उस ने उसे उठाकर अपने कांधे पर रख लिई और उसे घर ले गया। यही तो प्रभु यीशु तुम्हारे साथ भी करना चाहता है इस लिये कि वह तुम्हें अपने महिमा युक्त घर को ले जावे जहां न मृत्यु न शोक और न रोना होगा। उस से बिन्ती करो कि वह तुम्हें ले जावे।

एमीलीन के बड़ी निराशा हुई जब कि रुक्मिणी जो कि भोजन बना रही थी अपना काम पूरा होने पर पुस्तक लेकर आ गई और इस लिये बातचीत बंद हो गई। परन्तु आत्माओं के उस त्राणकर्त्ता ने अपना काम बिना पूरा किये नहीं छोड़ा इस लिये कि उस के जो उस के लिये बोल रही थी उस का पूर्ण समाचार सुनाने से रुकना पड़ा। जो काम उस ने बिना पूरा किये छोड़ दिया था उसे उस त्राणकर्त्ता ने पूरा किया।

उस रात के बहुत ही गर्म्मी थी क्योंकि बरसात होनेवाली ही थी। शिवरानी गर्म्मी के मारे सो नहीं सकती थी और अपने बिस्तर पर लोटने पोटने के पीछे वह छत पर बैठने के गई जहां कि हवा अधिक चलती जान पड़ती थी। उस के चारों ओर और सब लोग सो रहे थे। सो माने अकेली ही थी। उस रात के सूनसान में उस के विचार उस बातचीत पर लगे जो कि सवेरे हुई थीं और ये शब्द "मेरे पास आओ मैं तुम्हें बिश्राम देऊंगा" जिन के उस ने कंठ कर लिये थे उसे फिर स्मरण आये।

उस ने अपने मन में बिचार किया कि मेरी पाठिका ने कहा था कि प्रभु यीशु मेरे विषय में सब कुछ जानता है इस लिये वह यह भी जानता है कि मैं यहां पर अकेली बैठी हूं कि मेरा मन कैसा दुःखित और भूखा है। वह मुझे अवश्य जानता है जब कि उस ने यह कहा कि मेरे पास आओ। क्याही अच्छा होता यदि मैं यह जान जाती कि उस के पास कैसे

जाना होगा जिस को कि मैं नहीं देख सकती और जब कि मुझे कहीं नहीं जाना है। यह तो बड़ी विचित्र बात जान पड़ती है। क्या जाने प्रभु यीशु सुनेगा या नहीं यदि मैं उस से बहुत ही धीरे बोलूं जिसे कि और कोई न सुने। मैं तो समझती हूं कि वह अवश्य सुनेगा क्योंकि जो वह सब कुछ जानता है तो वह यह भी अवश्य जानता कि मैं बोल रही हूं। इस के सिवाय मैं जानती हूं कि मेरी पाठिका ने यह भी कहा था कि ईश्वर सर्वत्र है इस लिये वह इस छत पर भी है यद्यपि मैं उसे नहीं देख सकती।

तब शिवरानी ने बहुत धीरे से कहा कि हे यीशु ख्रीष्ट तू मेरे विषय में सब कुछ जानता है। मेरी पाठिका ने भी यह कहा था कि तू सब कुछ जानता है। इस लिये तू यह अवश्य जानता है कि मैं कैसी दुःखित हूं और कि मैं उस बिश्राम को बहुत ही पाना चाहती हूं जो तू देता है। दया करके उस को मुझे दे और जो मैं ने ठीक रीति से नहीं मांगा है क्षमा कर क्योंकि मैं बहुत ही अज्ञान हूं।

तब शिवरानी को जान पड़ा कि वह महान बिश्रामदाता जो कि मर चुका है परन्तु तौभी सदा जीवता है इस छत पर सचमुच उपस्थित है और उस ने मेरी बिनती सुनी है यद्यपि वह और किसी के कान तक नहीं पहुंची। क्योंकि उस के मन में वह नया बिश्राम हुआ जिसे उस ने पहिले कभी नहीं जाना था और जिस से उस का वह दुःख दूर हो गया जिस से कि वह क्लेशित थी। अब तो ऐसा

हुआ कि मानो चंगा होने के लिये घाव पर तेल लगाया गया हो और दर्द तुरन्त ही दूर हो गया। जो बिश्राम प्राप्त हुआ उस से बिश्रामदाता की वर्तमानता और शक्ति प्रगट हुई।

फिर भी उस ने अपने मन में सोचा कि जो कुछ मेरी पाठिका ने कहा था सो सत्य ही है। परमेश्वर अवश्य यहां है और उस ने मेरी बिनती सुनी है क्योंकि मेरे मन की भूख जाती रही। अब मैं जानती हूं कि वह सब सत्य है और यीशु खीष्ट सचमुच जीवता है और सर्वत्र उपस्थित रहता है। यद्यपि मैं नहीं समझती तथापि यह सब अवश्य सत्य ही है। तब उस को अपनी उस प्रतिज्ञा का स्मरण आया जो उस ने पत्तनलाल से किई थी। पत्तनलाल यह भी नहीं चाहता था कि शिवरानी अपनी पाठिका से भी इस विषय में अधिक बातचीत करे और इस लिये उस ने अपने मन की बात को छिपाने का यत्न किया परन्तु उस दिन जब कि वे दोनों अकेली थीं तब वह अपनी प्रतिज्ञा भूल गई और मन खोलकर बातचीत करने लगी। उस ने सोचा कि यह बड़ी बिचित्र बात है कि मैं उस विषय में बातचीत न करूं जिस से मुझे इतना सुख मिलता है। परन्तु पत्तनलाल ने कहा था कि तुम मुझ से बातचीत कर सकती हो इस लिये मैं उस से कहूंगी कि यीशु खीष्ट ने मुझे बिश्राम दिया है। और कदाचित वह यह समझेगा कि यीशु खीष्ट के विषय में जानना कोई बुरी बात नहीं है।

ऐसा हुआ कि जब एमीलीन फिर पढ़ाने को आई तो उस ने छत पर अच्छे गड़ेरिये के अपनी खोई हुई भेड़ के पा जाने के विषय में कुछ नहीं सुना। हां यह तो उस ने सोचा कि शिवरानी पहिले से बहुत कुछ संकोची और चुप है अचंभा करने लगी कि ऐसा क्यों हुआ क्या किसी ने हम लोगों की बातचीत सुनकर कह दिई है। दूसरे हफ्ते में जब वह आई तो यह सुनकर उसे बड़ा दुःख और निराशा हुई कि मेरी विद्यार्थी अपने गांव के घर को चली गई है। उस को यह स्पष्ट प्रगट होता था कि मेरे गुरु ने मुझे इस को उस के पास ले जाने के लिये विशेषकर भेजा है और ज्योंही मैं ने उस हाथ को थांभा जो कि मुक्तिप्राप्ती की सहायता के लिये बढ़ाया गया था त्योंही वह मेरे पहुंचने पर बाहर भेज दिई गई वहां उसे सिखलाने और उस की सहायता करने के लिये कोई नहीं है। तौभी यह एक प्रबोध था कि वह उस की पहुंचके बाहर नहीं चली गई थी जिस का प्रेम स्वर्ग के सिंहासन से क्रूश की गहिराइयां तक पहुंचा है।

ग्यारहवां अध्याय।

भाई और बहिन।

उस छत पर बीतनेवाली विशेष रात के पीछे एक दिन शिवरानी को पन्नलाल से बातचीत का

अवसर मिला। एमीलीन ने अपनी विद्यार्थियों को छपे हुए पदों का एक परचा दिया था जिन में से वह आकर उन को हर एक बार एक एक पद सिखलाया करती थी। इसी रीति से शिवरानी ने वह पद सीख लिया था जो अब उस के हृदय पर इस प्रकार अंकित हो गया था कि वह उसे कभी नहीं भूल सकी। जब वह अपने हाथ में उस परचे को लिये हुए अकेली बैठी थी तब पत्तनलाल उस के पास आ पहुंचा।

परचे की ओर देखकर उस ने पूछा कि यह क्या है। शिवरानी ने उत्तर दिया कि ये कुछ पद हैं जो हमारी पाठिका ने हम लोगों को दिये हैं।

पत्तनलाल ने अपना हाथ बढ़ाया और ज्योंही उस ने दृष्टि किई त्योंही उस ने तुरन्त देख लिया कि यह सचमुच क्या है। उस ने पूछा कि इस से तुम को क्या लाभ है। जब कि तुम उसे नहीं पढ़ सकती हो।

उस ने उत्तर दिया मैं जानती हूं कि मैं उसे नहीं पढ़ सकती हूं परन्तु मैं उस को अपने हाथ में लिये रहना चाहती हूं क्योंकि उस का प्रभाव मुझ पर पड़ता है और मैं उसे देख सकती हूं। इस के सिवाय यद्यपि मैं पढ़ नहीं सकती तथापि मैं उन लिखे हुए शब्दों में से कुछ शब्दों को जानती हूं सुनिये मैं सुनाती हूं। तब उस ने उन शब्दों को सुनाये जो कि उन्नीस सौ बर्ष पहिले बोले गये थे और तब से संसार भर में गूंज रहे हैं अर्थात् ये

शब्द कि हे सब लोगो जो परिश्रम करते और बोझ से दबे हो मेरे पास आओ मैं तुम्हें बिश्राम देऊंगा।

पत्तनलाल ने इन शब्दों को पहिले पढ़ा था परन्तु जब उस ने उन्हें अपनी बहिनों की स्पष्ट और मधुर बाणी में सुना जो कि केवल उस के मुख ही से नहीं परन्तु उस के हृदय की गंभीरता से निकले थे तो उस पर उन का क्या प्रभाव पड़ा और वे उस को ऐसे अच्छे लगे जैसे कि पहिले कभी नहीं लगे थे। वह यह कहता हुआ उस के पास बैठ गया कि हां तुम इन शब्दों को सुना तो सकती हो परन्तु उन का अर्थ नहीं समझ सकती हो।

शिवरानी ने बड़ी उत्साह से पूछा कि मैं उन का अर्थ क्यों नहीं समझती हूं। मैं जानती हूं कि थकने का क्या अर्थ है और यह भी जानती हूं कि बिश्राम क्या कहलाता है। ऐसी उस में क्या बात है कि मैं नहीं समझती।

उस के भाई ने उत्तर दिया हां तुम यह तो जानती हो कि शरीर का थकना और बिश्राम पाना क्या है परन्तु यीशु ख्रीष्ट का यह अर्थ नहीं है। वह कुछ और ही बात के विषय में बोला था। यद्यपि तुम ऐसा बिचार कर सकती हो कि मैं उस का अर्थ समझती हूं परन्तु यथार्थ में तुम नहीं समझती।

शिवरानी ने अपनी सुन्दर आंखों से अपने भाई की ओर देखा अब तो वह पहिले की नाईं लालसा से भरी हुई दिखाई नहीं पड़ती थी परन्तु हर्ष से चमकती दिखाई पड़ी जब कि उस ने यह

उत्तर दिया कि क्या मेरे शरीर और हृदय दोनों नहीं हैं। और क्या मेरा हृदय कई महीनों से उदास और क्लेशित नहीं रहा है। परन्तु अब तो प्रभु यीशु ने मुझे बिश्राम दिया है कदाचित तुम हो इसे नहीं समझते मैं तो जानती हूं कि मैं समझती हूं।

पत्तनलाल चौंक उठा प्रत्येक बार जब वह अपनी बहिन से बातचीत करता था उसे अचंभा ही होता जाता था।

दूसरी स्त्री पत्तनलाल के घर में उस की पत्नी ही थी जिस के समान शिवरानी की बातचीत नहीं होती थी। वह उस की बुद्धि के कारण नहीं चौंक उठा परन्तु उस का मन भी यीशु ख्रीष्ट के उपदेश में ऐसे लग गया था कि उसे यह सोचना पड़ा कि मुझे शिवरानी को बिहारीलाल के पास फिर भेज देने में बिल्कुल देरी न करना चाहिये।

उस ने अपना मनोरथ प्रगट नहीं किया और ऐसा समझकर कि जब तक मैं ही सुननेवाला हूं तब तक बातचीत किये जाने में कोई हानि नहीं हो सकती उस ने फिर भी कहा हे बाई यहां तो तुम भूल करती हो और मैं ने तुम्हारे यीशु ख्रीष्ट के विषय में सीखने की अपेक्षा बहुत अधिक सीखा है क्योंकि मेरे पास वह पुस्तक है जिस में उस का सारा वृत्तान्त लिखा है और मैं ने उसे कई बार पढ़ा है।

शिवरानी ने बड़ी लालसा से चिल्लाकर कहा वाह। क्या ही अच्छी बात होती यदि मैं उसे पढ़

सकती। चाहे जो कुछ होता मैं तो उस पुस्तक को लेकर पढ़ती आप कृपा करके उसे पढ़कर मुझे सुनाइये।

पन्नलाल ने अपना सिर हिलाकर उत्तर दिया और। यह तो बताओ कि बिहारीलाल इस बात में क्या कहेगा। यदि वह तुम्हारी ऐसी बातचीत सुने जैसी कि तुम मुझ से करती हो तो वह इसी में क्रोध करेगा परन्तु तुम ने यह प्रतिज्ञा किई है कि मैं और किसी से यह बात न कहूंगी क्यों न।

शिवरानी ने धीरे से कहा हां किई तो है और तब उस ने उदास होकर यह भी कहा कि मैं क्या करूं मैं जो चाहती हूं सो नहीं कर सकती हूं न सीख सकती हूं और न कह सकती परन्तु मैं जो चाहती हूं सो सोच सकती हूं क्योंकि कोई भी नहीं जान सकता है कि मेरे मन में क्या है। जब मेरी भौजाई आटा घी पैसे और कपड़ों की बातचीत करती रहती है तब मैं यीशु ख्रीष्ट के बचन के विषय में सोचा करती हूं क्योंकि वे मेरे मन में ऐसे गड़ गये हैं कि उन्हें कोई नहीं छीन सकता।

पन्नलाल कुछ नहीं बोला क्योंकि वह अपने मन में सोच रहा था कि मैं शिवरानी से कहूं या न कहूं कि मैं भी यीशु ख्रीष्ट के बचन के विषय में सोचा करता हूं और उस पर विश्वास करता हूं और उस के उपदेश के अनुसार चलने के लिये यत्न भी करता हूं कदाचित इस से शिवरानी को प्रबोध और शांति होवे और कोई हानि भी न पहुंचे।

फिर भी उस के मन में यह बिचार आया कि स्त्रियों का क्या बिश्वास। हां यह बात तो सच है कि शिवरानी बहुतों के समान नहीं है परन्तु क्या जाने किसी दिन उसे बक सूझे और वह जो कुछ मैं कहता हूं कह सुनावे। इस लिये उस ने कुछ भी न कहा और वे दोनों जो यद्यपि एक मन रहते थे तौभी भिन्न ही रहे।

उस दिन सांझ को पत्तमलाल ने अपने भाई को लिखा कि इस नगर में पलेग का हल्ला मच रहा है और इस लिये मैं समझता हूं कि जितना जल्दी आप शिवरानी को बुला लेवें उतना ही अच्छा और तब मैं अपनी स्त्री को उस के मैके भेज दूंगा और तब यह दो तो कुशलक्षेम से रहेंगी।

एमीलीन के आने के दूसरे दिन बिहारीलाल अकस्मात अपने भाई के घर आ पहुंचा। अपने भाई की चिट्ठी पाने से वह अपना काम पूरा करके जितनी जल्दी हो सका उतनी जल्दी घर लौटा और अब अपनी बहिन को उस भय से जिस का कि हल्ला मच रहा था निकाल ले जाने के लिये आया था। उस को इस बात का मान तक भी न था कि मेरे लिये वह भय सचमुच में क्या है और इस लिये वह यह समझता था कि शिवरानी को जब तक पलेग न होवे तब तक वह कुशलक्षेम से ही है। यदि वह भीतरी बातों को जान लेता तो वह जान जाता कि शिवरानी छोटे भय से भाग रही है परन्तु बड़े भय में पड़ चुकी है। शिवरानी आप

भी शोक और भय में पड़ी थी । उस ने यों सोचा कि मैं उस के विषय में अधिक कैसे सीख सकूंगी जिस के ज्ञान से मुझे ऐसा विश्राम मिला है । जो कुछ मैं ने सीखा है मैं उसे धीरे से भूल जाऊंगी और तब वैसी ही उदासचित्त फिर हो जाऊंगी जैसी कि पहिले थी ।

शिवरानी के लिये एक दुःख और था कि वह अपनी पाठिका को फिर नहीं देख सकती थी । उस ने चुपके से पन्नलाल से बिनती किई कि मुझे एक हफता और रख लीजिये । वह उसे हर्षपूर्वक रख लेता परन्तु वह बिहारीलाल से क्या बहाना करता जो कि उस के ही कहने से शिवरानी को घर लिवा ले जाने के लिये आया था ।

इस लिये वह लौटकर चली गई परन्तु उसी प्रकार नहीं जैसी कि वह आई थी । उस के संदूक के ताले में छिपा हुआ वही पदों का पत्र रखा हुआ था जो उस की पाठिका के साथ उस की उस भेंट का दृश्यमान चिन्ह था जिस का प्रभाव उस पर इतना अधिक पड़ा था और उस के हृदय में यह शब्द जिन को वह सत्य जानती थी क्योंकि उस ने उन की परीक्षा कर लिई थी अंकित थे अर्थात् हे सब लोगो जो परिश्रम करते और बोझ से दबे हो मेरे पास आओ मैं तुम्हें बिश्राम देऊंगा ।

उस के लौटते समय जब कि रेलगाड़ी स्टेशन से छूटी तब शिवरानी ने पन्नलाल से धीरे में कहा जितनी जल्दी हो सके उतनी जल्दी मुझे फिर बुला

लीजिये क्योंकि वह नहीं जानती थी कि पत्तनलाल के कहने पर मुझे यहां से जाना पड़ता है। अपनी बहिन को जाते हुए देखकर पत्तनलाल के हृदय में सचमुच शोक हुआ और उस के सुन्दर मुख और मधुर कोमल रीतियों का प्रभाव उस के हृदय पर इतना पहिले कभी नहीं पड़ा था जितना कि इस समय पड़ा। इस के सिवाय उस को इतना दुःख देने में और उस के विषय में अधिक सीखने में बिघ्न डालने से जिस को वह आप ही सच्चा धर्म्म समझता था पत्तनलाल को शोक हुआ।

बिहारीलाल के कारण उस ने अपने मन में कहा वह मेरा जेठा भाई है और शिवरानी के प्रसन्न करने के लिये भी मुझे उस की इच्छा के बिरुद्ध नहीं चलना चाहिये।

बारहवां अध्याय।

जो कोई मेरे पास आवे मैं उसे किसी रीति से
दूर न करूंगा।

यह वही दिन था जब कि सिंहबाबू के घर में प्रार्थना करने के लिये सभा पहिले पहिल एकट्ठी हुई। नियुक्त समय पर घर का सब से अच्छा कोठा सजाया गया और लोगों के लिये चहुंओर से कुर्सियां लाई गईं।

घर के स्वामी ने इतनी कुर्सियों को आश्चर्य्यपूर्वक देखकर पूछा क्या तुम आशा करते हो कि इतने लोग आवेंगे।

उस की स्त्री ने मुस्कुराकर उत्तर दिया कि तुम्हारे बिश्वास के समान तुम को होवे और क्या यह बात सत्य नहीं है कि हम लोगों की प्रार्थना के अनुसार भी होवे। हम लोगों को क्यों मान लेना चाहिये कि प्रभु जो कुछ हम ने मांगा है सो हमारे लिये न करेगा। क्या यह संभव नहीं है कि वह हमारे लिये और भी अधिक करेगा।

ज्योंही उस ने बातचीत समाप्त किई त्योंही सुदर्शनदास और उस की स्त्री आ पहुंचीं और इस समय सुदर्शनदास की स्त्री उस दिन से जब कि हम लोगों ने उसे पहिले पहिल उस के घर ही में देखा था बहुत भिन्न दिखाई पड़ती थी। उसे अब जान पड़ा कि साया कुर्त्ता और चद्दर की अपेक्षा जब कि केवल एक स्वच्छ साड़ी ही की बात है तो स्वच्छ और सुथरा रहना बहुत सहज बात है। इस के सिवाय वह अपनी मित्र के समान रहना चाहती थी इस लिये आज उस ने वह बस्त्र पहिना जो उसे बहुत ही अच्छा लगता था और एमीलीन को हर्ष हुआ जब कि उस ने इस बदलावट को देखा जैसी कि सुन्दरी के मुख पर बदलावट झलकती वैसी ही उस के पति के मुख पर भी बड़ी बदलावट दिखाई पड़ती थी। वह प्रकाश जो कि उस के हृदय में फिर से दीप्तमान हुआ स्पष्ट दिखाई पड़ा जैसा कि प्रकाश बिना हुए नहीं रह सकता और वह उदासीनता जो उस के मुख पर रहा करती थी अब जाती रही।

धीरे २ और लोग भी आ पहुंचे और यद्यपि पहिला गीत गाये जाने के समय कुर्सियां खाली थीं परन्तु दूसरा गीत गाये जाने के पहिले ही वे सब भर गईं। सिंहबाबू ने एक छोटा सा व्याख्यान दिया जिस में उस ने यह वर्णन किया कि मैं और मेरी स्त्री मुक्ति का सत्य अर्थ पहिले पहिल हम लोगों के बीच में अमुक मनुष्य के आने से कैसे सीखीं जिस ने हम लोगों को यह बतलाया कि यह बात प्रत्येक ईसाई के विषय में सदा सच हो सकती है कि मेरे लिये जीना ख्रीष्ट है।

उस ने अपना व्याख्यान पूरा करते समय यह कहा कि हे प्रिय मित्रो क्या हम लोगों को जो यहां तीसरे पहर उपस्थित हुए हैं एक मन होकर यह प्रण न करना चाहिये कि हम लोगों में से प्रत्येक ख्रीष्ट के लिये जीवने का यत्न करे चाहे और २ लोग कुछ भी किया करें। हमारे चहुंओर वे सब लोग हैं जो हमारे महान प्रभु की निन्दा करते और उस से घृणा भी करते हैं। कोई २ हैं जो उस के नाम से कहलाते हैं और कोई २ नहीं इस लिये क्या हम को यह प्रण न करना चाहिये कि अब से हम लोग उस का ठीक आदर करेंगे। अपने हृदय से उसे अत्यन्त प्यार करेंगे अपने घरों में उस की इच्छा के अनुसार चलने का यत्न करेंगे अपने कामों में हर एक काम ऐसा करेंगे मानो कि प्रभु के लिये ही करते हैं जिस से कि हमारा प्रकाश उन लोगों में चमके जिन के बीच में हम रहते हैं और जहां

कि अभी केवल अंधकार ही है। इस प्रकार प्रार्थना की पहिली सभा का विसर्जन हुआ।

दूसरे हफते में वेही सब तैयारियां किई गईं और उतनी कुर्सियां सजाई गईं परन्तु वे लोग जिन के लिये रखी गई थीं उन पर बैठने के लिये न आये। फिर भी सुदर्शनदास और सुन्दरी पहुंचीं और एक या दो और भी परन्तु दूसरे भजन को गा चुकने पर भी बहुत सी कुर्सियां खाली ही रह गईं।

उस दिन सुदर्शनदास से बोलने को कहा गया और वह भी अपने मित्र की नाईं अपने अनुभव के विषय में बोला और जो लोग उपस्थित थे उन से कहा कि मैं अपने गुरु के पूर्ण रूप से पीछे २ जाने का यत्न करने के बदले धीरे २ परन्तु बिन जाने दूर भटकने लगा था और इस लिये उस आनन्द और शांति को खो बैठा था जो कि पहिले पहिल ख्रीष्ट को स्वीकार करने में मुझे प्राप्त हुई थी।

तब उस ने उन से कहा कि उन लोगों के साथ बातचीत करने से जो कि अपने गुरु के पूर्ण प्रेम और भक्ति से भरे हुए थे मुझे प्रगट हुआ कि मैं कैसा ठंडा हो गया था और मैं क्षमा और नया जीवन पाने के लिये ख्रीष्ट के क्रूश की ओर फिर लौटा। उस ने कहा कि और यही करने के लिये मैं उन लोगों को परामर्श देता हूं जो उसी दशा में हैं जिस में कि मैं था। जो कुछ हम होना चाहते हैं सो ख्रीष्ट के पास गये बिना कभी नहीं

हो सकते। जो कुछ घटी हम लोगों में है उस की पूर्णता हम ख्रीष्ट में पाते हैं इस लिये हम लोगों को अपना सब वृत्तान्त चाहे वह उदासीनता का क्यों न हो उस से कहना चाहिये और उस से बिनती करना चाहिये कि वह जो कुछ हमारे हृदय में देखना चाहता है उसे वहां रखे। हम लोग अपने को फिर भी उस के हाथ में सोंपें और इस बात का निश्चय रखें कि जो कुछ उस ने अपने लोहू से मोल लिया है उसे अस्वीकार न करेगा।

इस के उपरान्त कई प्रार्थना उत्साहपूर्वक किई गईं और उन लोगों को जो थोड़े से लोगों के आने पर उदास हो गये थे जान पड़ा कि इस बात में भी हमारी प्रार्थनाएं सुनी गईं और यह छोटा सा समूह जो कि तन मन में एक है और लोगों को परमेश्वर के पास ले आने के लिये उस का चुना हुआ हथियार हो सकते हैं। एमीलीन ने कहा कि हम लोग निःसन्देह फिर भी उस को और दूसरे लोगों को भी प्रार्थना के द्वारा ला सकते हैं और इस बीच में जब तक हमारा प्रभु स्वतः यहां उपस्थित है जैसा कि वह आज निःसन्देह रहा है तब तक हम लोगों को निराश न होना चाहिये।

उस छोटी आनन्दित मंडली में एक थी जिस का मन उदास था। सुन्दरी उस समय बहुत कुछ सीखती रही थी जब कि वह न केवल पढ़ने के पाठों ही की परन्तु आत्मिक बातों की भी शिक्षा पाती थी और अब वह यह समझने लगी थी कि

मुझ में और इस छोटी मंडली के शेष लोगों में कुछ कुछ भेद है अर्थात उन लोगों में कुछ है जो मुझ में नहीं है। यह बिचित्र बात थी कि यह ज्ञान होने से सुन्दरी अपने से और मंडली के दूसरे २ लोगों से अप्रसन्न होवे परन्तु ऐसा ही हुआ। सुदर्शन-दास को आश्चर्य्य हुआ कि मेरी मुझ से क्यों अप्रसन्न जान पड़ती है और जब कि उस ने उस सभा के विषय में बातचीत किई तो सुन्दरी ने कहा कि मैं सभा को अब फिर न जाऊंगी।

सुदर्शनदास ने अचंभित होकर पूछा क्यों नहीं। सुन्दरी ने उत्तर दिया कि मैं क्यों जाऊं। मैं पाठिका अथवा प्रचारी नहीं हूं कि मैं सभाओं में सदा जाया करूं मुझे जैसा भावेगा तैसा करूंगी।

उस के पति ने कुछ क्रोध के शब्दों से उत्तर दिया कि ऐसी बातचीत करना तुम को किस ने सिखलाया। मैं तो समझता था कि तुम कुछ बुद्धिमान हो क्या तुम इस बात से संतुष्ट हो कि केवल वे ही लोग जो प्रचारक का काम करते हैं स्वर्ग को जायें। केवल इसी बात से हमें स्वर्ग में जाने का अधिकार नहीं मिलता परन्तु वे लोग तो ऐसा नहीं समझते कि हम पृथिवी पर ख्रीष्ट के पीछे २ जाने और उस की सेवकाई करने के लिये इस के पीछे उस के साथ स्वर्ग के रहने की आशा नहीं कर सकते।

सुन्दरी ने ललकारके उत्तर दिया कि मैं तो स्वर्ग में जाने की आशा कभी नहीं करती हूं मैं न उस

स्थान के योग्य और न उन सभाओं के योग्य भली हो सकती हूं ।

सुदर्शनदास यह सुनकर घबड़ा गया । उस ने अपनी स्त्री की बहुत कुछ सहायता किई थी जिस का समागम एक ऐसी स्त्री के साथ हुआ जो उसे बहुत सहायता दे सकती थी परन्तु अब तो ऐसा जान पड़ता था कि मानो वह उन्नति करने के बदले अवनति कर रही हो । यदि वह उस के हृदय का भेद जान सकता जिस की बातों से उस को ऐसा दुःख पहुंचा था तो उसे प्रबोध हो जाता ।

दूसरे दिन सुन्दरी सारे दिन उदास और दुःखित रही । दूसरे दिन सवेरे जब एमीलीन सदा की नाईं पढ़ाने आई तो उस ने अपनी तीक्ष्ण दृष्टि से जान लिया कि मेरी विद्यार्थी को कुछ दुःख पहुंचा है । पठनपाठन के बीच ही में वह ठहर गई और अपनी पुस्तक बन्द करके एमीलीन ने कहा अरे । यह तो बताओ कि तुम क्यों उदास हो तुम पढ़ती तो हो परन्तु मैं देखती हूं कि तुम्हारे बिचार और कहीं हैं ।

सुन्दरी ने अपने हृदय का दुःख प्रगट कर दिया और अपने मुख को साड़ी में छिपाकर रोने लगी । एमीलीन धीरज के साथ ठहरी रही और तब उस से फिर कहा अरे बाई । बतलाओ तो तुम को क्या दुःख है जिस से कि मैं तुम्हारी सहायता करूं ।

तब यह उत्तर मिला कि यह इस लिये है कि तुम सब सुखी रहती हो और गाती प्रार्थना करती

और स्वर्ग के विषय में बातचीत किया करती हो और मैं दुःखी हूं और वहां नहीं जाना चाहती हूं।

एमीलीन ने इन बातों को बड़े हर्षपूर्वक सुना जो प्रार्थना किई गई थी उन के उत्तर का आरंभ इसी बात में हुआ और यह इस बात का पहिला चिन्ह था कि प्रकाश की किरण का प्रवेश हुआ।

उस ने धीरे से कहा कि हे सुन्दरी यदि हम लोग सुखी हैं तो केवल इसी लिये हैं कि प्रभु यीशु ने हम लोगों को सुखी किया है और यदि हम लोग स्वर्ग जाने के बिचार से प्रेम करते हैं तो केवल इसी लिये करते हैं क्योंकि प्रभु यीशु वहां है।

सुन्दरी ने कुछ धीरे से उत्तर दिया परन्तु मैं उसे नहीं जानती हूं और इस बात को भी नहीं जानती कि मैं उसे कैसे जानूं क्योंकि जान पड़ता है कि वह बहुत दूर है।

एमीलीन ने उत्तर दिया कि मैं तो समझती हूं कि हम लोग प्रभु यीशु को ठीक उसी प्रकार जान जाते हैं जैसे कि हम लोग आपस में एक दूसरे को जान लेते हैं। पहिले दिन जब मैं यहां आई थी तो तुम मुझ को बिल्कुल नहीं जानती थीं इस लिये तुम लजाती थीं और अधिक नहीं बोलती थीं क्योंकि मैं तब से प्रतिदिन आती रही इस लिये हम लोग अब आपस में एक दूसरे को भली भांति जानने लगी हैं अब तो तुम अपना दुःख सुख मुझे बतलाती हो और बिल्कुल नहीं लजाती हो। हम लोग प्रभु यीशु को नहीं जान सकतीं जब तक कि

हम उस से मिलकर बातचीत न करें और वह हम लोगों से बातचीत न करे। वह कहता है कि मैं अपनी भेड़ों को जानता हूं और वे मुझे पहिचानती हैं परन्तु भेड़ों को गड़ेरिये के पास ही रहना चाहिये। सुन्दरी ने फिर भी चिड़चिड़ाकर उत्तर दिया परन्तु तुम सब तो बहुत ही भली हो और मैं बहुत ही बुरी हूं। ग्मीलोन ने मुस्कुराकर कहा कि यही तो कारण है कि तुम्हें प्रभु यीशु की आवश्यकता है। यदि हम सब लोग बुरे न होते तो उस को आकर हमें बचाने की कोई आवश्यकता न रहती। स्वर्गीय दूत ने कहा कि तू उस का नाम यीशु रखना क्योंकि वह अपने लोगों को उन के पापों से बचावेगा। वह तुम्हें तुम्हारे चिड़चिड़ेपन से और तुम्हारे हृदय को और सब बुराइयों से बचावेगा। वह इसी काम के लिये स्वर्ग से उतरा और क्रूश पर मरा। यदि पापी न होते तो त्राणकर्त्ता की आवश्यकता न रहती। प्रभु यीशु कहता है जो मेरे पास आवे मैं उसे किसी रीति से दूर न करूंगा। आओ हम लोग उस के पास चलें और उस से बिन्ती करें कि वह तुम्हारे हृदय के पापों को निकाल लेवे और आप आकर वहां रहे।

तब उन्हों ने घुटने टेके और वह मुक्तिदाता जो पश्चात्ताप करनेवाले पापी से कभी दूर नहीं रहता उस पुकार को सुनने के लिये वहां उपस्थित हुआ जो कि उस तक पहुंची और सुन्दरी को जान पड़ा कि वह जो पहिले बहुत दूर जान पड़ता था अब

बिलकुल मेरे पास ही आ गया है। और ज्योंही उस की ओर फिरी त्योंही वह बोझ जिस से वह दबी जाती थी उतार लिया गया।

फिर भी एक बार उस भले गड़ेरिये ने अपनी भेड़ पा लिई और परमेश्वर के दूतों के साम्हने एक और पापी के लिये आनन्द मनाया जिस ने पश्चात्ताप किया।

तेरहवां अध्याय।

बहुत कुछ विश्वास जम गया।

शिवरानी को अपने गांव के घर को लौटे कई हफते हो चुके थे। पत्तनलाल को आजकल बहुत काम रहता था और इस लिये उसे अपने भाई से भेंट करने का अवसर न मिला परन्तु वह बहुत चाहता था कि अपने भाई से भेंट करूं। क्योंकि वह जानना चाहता था कि मेरी बहिन का क्या हाल है। क्या उस ने जो प्रतिज्ञा मुझ से किई थी सो पालन करके अपने नये बिचारों को छिपाया है। ऐसा जान पड़ता था कि उस ने प्रतिज्ञा पालन किई क्योंकि यदि ऐसा न होता तो मुझे निस्सन्देह सुन पड़ता।

उसे यह भी डर था कि बिना पाठिका और पुस्तक के पढ़ने की शक्ति के वह धीरे २ उन शब्दों को जिन का प्रभाव उस पर इतना पड़ चुका था कहीं भूल न जावे और उन का प्रभाव

भुलाया न जावे और शिवरानी फिर अपने निज धर्म्म में पक्की बिश्वास करनेवाली न बन जावे। वह नहीं जानता था कि मेरी ऐसी इच्छा है या नहीं। उसे इस बात का स्मरण करने से कभी २ प्रबोध था कि मेरे कुटुम्ब में से एक मेरी नाईं सोचती और समझती है और वह नहीं चाहता था कि मेरा और मेरी इस सुन्दर बहिन का यह हमदर्दी का सम्बन्ध टूट जावे। उन बातों के कारण जो कि वह अपनी बहिन के साथ किया करता था और उस दृढ़ बिश्वास के कारण जो कि शिवरानी ने उस त्राणकर्त्ता पर किया था जिस का बर्णन सुसमाचारों में हुआ है। पन्नलाल की रुचि ईसाई धर्म्म में अधिक बढ़ गई थी जो कि अब कम होने लगी थी एक बार फिर भी उसे स्पष्ट सिद्ध हो गया है। यह धर्म्म केवल किसी विशेष बातों पर बिश्वास करना और उन्हें ग्रहण करना ही नहीं है परन्तु इस में कुछ अन्तर्गत शक्ति भी है जो उस के हृदय और जीवन से सम्बन्ध रखती है जो उसे सत्यतापूर्वक ग्रहण करता है और वह शक्ति उस पुरुष अथवा स्त्री को नई सृष्टि बना देती है।

उस ने यह बात अपने पुराने सहपाठी में और अब फिर अपनी बहिन में देखी थी। इन दोनों में जो एक दूसरे से बहुत भिन्न थे एक बड़ी तबदीली हुई थी। ख्रीष्ट के विषय में जानने से इतना नहीं यद्यपि वह पहिली बात थी परन्तु किसी जीवते ईश्वरीय अदृष्ट पुरुष के सम्बन्ध में आने से जो बिना प्रत्यक्षरूप में

हुए अपने को उन लोगों पर प्रगट कर सका जो उत्साहपूर्वक उसे जानना चाहते हैं।

उस का मित्र और बहिन उसी ख्रीष्ट पर बिश्वास करती थी जिस का बर्णन सुसमाचार में किया गया है और जो क्रूश पर घात किया गया परन्तु अब परमेश्वर की दहिनी ओर जीवता बैठा है। पन्नलाल को स्वीकार करना पड़ा कि यद्यपि मैं शिवरानी से बहुत अधिक समझता हूं (क्योंकि वह कई बर्षों से बड़ी सावधानी से नया नियम पढ़ता रहा था) तथापि उस में भीतरी ज्ञान और ख्रीष्ट की पहिचान है जो मुझ में कुछ भी नहीं है। उसे निश्चय नहीं था कि मैं यह गंभीर ज्ञान चाहता हूं या नहीं क्योंकि वह इस बात से डरता था कि न जाने इस का क्या फल होवे। यह अच्छा होगा कि मैं जैसा का तैसा नाम मात्र को हिन्दू और इस के साथ ही ईसाई मत को सत्यता का गुप्त रीति से बिश्वासी भी बना रहूं। और अपने मित्र और बहिन के बिश्वास की नाईं ख्रीष्ट के प्रताप और शक्ति को ऐसा न मानूं जिस से कि मुझे सब बातों में उस की आज्ञा पालन करना पड़े हां शिवरानी के लिये तो यह सब ठीक है क्योंकि वह केवल एक स्त्री है और उसे दूसरों की इच्छाओं पर चलना पड़ता है। क्या उस ने प्रसन्नतापूर्वक इन बातों को अपने मन में रखने के लिये प्रतिज्ञा नहीं किई। यह उस के मन में कभी नहीं आया कि इस के बिपरीत करने की नाईं आवश्यकता है। और यह

उस के मन में कैसे आवे जब कि उस ने अपने जन्म भर यह सीखा कि स्त्री का काम आज्ञा मान्ना है और उसे कभी स्वतंत्र नहीं होना चाहिये तौभी उस का चित्त स्थिर न हुआ और वह अपने मन में सदा तर्क बितर्क करता ही रहा।

इसी समय एक दिन सांझ को सुदर्शनदास की भेंट के लिये आने पर पत्तनलाल अचंभित हुआ। उन की भेंट आपस में कई महीनों से नहीं हुई थी और वे सचमुच में कई बर्षों से एक दूसरे के विषय में कुछ नहीं जानते थे। सुदर्शनदास ऊपर से तो एक पुस्तक जो पत्तनलाल के पास थी लेने को आया था परन्तु सचमुच में उस का अभिप्राय दूसरा ही था। जो उस के लिये कितनी भी पुस्तकों से बढ़कर था क्योंकि वह आप ही अपने ईश्वरीय गुरु की संगति में आ चुका था इस लिये स्वभावतः उस के हृदय में यह इच्छा उत्पन्न हुई कि और २ लोग भी इस प्रकाश में लाये जावें और जब सिंहबाबू के घर में जो सभा हुई थी उस में यह ठहरा कि हम लोगों में से प्रत्येक को इस बर्ष एक २ मनुष्य को ख्रीष्ट के पास लाने के द्वारा बनना चाहिये। तब सुदर्शनदास को अपने पुराने सहपाठी का तुरन्त बिचार आया जो एक समय बहुत कुछ ईश्वर के राज्य के निकट जान पड़ता था। जब कि वह एमीलीन से अपने मित्र के बिषय में बोल रहा था तब एमीलीन एकाएक बोल उठी वाह ऐसा जान पड़ता है कि उसी की स्त्री को मैं पढ़ाती थी जिस की बहिन एकाएक चली गई।

कुछ और बातचीत करने से यह सिद्ध हो गया कि वह वही था और दोनों मित्र और सहकर्म्मी इस बात में सम्मत हुए कि हम दोनों मिलकर विशेष करके उस कुटुंब के लिये प्रार्थना किया करें जिस के दो लोगों के हृदय में परमेश्वर काम करता हुआ जान पड़ता है। शिवरानी और उस की भौजाई के चले जाने के पीछे एमीलीन का जाना बन्द हो गया था और इस लिये यह ठहरा कि अब सुदर्शनदास की पत्नी होवे और वह अपने पुराने मित्र से भेंट किया करे। सो उस सांझ को इतनी जल्दी जाकर भेंट करने का अभिप्राय यही था।

वहां जाकर धर्म्मसंबन्धी बातचीत उठाना कोई कठिन बात न थी क्योंकि इस विषय के बिचार दोनों के मन में अधिक रहा करते थे। सुदर्शनदास ने अपने मित्र की पुस्तकों को देखते हुए एक पुस्तक उठाई जिस में ख्रीष्ट का जीवनचरित्र लिखा था। कुछ पढ़ने के पीछे उस ने पत्तनलाल की ओर फिरकर पूछा कि तुम पहिले माना करते थे कि ख्रीष्ट सर्वांस पूर्ण मनुष्य है क्या अब तक भी तुम्हारा यह बिश्वास है अथवा अब तुम उस को इस से और भी कुछ अधिक समझते हो।

पत्तनलाल यह प्रश्न किये जाने पर अचंभित हुआ और कुछ देर तक सोचता रहा कि क्या उत्तर दूं निदान उस ने कुछ भी उत्तर न दिया परन्तु यह कहा कि पहिले मुझे एक बात पूछने दो। क्या तुम्हारा बिश्वास इस बात में कि यीशु ख्रीष्ट आज

के दिन भी जीवता है अभी तक उतना ही दृढ़ है जितना कि आठ बरस पहिले था। क्या उस ने अपने को वैसाही निकाला जैसी कि तुम्हें आशा थी।

सुदर्शनदास ने अपने हृदय में हर्षपूर्वक स्तुति करते हुए तुरन्त उत्तर दिया हे भाई मैं अपने सारे मन से कहता हूं कि जीवते खीष्ट में आज के दिन मेरा बिश्वास उस से दस गुणा अधिक है जितना कि बपतिसमा के समय था। यदि सारा संसार मेरे पास होता जिस से कि मैं उसे दे देता वह हजारों संसार से बहुत बढ़कर है।

सुदर्शनदास के बोलने की रीति से यह सिद्ध हो गया कि जो कुछ वह बोलता है सब सत्य ही है। पत्तनलाल फिर भी उस के उत्साहपूर्वक उत्तर देने से अचंभित हुआ और फिर भी हिचकिचाया जब कि सुदर्शनदास ने अपना प्रश्न फिर पूछा कि अब कहो तुम खीष्ट के विषय में क्या समझते हो।

यदि वह अपने हृदय की बात बोलता तो उसे यह कहना पड़ता कि मेरे मित्र और बहिन की साक्षी इतनी दृढ़ है कि मैं यह बिश्वास किये बिना नहीं रह सकता कि खीष्ट निरे मनुष्य से चाहे वह कितनाही पूर्ण क्यों न हो निस्सन्देह बहुत अधिक बढ़कर है। उस ने जो उत्तर दिया सो यह था कि तुम कहते हो कि यीशु खीष्ट ने अपने को मुझ पर प्रगट किया। मुझ में तो कोई ऐसा प्रकाश नहीं हुआ नहीं तो कदाचित तुम्हारे ही समान हो जाता।

सुदर्शनदास ने उत्साहपूर्वक उत्तर दिया कि

यदि कोई उस की इच्छा पर चलने चाहे तो इस शिक्षा के विषय में जानेगा। हे भाई क्या तुम उस की इच्छा पर चलने के लिये उद्यत हो चाहे जो कुछ हो। यदि ऐसा होवे तो वह अवश्य अपने को तुम पर प्रगट करेगा। यदि ऐसा न हो तो मैं समझता हूं कि तुम्हारे हृदय पर परदा पड़ा है जो कि परमेश्वर की सुन्दरता को तुम से छिपाता है।

फिर पन्नलाल ने अपने हृदय के बिचारों को दबाते हुए उत्तर दिया कि कई बर्ष हुए मैं ने तुम से कहा था कि मैं ख्रीष्ट के विषय में जानना चाहता हूं और उस के उपदेश पर भी चलना चाहता हूं परन्तु मैं इस से अधिक और कुछ करने को उद्यत नहीं हूं यदि मैं इस संसार में अकेला होता तो मैं और कुछ भी कर सकता परन्तु मैं दूसरों को दुःख और अपमान में नहीं डाल सकता।

सुदर्शनदास ने आह भरके उत्तर दिया कि अपमान क्या। क्या तुम उन लोगों में जिन्हों ने परमेश्वर के पुत्र की मृत्यु से त्राण पाया है और जो उस के अनत विभव में भागी होने के लिये बुलाये गये हैं गिना जाना अपमान समझते हो। क्या तुम ने ये शब्द कभी नहीं सुने हैं देखो पिता ने हमों पर कैसा प्रेम किया है कि हम ईश्वर के सन्तान कहावें। क्या तुम उस स्थिति में होना अपमान समझते हो।

इन बातों के सुनने से तो पन्नलाल उभड़ उठा यहां तक कि वह उसे नहीं छिपा सका और उस के हृदय में यह इच्छा उत्पन्न हुई कि मैं अपने हृदय

के विचारों और भावों को इस से कहूं जो रीति से मेरे साथ हमदर्दी कर सकता और मुझे सहायता दे सकता है। वह बोलना ही चाहता था कि इतने में उस को ऐसा जान पड़ा कि मेरा भाई मानो मेरे साम्हने खड़ा हुआ है जो उस के लिये माता पिता के समान था। पत्तनलाल सोच विचार करने लगा कि कदाचित जो कुछ सुदर्शनदास कहे उसे मेरे भाई का अपमान होवे और यह बात नहीं सह सकता था। इस लिये उस ने रूखा उत्तर दिया कि इस बात का निर्णय तुम मेरे ही ऊपर छोड़ देओ। मैं ने तुम्हारे विश्वास और काम में कभी हाथ डालने का यत्न नहीं किया और इस लिये यह उचित नहीं है कि तुम मेरे विश्वास और काम में हाथ डालो।

सुदर्शनदास को यह सुनकर बड़ी निराशा हुई उस का हृदय इस मनुष्य के ऊपर दुःखित हुआ जिस को उस ने विशेष करके अपने हाथ सौंपा हुआ समझा था। वह सोचने लगा क्या मैं अपने काम में चूक गया क्योंकि ऐसा जान पड़ता था कि मानो उस के शब्दों से पत्तनलाल को क्रोध आ गया हो।

जब वह फिर बोला तो उस ने नम्रतापूर्वक कहा हे भाई क्षमा करो यदि तुम समझते हो कि मैं ने अपने और तुम्हारे काम में हाथ डाला है। यदि मैं ने भूल किई है तो केवल इसी कारण से कि मैं चाहता हूं कि तुम उस लाभ को प्राप्त करो जो कि मुझे सिद्ध हो चुका है। सब से बड़ा लाभ है जो किसी को मिल सकता है।

पत्तनलाल इन कोमल शब्दों को सुनकर पसीज उठा उस को ऐसा लगा कि अपने मन का भेद खोलकर कह देऊं परन्तु फिर भी उस ने अपने मन को दबा रखा और केवल यह उत्तर दिया कि मैं एक बात कह सकता हूं। तुम ने औरों की अपेक्षा यह बात अधिक किई है कि तुम ने मुझे ईसाईमत की सत्यता और शक्ति को सिद्ध कर दिया है। यदि सब ईसाई तुम्हारे ही समान होते तो ईसाइयों की संख्या बहुत बढ़ जाती।

सुदर्शनदास कुछ और भी बोलना चाहता था परन्तु पत्तनलाल न यह चाहता था और न ईसाई आशा रखता था इस लिये वह जो पुस्तक उधार लेने को आया था उसे लेकर अपने घर चल दिया।

चौदहवां अध्याय।

शिवरानी का नया पद।

एक दिन ऐसा हुआ कि जब शिवरानी सवेरे भोजन बना रही थी पत्तनलाल द्वार खोलकर भीतर आ पड़ा। शिवरानी अचंभित होकर आनन्द से चिल्ला उठी क्योंकि इस भाई को वह सब से अधिक प्यार करती थी। उस ने उत्साहपूर्वक उन सभों का समाचार पूछा जिन को छोड़कर वह आई थी यहां तक कि वह अपनी पुरानी पाठिका के विषय में भी पूछने को न भूली। उस ने पूछा

कि क्या वह फिर कभी आई थी और इस बात पर अचंभा किया कि मैं क्यों एकाएक उस से बिना कहे हुए चली आई। उसे तो बड़ा आश्चर्य हुआ होगा।

पत्तनलाल ने उत्तर दिया कि वह एक बार और आई थी परन्तु उस के पढ़ाने के लिये कोई नहीं रहा था सो उस ने आना बन्द कर दिया।

शिवरानी ने आह भरके कहा क्या अच्छी बात होती यदि वह यहां रहती क्योंकि जो कुछ उस ने मुझे सिखलाया उस सब को अपने मन में स्मरण रखना तो बड़ी कठिन बात है और मुझे डर है कि मैं उन भले शब्दों में से कुछ भी भूल न जाऊं।

पत्तनलाल डर से चारों ओर देखता था कि कहीं मेरा भाई यद्यपि वह दिखाई नहीं पड़ता है तोभी हम लोगों की बातचीत सुन न लेवे। शिवरानी ने उस के मन की बात जानकर उसे निश्चय दिलाया और कहा कि हमारा भाई स्नान करने के लिये गया है वह मुझे भी अपने साथ ले जाना चाहता था परन्तु मैं ने बहाना कर दिया क्योंकि अब मेरी उन बातों में रुचि नहीं है। मैं अब जान गई हूं कि जल पाप को शुद्ध नहीं कर सकता है और यही बात मैं चाहती हूं।

अब तो भोजन बन चुका था और जब शिवरानी अपनी साड़ी बदलने गई तो पत्तनलाल अकेला रह गया परन्तु शिवरानी बहुत ही जल्दी लौट आई। अपने हाथ में वह उस कागज को लिये थी जिस को वह बहुत बहुमूल्य समझती थी वह बड़े

उत्साह से अपने भाई के पास आकर बैठ गई और प्रसन्न चित्त से कहने लगी कि भाई मेरे मन में अभी बहुत ही उत्तम बिचार आया है। मुझे इन पदों में से केवल दो या तीन के सीखने का अवसर मिला है और मैं बहुत ही चाहती हूं कि शेष पदों को भी सीख लेऊं। मैं बारम्बार यह चाहती थी कि बिहारीलाल से एक एक पद सिखलाने के लिये कहूं परन्तु मैं ने तुम से प्रतिज्ञा किई थी कि मैं तुम्हारे सिवाय और किसी से कुछ न कहूंगी इस लिये मैं उस से न कह सकी परन्तु मैं तुम से तो कह सकती हूं सो तुम मुझे सिखलाओ जितनी जल्दी मुझ से हो सकेगा मैं सीख लूंगी और यहां सुनने के लिये भी कोई नहीं है।

पत्तनलाल ने उस कागज को अपने हाथ में ले लिया। वह अपनी बहिन के उत्साह और बिनती से कैसे मुख मोड़ सकता था। क्या उस ने उसे उस की पाठिका से अलग नहीं कर दिया था तो फिर वह इस बिनती को कैसे अस्वीकार कर सकता था।

उस ने पूछा कि तुम इन पदों में से किस पद को सीखना चाहती हो।

शिवरानी ने उस पद को बतलाया जो कि उस के नीचे था जिसे वह सीख चुकी थी। उसे पहिचान लेना बहुत सहज बात थी क्योंकि उस की पाठिका ने उन पदों पर चिन्ह लगा दिया था जिन्हें वह सीख चुकी थी।

तब पत्तनलाल ने यह पढ़ा क्योंकि जो मुझ से

और मेरी बातों से लजावे मनुष्य का पुत्र जब वह अपने और पिता के और पवित्र दूतों के ऐश्वर्य्य में आवेगा तब उस से लजावेगा। जो कुछ वह पढ़ता था उस पर उस ने बहुत कुछ ध्यान नहीं दिया क्योंकि वह और और बातों के विषय में सोच रहा था और डरता था कि कहीं मेरा भाई न आ जावे। वह नहीं चाहता था कि मेरा भाई मुझे शिवरानी को पद पढ़ाते हुए पा लेवे। एकाएक शिवरानी अपने भाई के पीछे पीछे उन शब्दों को ठहराने से ठहर गई और कहा भाई कृपा करके पढ़ना बंद कर दीजिये और मुझे बतलाइये कि इन शब्दों का क्या अर्थ है। यह यीशु ख्रीष्ट ही का कहना होगा क्योंकि मेरी पाठिका ने मुझ से कहा था कि ये सब शब्द उसी के हैं तो उस के यह कहने का क्या अर्थ है कि "जो कोई मुझ से लजावेगा"। कोई प्रभु यीशु ख्रीष्ट के कारण कैसे लज्जित हो सकता है।

पत्तनलाल चौंक उठा। जो शिवरानी को बहुत कठिन जान पड़ता था उसे वह भली भांति समझता था उस ने उस की अज्ञानता पर हंसते हुए उत्तर दिया कि बाई तुम केवल पढ़ती हो और बहुत सी बातें नहीं समझती हो नहीं तो तुम्हें विदित हो, जाता कि हिन्दुस्तान में आज के दिन बहुत से लोग हैं जो यीशु ख्रीष्ट से लजाते हैं।

शिवरानी ने उत्साहपूर्वक पूछा परन्तु क्यों और कैसे। हम लोग बुरी बातों से लज्जित हो सकते हैं परन्तु कोई यीशु ख्रीष्ट से जो इतना भला है कैसे

लजा सकता है। मैं चाहती हूं कि तुम मुझे यह बात समझाओ क्योंकि मैं नहीं समझती हूं।

पत्तनलाल ने उत्तर दिया इस का यह अर्थ है कि हिन्दुस्तान में आज के दिन बहुत से लोग हैं जो यह बिश्वास करते हैं कि जो कुछ यीशु खीष्ट ने कहा सो सत्य है और कि वह सचमुच इस संसार में रहा और मरा परन्तु वे इस बात को अपने मन में छिपा रखते हैं और किसी से नहीं कहते क्योंकि यदि वे न छिपावें और कह देवें तो उन के मित्र और नातेदार उन से कुछ सम्बन्ध न रक्खेंगे। वे इस बात को स्वीकार करने से लजाते हैं कि हम खीष्ट पर बिश्वास करते हैं जिस का यही अर्थ है कि वे उस से लजाते हैं।

पत्तनलाल का हृदय उन शब्दों के बोलने पर छिद गया। तब शिवरानी ने दुःखित होकर पूछा तो जब मैं ने इस बात की प्रतिज्ञा किई थी कि मैं किसी से न कहूंगी कि मैं खीष्ट पर बिश्वास करती हूं और यह कि तुम्हारे सिवा और किसी से मैं उस के विषय में न बोलूंगी तो क्या इस का यही अर्थ है कि मैं उस से लजाती हूं।

पत्तनलाल सोचने लगा कि इस प्रश्न का उत्तर मैं किस प्रकार से देऊं। उस ने कुछ भय के साथ शिवरानी के उत्साह भरे मुख की ओर देखा परन्तु वह उसे उस बात का अपराधी नहीं ठहराना चाहता था जो उसे बड़ी भयानक बात जान पड़ती थी। इस के सिवा क्या यह कहना ठीक हो सकता था कि वह लजाती थी।

उस ने धीरे से कहा नहीं बाई मैं नहीं समझता हूं कि तुम यीशु ख्रीष्ट से लजाती हो तुम तो इस बात में केवल मेरी आज्ञामानती हो ।

शिवरानी ने उत्तर दिया हां मैं तो कह चुकी हूं कि तुम्हारे सिवा और किसी से कुछ न कहूंगी परन्तु मैं नहीं समझती हूं कि तुम ऐसी प्रतिज्ञा क्यों कराते हो । भली बातें सीखना तो बुरा नहीं है और जो कुछ मैं ने ख्रीष्ट के विषय में सीखा है सो अब भला है इस लिये मैं क्यों न कहूं । मैं तो समझती हूं कि यह अच्छी बात होगी यदि हम सब लोग इन बातों पर बिश्वास करें ।

इतने में बिहारीलाल का शब्द दूर से सुनाई पड़ा और पत्तनलाल ने जल्दी उस कागज़ को अपनी जेब में रख लिया और अपने भाई से मिलने को गया और तब शिवरानी उस भोजन को परसने लगी जो कि उस ने बनाया था ।

दोनों भाइयों को आपस में बहुत कुछ बातचीत करनी थी । इस बात की चर्चा गांव तक पहुंच गई थी कि नगर में प्लेग बहुत है और बिहारीलाल जानना चाहता था कि यह ख़बर सच है या नहीं । पत्तनलाल ने जो कि अपने भाई के डर को कम करना चाहता था इस बात को धत धत कहकर उड़ा दिया और कहा तुम जानते हो कि यह कैसी बात है कि एक मनुष्य मरता है और यह खबर उड़ जाती है कि कम से कम सौ मरे हैं । हां यह बात तो सच है कि नगर में प्लेग है परन्तु अभी तक वह बहुत नहीं फैला है ।

बिहारीलाल ने फिर भी पूछा कि क्या यह बात सच है कि सरकार जबरदस्ती हर एक को टीका लगाती है जिस से उतने ही मनुष्य मरते हैं जितने कि प्लेग से। पत्तनलाल ने हंसकर कहा भाई तुम में निस्सन्देह इतनी समझ है कि इन सब मूर्ख बातों पर जो कि आज कल फैलाई जा रही हैं विश्वास न करो। मुझे तो विश्वास है कि यह सिद्ध हो चुका है और किसी उपाय की अपेक्षा टीका लगाने से अधिक मनुष्यों के प्राण बचते हैं। परन्तु यहां के मनुष्य इतने मूर्ख हैं कि सरकार ने उन का टीका लगाने के लिये समझाना छोड़ दिया है। निस्सन्देह यदि कोई चाहे टीका लगवा सकता है परन्तु कोई जबरदस्ती नहीं है। सच पूछो तो यह बहुत कुछ हम लोगों ही के ऊपर छोड़ दिया गया है चाहे हम टीका लगवावें या नहीं। निस्सन्देह बहुत मनुष्यों के प्राण तो जावेंगे परन्तु यह बात व्यर्थ है कि सरकार हम लोगों को हमारी इच्छा के विरुद्ध बचाने का प्रयत्न करे। हम लोगों को कदाचित अपनी मूर्खता के लिये पछताना पड़ेगा।

बिहारीलाल ने अपने भाई की बातों पर ध्यान दिया। वह जानता था कि यद्यपि मेरा भाई मुझ से छोटा है तिस पर भी कई बातों में मुझ से अधिक बुद्धिमान है। इस लिये उस ने इस बात पर वाद बिवाद नहीं करना चाहा परन्तु केवल उस ही की कुशलता के विषय में पूछने लगा और बड़ी चिन्ता के साथ कहने लगा कि जब तक प्लेग

का डर दूर न हो जावे तब तक तुम को नगर छोड़कर यहीं आकर रहना चाहिये। पत्तनलाल ने उत्तर दिया कि इस बात की कोई आवश्यकता नहीं है अभी तो मैं कुशलता से हूं। यदि किसी समय मुझे आवश्यकता जान पड़ेगी तो मैं वैसा ही करूंगा जैसा तुम कहते हो। मैं ने स्त्रियों को भेज दिया है और अपने लिये मुझे कुछ डर नहीं है।

उस दिन सांझ को पत्तनलाल प्लेगवाले नगर में अपने घर को लौटा और यह कागज़ जिस को कि उस की बहिन बहुत ही बहुमूल्य समझती थी उसी की जेब में रह गया। शिवरानी यह बात नहीं भूली कि मेरी बहुमूल्य बस्तु मेरे भाई ही के पास है और उस ने कई बार उस के मांगने का अवसर ढूंढा परन्तु न पाया। निदान जब कि उस ने उसे अपने साथ ही ले जाते हुए देखा तो उसे ऐसा जान पड़ा मानो मेरी कोई बस्तु चली गई हो परन्तु तौ भी कुछ प्रबोध और शांति थी क्योंकि उस ने अब तक नया पद नहीं सीख लिया था। और जब कि वह अपना नया पाठ दोहरा रही थी उसे फिर भी इन शब्दों पर आश्चर्य्य हुआ और वह चाहने लगी कि कोई जो कि पत्तनलाल से अधिक जानता हो मुझे इन शब्दों को समझाता तो अच्छा होता।

कदाचित इस लिये कि वह इन शब्दों को दोहराती हुई सो गई कि उस ने यह स्वप्न देखा उस ने सोचा कि एक दिन जब थी मैं प्रतिदिन के समान अपने घर में थी कोई बाहर से दौड़ता

हुआ आया और चिल्ला कर बोला यीशु खीष्ट आया है। यीशु खीष्ट आया है। शिवरानी को दो बार नहीं पुकारना पड़ा था परन्तु वह पूर्ण रीति से ओढ़कर निकल पड़ी। तब उस ने देखा कि एक तेज प्रकाश चहुंओर चमक रहा है जो कि सूर्य्य से अधिक प्रकाशमान है और उस के बीच में उस ने एक तेजोमय भीड़ देखी जो कि पृथिवी से नहीं परन्तु आकाश से आती हुई जान पड़ती थी। वह यह तो नहीं बतला सकती थी कि वह कहां से आती है।

इस ऐश्वर्य्यमान भीड़ में उस ने एक को देखा जो औरों की अपेक्षा अधिक चमकता था। और जिस को सब नमस्कार करते हुए दिखाई पड़ते थे। उस ने अपने मन में कहा कि यही यीशु खीष्ट है। वह सब पवित्र दूतों के साथ पिता की महिमा में आया है। वह चाहती थी कि मैं उस के पैरों पर गिरूं और उसे दंडवत करूं परन्तु पीछे हट गई क्योंकि उसे आगे बढ़ने का साहस न हुआ।

थोड़ी देर में यह भीड़ कम होने लगी और उस ने देखा कि मैं उस बड़े बीचवाले पुरुष के पास पहुंच गई हूं तब तो वह आनन्द के मारे और सब कुछ भूल गई और उस के पैरों पर गिर पड़ी परन्तु उस की पुकार नहीं सुनी गई। वह पुरुष उसे रूखी और गम्भीर दृष्टि से देखता था और प्रभु इस प्रकार चुपचाप चला गया।

तब तो शिवरानी समझ गई और शोक से

चिल्ला उठी कि वह मुझ से लजाता है। वह मेरी ओर दृष्टि नहीं करता। वह रोती हुई और आंसू डालती हुई जागी परन्तु यह देखकर उसे हर्ष हुआ कि यह केवल स्वप्न ही है। तौभी वह उसे न भूली और यही चाहती थी कि पत्तनलाल आवे जिस से कि मैं उस से कहूं कि मुझे प्रतिज्ञा से छुड़ा देओ।

पन्द्रहवां अध्याय।

एकान्त का आत्मिक युद्ध।

ऐसा हुआ कि अपने भाई के घर से लौटने के कुछ दिन पीछे पत्तनलाल ने शिवरानी के बहुमूल्य कागज़ को अपनी जेब में पाकर निकाला। उस ने इस समय उस पर बहुत कुछ ध्यान नहीं दिया परन्तु अपने मन में सोचने लगा कि कदाचित शिव-रानी इस कागज़ के खो जाने से बहुत दुःखित होवेगी परन्तु उस ने फिर भी विचार किया कि यह अच्छा ही हुआ कि यह कागज़ उस के हाथ में नहीं रहा क्योंकि अब उस को बिहारीलाल के हाथ में पड़ने का कोई डर नहीं रहा। वह उसे कुछ पुस्तकों और कागजों के साथ मेज पर रखकर बाहर चला गया। कुछ दिन पीछे फिर भी उस की दृष्टि उस कागज पर पड़ी उसे इस समय अवकाश था इस लिये उसे उठाकर पढ़ने लगा। उस ने शिवरानी के पद को जिस नाम से वह उसे पुकारता था कई बार पढ़ा। उस ने उच्च स्वर से

भी पढ़ा क्योंकि वह उस समय अकेला था। इस लिये बार बार उस कोठे में वे शब्द अर्थात हे सब लोगो जो थके और बोझ से दबे हो मेरे पास आओ मैं तुम्हें बिश्राम देऊंगा गूंजे। जो बहुत वर्ष पहिले बोले गये थे और जो संसार भर में तब तक गूंजते रहेंगे जब तक थके और बोझ से दबे हुए लोग बिश्राम की खोज में इस जगत में बने रहेंगे।

पत्तनलाल को इस बात से आश्चर्य्य नहीं हुआ कि उन शब्दों का प्रभाव शिवरानी के मन पर पड़ा। उन का प्रभाव उस के मन पर भी पड़ा था क्योंकि वह जानता था कि मैं उस प्यास से व्याकुल हूं जो कि अभी तक किसी प्रकार से नहीं तृप्त हुई मेरे पास आओ यही बुलाहट थी और आनन्द पूर्वक वह उसे ग्रहण करता परन्तु फिर क्या। वह ग्रहण करने के लिये आकर फिर नहीं कर सकता था। शिवरानी तो ऐसा कर सकती थी परन्तु वह नहीं जानती थी कि आज्ञा पालन क्या कहलाता है। उस की दशा तो भिन्न ही थी। पत्तनलाल ने उस पृष्ठ पर और आगे देखा। यद्यपि वह जो कुछ वहां लिखा हुआ जानता था उसे नहीं देखना चाहता था तौभी उस का ध्यान उस ओर खिंचा। इस लिये उस ने उन शब्दों को फिर भी पढ़ा जिन्हें उस ने अपनी बहिन को कई बार पढ़कर सुनाया था जो कि उसे दोषी ठहराते थे अर्थात् जो कोई इस समय के व्यभिचारी और पापी लोगों के बीच में मुझ से और मेरी बातों से लजावे मनुष्य

का पुत्र भी जब वह पवित्र दूतों के संग अपने पिता के ऐश्वर्य्य में आवेगा तब उस से लजावेगा।

तिस पर भी वह ऐसे मनुष्य के विषय में जानता था वह शिवरानी से कह चुका था कि मैं नहीं समझता हूं कि तुम यीशु ख्रीष्ट से लजाती हो। वह उसे ऐसा स्पष्ट तो नहीं कह सकता था क्योंकि उसे निश्चय था कि यदि उस से स्पष्ट रीति से कहा जावेगा कि तुम्हें ख्रीष्ट को स्वीकार करना चाहिये तो वह निस्सन्देह ऐसा करेगी। उसे यह बूझ पड़ा कि उस निर्बल और कोमल चित्तवाली लड़की को उस काम के करने का बल और साहस हुआ जिस से मैं डरता हूं। परन्तु वह यह भी जानता था कि उसे वह अदृश्य शक्ति मिली है जो मेरे पुराने मित्र को प्राप्त हुई थी। वह प्रभु यीशु ख्रीष्ट की संगति में आ गई थी और उस ने उस से वह नया जीवन प्राप्त किया जिस का उसे कुछ भी ज्ञान न था। वह यह भी जानता था कि मैं ने उसे क्यों नहीं पाया है। वह कैसे पा सकता था जब कि उस के और "मेरे पास आओ" इन शब्दों के कहनेवाले के बीच में रुकावट थी अर्थात डर की रुकावट और उस नाम से कहलाये जाने की निरइच्छा की रुकावट जिस नाम से उस के देशबासी घृणा करते हैं।

उस सुनसान कोठे के एकान्त स्थान में उस ने अपने में स्वीकार किया कि मैं उन लोगों में से एक हूं जिन के विषय में ख्रीष्ट ने यह कहा "यदि कोई मनुष्य मुझ से लजावेगा"। वह जानता था

कि मैं अपने मन में यीशु ख्रीष्ट को परमेश्वर का पुत्र और जगत का त्राणकर्त्ता विश्वास करता हूं परन्तु वह यह भी जानता था कि मैं उसे स्वीकार करने से लजाता हूं।

इस के सिवा उस ने कुछ और भी अधिक विचार किया कि मैं उन लोगों में से एक हूं जिन से ख्रीष्ट लजावेगा जब कि वह अपने ऐश्वर्य्य में आवेगा। जो कुछ शिवरानी ने अपने स्वप्न में देखा था उसे पन्नलाल अपनी आंखों से देखता हुआ जान पड़ता था अर्थात् मनुष्य के पुत्र को आते देखता हुआ पहिले की नाईं अपनी राज्यावस्था को अलग किये हुए और पृथिवी पर दीनताई और सेवकाई में फिरते हुए नहीं परन्तु चमकते हुए दूतों की भीड़ से घिरे हुए अपने पिता के ऐश्वर्य्य में। उस ने समझा कि उस बड़े विशेष दिन में अपने मित्र सुदर्शनदास को विशेष आदर पाते हुए देखूंगा। वह विश्वास करता था कि मेरी बहिन भी ग्रहण और स्वीकार किई जावेगी परन्तु मनुष्य का पुत्र मुझ से लजावेगा। और क्यों नहीं यदि मैं उस दिन ग्रहण न किया जाऊं तो मुझे कुड़कुड़ाना न चाहिये।

तब उस ने दूसरी बात पर बिचार किया यदि मैं अपने मन में यह ठान लूं कि मैं अब और ख्रीष्ट से न लजाऊंगा और मैं इस बुलाहट को अर्थात् मेरे पास आओ ग्रहण करने का संकल्प कर लूं और मैं प्रत्येक आज्ञा जो मुझे दिई जावे मानने को तैयार हो जाऊं और यदि मैं खोपड़ी के स्थान

में क्रूश पर घात किये हुए मनुष्य को अपना प्रभु और गुरू स्वीकार करने के लिये उद्यत हो जाऊं तब क्या। यदि मैं आपही खीष्ट को स्वीकार कर लूं तो क्या मैं शिवरानी को ऐसे करने से रोक सकता हूं। जब कि वह प्रण जो उस ने मुझ से किया है मिट जावेगा और जब कि मेरे उदाहरण से उस का विश्वास दृढ़ हो जावेगा तो मुझे यह जानने के लिये कि वह क्या करेगी किसी भविष्य ज्ञान की आवश्यकता न रहेगी। और तब फिर क्या। उस भाई का क्या होगा जो एक ही साथ अपने भाई और बहिन दोनों खो बैठेगा। बिहारीलाल को कोई इतना नहीं जानता है जितना मैं जानता हूं कि अपने धर्म्म में उस का कैसा दृढ़ बिश्वास है वह कैसा भयभीत हो जाता है जब कोई उसे छोड़ता है और वह अपने पुरुखाओं की रीतियों पर कैसा आंख मूंदकर चलता है तब एक कहानी के कारण जिसे कि उस ने कई बार पढ़ी थी दूसरी दशा का स्मरण आया। उस ने अपने ज्ञान के द्वारा उसे देखा जो संपूर्ण आदर और स्तुति के योग्य है परन्तु घृणा किया गया और त्यागा गया हां वह जिस को क्रूश पर दुःख उठाकर कष्ट सहने की आवश्यकता न थी वह जो किसी दिन फिर आनेवाला है मरने के लिये नहीं परन्तु राज्य करने को। घृणा किये जाने के लिये नहीं परन्तु महिमा प्रगट किये जाने को। यही था जो उसे अपने पास पुकारता था।

दोनो में से किसे चुनूं वर्त्तमान को अथवा भविष्य

को । ख्रीष्ट को अथवा बिहारीलाल को । वर्त्तमान लज्जा और भविष्य महिमा का अथवा वर्त्तमान सुख और भविष्य लज्जा का । यह तो स्पष्ट ही है कि मैं वर्त्तमान और भविष्य दोनों का ग्रहण नहीं कर सकता तो फिर दोनों में से कौन सा चुनूं ।

दीपक जिस की ज्योति कभी अधिक प्रकाशमान नहीं थी धुंधला जलने लगा। और मनुष्यों के शब्द जो दूर सुनाई पड़ते थे अब धीरे धीरे बन्द हो गये । तौभी पन्नलाल बैठा ही रहा । ख्रीष्ट अथवा बिहारीलाल वर्त्तमान हानि और भविष्य लाभ अथवा वर्त्तमान लाभ और भविष्य हानि । यह बड़ा प्रश्न उस के मन में खटकता ही रहा जिस का उत्तर देना उस को बहुत कठिन जान पड़ता था ।

मेरे पास आओ । जो कोई मुझ से और मेरी बातों से लजावेगा मनुष्य का पुत्र उस से लजावेगा। ये दोनों चुने हुए और एकही कागज पर छपे हुए पद एक साथ जुड़े हुए थे ।

दीपक जल रहा था और सुनसान हो गया था परन्तु यह बड़ा आत्मिक युद्ध होता ही रहा । वहां यह कहने के लिये कोई नहीं था कि उस युद्ध का परिणाम हार अथवा विजय हुआ ।

सोलहवां अध्याय ।

पन्नलाल का प्राणान्त ।

बिहारीलाल के गांव में बहुधा तार नहीं जाया

करते थे इस लिये तार के पहुंचने से वहां कुछ गड़-बड़ मच गई। यह पहिला ही समय था कि बिहारीलाल को तार मिला इस लिये उस ने उसे कुछ घबराहट से खोला। वह उसे कुछ समझ नहीं सका क्योंकि उस में केवल यही तीन शब्द लिखे थे अर्थात् तुरन्त आओ। भेजनेवाले का नाम बिन देखे हुए उस ने मान लिया कि यह तार मेरे भाई के पास ही से आया होगा क्योंकि उस के सिवा और कौन है जो मुझे बुला भेजेगा। तब उस को प्लेग का स्मरण हुआ और वह डरने लगा कि कहीं पन्नलाल को प्लेग न हो गया हो। इस डर के मारे उस का हृदय कांपने लगा। उस ने अपने मन में कहा हाय मेरे प्यारे भाई मैं ने तेरे यहां आकर अपने साथ रहने का आग्रह क्यों न किया। तब फिर उस ने धीरज धरके कहा कि यदि पन्नलाल को प्लेग हुआ होता तो वह रोग के कारण तार कैसे भेज सकता सो यह कारण नहीं हो सकता।

दो घंटे पीछे वह अपने भाई के घर पहुंचा। द्वार खोलने के पहिले ही उस ने यह देखा कि कई मनुष्य आसपास खड़े हैं और उन के साथ एक पुलिसवाला भी है। तब एक बनिया जो साम्हने रहता था और जिस को वह जानता था उस के पास आकर कहने लगा अच्छा हुआ कि तुम आ गए। मैं ने तुम्हारे आने तक पुलिसवाले को ठहरने के लिये समझाया था क्योंकि मैं समझता था कि तुम पहिले घर में घुसने चाहोगे।

बिहारीलाल व्याकुल हो गया और कहने लगा क्या कहते हो। मेरे भाई के घर में क्यों कोई घुसे। इतने में भीड़ एकट्ठी हो गई और पुलिसवाले ने उस के पास आकर कहा कि घर में भीतर से ताला लगा है और जब हम लोग पुकारते हैं तो कोई उत्तर नहीं देता है इस लिये हम समझते हैं कि कुछ गड़बड़ है। हम लोगों को कोई घर जिस पर सन्देह होवे खोलने की आज्ञा मिली है परन्तु हम लोग तुम्हारे आने तक ठहरे रहे।

बिहारीलाल ने उत्तर दिया मेरा भाई बाहर गया होगा वह इस समय घर में कभी नहीं रहता। उस ने बाहर से द्वार में ताला लगा दिया होगा और यदि वह आप घर में नहीं है तो घर में नौकर अवश्य होगा। तब बनिया बोला इस में तुम्हारी भूल है। उस ने मुझ से कल रात को कहा था कि मुझे अपना भोजन आप ही बनाना पड़ेगा क्योंकि मेरा नौकर डरकर भाग गया है।

अब तो बिहारीलाल अपने मन में कुछ घबराने लगा और उस ने ऊपरी निश्चिन्तता से उत्तर दिया कि मैं इस बात पर कि वह भीतर है बिलकुल बिश्वास नहीं करता हूं या यदि वह है तो अवश्य सोता होगा परन्तु देखने में कुछ हानि नहीं। किसी को बुलाओ जो द्वार को तोड़कर खोले।

इस में कुछ देर नहीं हुई। द्वार तोड़कर खोला गया और बिहारीलाल उस बनिये और दो पुलिसवालों और कई एक औरों के साथ भीतर घुसा। आंगन

और पक्की सुनसान और खाली पड़ी थी और चुपके से वे सब कोठे की सकड़ी और ढालू सीढ़ियों से चढ़ते हुए छत पर पहुंचे तौभी किसी का पता न लगा।

बिहारीलाल ने कुछ धीरज धरकर कहा मैं ने तुम से पहिले ही कहा था कि वह घर में नहीं है। इतने में बनिया उस कोने में चला गया जहां कि वह जानता था कि पत्तनलाल बहुधा रहा करता था। मेज पर पुस्तकें और कागज फैले हुए थे। भूमि पर कुछ तरकारी पकाने के लिये तैयार पड़ी थी। कोने में एक खटिया पड़ी थी जिस पर एक स्थिर और अचल शरीर पड़ा था। यह पत्तनलाल ही था अर्थात् उस की निरी लोथ। वह बनिया जो उस कोठे में पहिले घुसा था चिल्ला उठा। बिहारीलाल तुरन्त आगे बढ़ा और प्रिय भाई के पास जा खड़ा हुआ परन्तु पत्तनलाल उस पर कुछ ध्यान नहीं दे सकता था। जब कि उस ने यह जाना कि यह लोथ मेरे तरुण और बलवान भाई ही की है जिस को वह कभी नहीं समझता था कि मेरे साम्हने मरेगा तो वह तुरन्त दुःख के मारे फूट फूटकर रोने लगा। वह इस विषय में कुछ नहीं जानता था कि यह जो यहां पड़ा है मुझ को दुःख से बचाने के लिये अनन्त मुक्ति की आशा को भी छोड़ देने के लिये उद्यत था। वे होंठ जो कि मृत्यु से बंद कर दिये गये थे उस गुप्त बात को कभी प्रगट नहीं कर सकते थे जो कि ऐसी सावधानी से छिपाई गई थी

कि बिहारीलाल का अपमान न होवे। वह उस आत्मिक युद्ध के विषय में कुछ नहीं जानता था जो उस सुनसान कोठे में होता रहा और न कभी जान सकता था क्योंकि पत्तनलाल ऐसे स्थान को चला गया था जहां से कि फिर लौटना नहीं हो सकता है और इस लिये उस की गुप्त बात सदा के लिये उसी के साथ ही गुप्त चली गई।

पुलिसवाले ने उस के स्थिर मुख की ओर देखकर कहा वह निस्सन्देह इस भयानक रोग से मरा है। जब हम ने द्वार ताला लगा हुआ देखा तब ही हम ने यह बात जान लिई थी।

ज्योंही बिहारीलाल को इतना चेत हुआ कि बोल सके त्योंही उस ने कहा यह कैसे हो सकता है क्या वह कल ही जीवता और भला चंगा नहीं देखा गया था।

पुलिसवाले ने उत्तर दिया आजकल यह कुछ बात नहीं है यह रोग दूसरे रोगों के समान नहीं है और कोई नहीं कह सकता कि यह क्या करेगा। कोई कोई तो कई दिनों तक इस रोग में पड़े रहते हैं परन्तु दूसरे आज हैं और कल नहीं। यह पहिला ही रोगी नहीं है जिसे हम ने देखा है।

इस प्रकार पत्तनलाल के जीवन का अन्त हुआ अर्थात् वह जीवन जो परमेश्वर की महिमा और अनन्तता के लिये जीवता और मनुष्यों का डर उसे जीवन का सब से बड़ा लाभ और श्रेष्ठ अभिप्राय प्राप्त करने से न हटाता।

यह समाचार तुरन्त फैल गया और इस के फैलने

से कई लोगों के मन में दुःख हुआ। सुदर्शनदास को तो बड़ा ही दुःख और निराशा हुई। यह वही था जो सुदर्शनदास के मन में विशेष प्रकार से बसता था इस लिये कि वह उसे ख्रीष्ट की ओर फेर और अब उसे यह अवसर न मिलने पाया था कि वह सदा के लिये उस की पहुंच के बाहर हो गया।

जब एमीलीन ने यह समाचार सुना तो उस ने उस का दूसरा ही अर्थ लगाया उस ने कहा कौन कह सकता है कि उस के मन में क्या बीत रही थी। यदि यह बात लिखी न जाती तो कौन बिश्वास करता कि उस चोर ने जो हमारे प्रभु के साथ क्रूश पर घात किया गया स्वर्ग में उस के पास स्थान पाया। कभी कभी मैं यह सोचती हूं कि वह वृत्तान्त हम लोगों से इस लिये कहा गया है कि हम जानें कि हमारा प्रभु अपना काम कैसे शीघ्र और अकस्मात् कर सकता है। यह ऐसा है मानो कि हम लोगों को आत्मिक संसार का दर्शन कराता हो।

सुदर्शनदास ने उदासीनता से उत्तर दिया यदि वह अन्त में ख्रीष्ट की ओर फिरकर बच भी गया तौभी वह उस के लिये नहीं जीवता रहा न उस ने उस की कुछ सेवा किई यदि ऐसा होता तो वह ख्रीष्ट के लिये कैसा बड़ा साक्षी होता। मैं यह सोच रहा हूं कि उस की क्या हानि हुई है और ख्रीष्ट के काम को भी कैसी हानि पहुंची है।

एमीलीन ने कहा हां कोई कोई तो प्रवेश की अधिकाई प्राप्त करेंगे और कोई मानो अग्नि के द्वारा

बचाये जावेंगे। पत्तनलाल पिछलों में से हो सकता है यद्यपि हम यह आशा नहीं कर सकते कि वह पहिलों के साथ स्थान पावेगा।

शिवरानी को अपने भाई की मृत्यु का बड़ा दुःख हुआ। उस ने ईसाईमत के विषय में अभी तक इतना नहीं सीखा था कि यह जान सके कि वह समाधि में भी आशारूपी प्रकाश फैलाता है और उस मनुष्य के हृदय को जो शोक से कुचला गया है आशा से प्रगट करता है। जैसे उसे अपने पति और लड़कों की मृत्यु का दुःख हुआ तैसे ही उसे अपने इस भाई की मृत्यु का भी जो फिर कभी उस का भाई नहीं हो सकता था शोक हुआ।

वह दिन आनेवाला है जब कि वह यह बात जानेगी कि ख्रीष्ट जीवता है इस लिये वे लोग भी जो उस पर बिश्वास करते हैं जीवेंगे और वह क्रूश पर इसी लिये मरा कि वह सब बिश्वास करनेहारों के लिये स्वर्ग का राज्य खोल देवे। उस ने पीछे से यह भी जाना जिसे उस ने पहिले कभी नहीं जाना था अर्थात यह कि वह भाई जिस ने मुझ से ख्रीष्ट पर बिश्वास करने की बात को छिपाये रखने की प्रतिज्ञा करवाई आप भी अपने निज बिश्वास को छिपाये रहा। जब सिंह बाबू के घर में पत्तनलाल की अकस्मात् मृत्यु का वर्णन उस छोटी सभा में किया गया जहां उस के लिये बहुधा प्रार्थना किई गई थी तो उन लोगों का बिश्वास जो उपस्थित थे बड़ी परीक्षा में पड़ा क्योंकि निस्सन्देह उन

की प्रार्थना नहीं सुनी गई। तब सिंह बाबू ने उन को इस बात का स्मरण कराया कि वह दिन आता है जब कि हम लोग यह जानेंगे कि हमारी प्रार्थना सुनी गई। क्योंकि कौन कह सकता है कि उस के मन में जो हम लोगों के बीच में से चुपके से उठा लिया गया था क्या क्या बीतता रहा था। तब उन्हों ने यह प्रार्थना किई कि किसी रीति से जिसे कि हम लोग न देख सकते न समझ सकते यह अकस्मात् मृत्यु कुछ अच्छा फल फले और परमेश्वर की महिमा प्रगट करे। प्रार्थना का फल मिलने के लिये उन्हें बहुत दिन तक नहीं ठहरना पड़ा।

सत्रहवां अध्याय।

रक्षा का स्थान।

इस बीच में सुन्दरी अपने पढ़ने में शीघ्र उन्नति कर रही थी। वह योग्यता कुछ कम न थी और जब उस ने अपना मन लगाया तो वह शीघ्र सीख सकी। पढ़ने के पीछे कई प्रकार की बातें होती थीं क्योंकि सुन्दरी ने अभी पूर्णरूप से ईश्वर के राज्य में प्रवेश किया था और अभी उसे बहुत कुछ सीखना था। उस की पाठिका चाहती थी कि वह [illegible] नवीन भूमि के जिस में उस ने प्रवेश किया था [illegible]न और सुन्दरता को खोज कर देखे इस लिये कि वह उस के हरे मैदानों में बिश्राम करे और उस के अमृत जल की धाराओं में से बहुतायत से पीवे। उसे इस

नवीन जनित आत्मा को उन मार्गों में ले जाने से जिन में से वह आप ही चली थी और उसे स्वर्ग के राज्य के भेद समझाने में बड़ा आनन्द होता था। सब से अधिक वह उसे उस राजा के अनुग्रह और सुन्दरता के विषय में बतलाना चाहती थी जिस के विषय में जानना उसे प्रेम करना है और जिस को प्यार करना उस की आज्ञा मानना है।

एक दिन वह यीशु ख्रीष्ट की सेवा करने के आनंद और उसे प्रसन्न करने के यत्न करने के विषय में बोल रही थी क्योंकि उस ने अपने लोगों की बड़ी सच्चाई के साथ सेवा किई थी और उस के विषय में यह कहा गया था कि उस ने अपने ही को प्रसन्न न किया।

सुन्दरी ने उदास होकर पूछा तो मैं उस की सेवा करने के लिये क्या करूं। मैं तो तुम्हारी नाईं बुद्धिमान नहीं हूं और मुझे तो कुछ भी नहीं दिखाई पड़ता जिसे मैं करूं।

एमीलीन ने अचंभित होकर कहा क्या कुछ भी नहीं। मैं तो समझती हूं कि तुम्हें कम से कम दो बड़े मुख्य काम करना है।

उस ने उत्तर दिया मैं तो एक भी नहीं जानती कृपा करके मुझे बतलाइये कि वे कौन से काम हैं जिन के विषय में आप सोच रही हैं और यदि मैं उन्हें कर सकूंगी तो बड़ी प्रसन्नतापूर्वक करूंगी।

एमीलीन ने कहा पहिली बात तो यह है कि ऐसी भली स्त्री बनना जैसा कि परमेश्वर बना सकता

है और दूसरी बात भली माता बनना है। तुम्हारा निज घर ही तुम्हारे लिये एक छोटा संसार सा है जिस में परमेश्वर चाहता है कि तुम उस की सेवा करो और जब तुम यह करना सीख जाओगी तो कदाचित् वह तुम्हें बाहर बड़े संसार में अपनी सेवा करने के लिये भेजेगा।

सुन्दरी ने कहा परन्तु वे काम जिन्हें मुझ को घर में करना है बहुत ही छोटे काम हैं वे तो कुछ भी नहीं जान पड़ते।

एमीलीन ने उत्तर दिया वे ऐसे छोटे नहीं हैं कि परमेश्वर उन्हें न देखे और उन पर ध्यान न देवे। एमीलीन ने धर्म्मपुस्तक को उठाकर जो उस के पास पड़ी थी कहा उस की उस आज्ञा को सुनो और तब यह पढ़ा सो तुम जो खाओ अथवा पीओ अथवा कोई काम करो तो सब कुछ ईश्वर की महिमा के लिये करो। जो कुछ शब्द का अर्थ छोटी और बड़ी बस्तुएं और घर के और बाहर के काम दोनों हैं क्या तुम ऐसा नहीं समझती हो।

सुन्दरी ने कहा कि मैं इन शब्दों का अर्थ ठीक ठीक नहीं समझती हूं उन कामों का जिन्हें मैं करती हूं ईश्वर की महिमा से क्या करना है।

एमीलीन ने उत्तर दिया मैं समझती हूं कि उस का यही अर्थ है कि जब हम भली भांति अपना काम करते हैं तो परमेश्वर आदर पाता है और जब कि हम अपना काम भली भांति नहीं करते तो उस का अपमान होता है। यदि कोई तुम्हें भली

भांति पढ़ते सुने तो लोग कहेंगे कि तुम्हारी पाठिका क्याही अच्छी थी और इस प्रकार मैं आदर पाऊंगी परन्तु यदि तुम बुरी रीति से पढ़ो तो लोग कहेंगे कि तुम्हारी पाठिका अवश्य बुरी होगी और इस प्रकार मेरा अपमान होगा।

सुन्दरी ने धीरे से कहा मैं आप को प्यार करती हूं और आप मुझ पर बहुत कृपालु हैं इस लिये मैं लोगों को आप की प्रशंसा करते हुए सुनना चाहती हूं।

एमीलीन ने उत्तर दिया हां यही तो बात है। जितना अधिक हम अपने प्रभु को प्यार करते हैं उतनाही अधिक हम लोग चाहते हैं कि दूसरे लोग भी उस को प्यार करें और जानें कि वह कैसा महान और भला है। वे उसे तो नहीं देख सकते हैं परन्तु हम लोगों को देख सकते हैं।

सुन्दरी फिर भी बोली मैं बहुत ही मूर्ख और अज्ञान हूं मैं जानती हूं कि मेरे और आप के घर में बड़ा भेद है परन्तु मैं यह नहीं जानती कि अपने घर को आप के घर के समान कैसे करूं। और मैं यह भी जानती हूं कि आप के लड़के कैसे भले और आज्ञाकारी हैं और मेरे लड़के कैसे नटखट और आज्ञाउल्लंघन करनेहारे हैं। परन्तु मैं क्या करूं।

एमीलीन ने उत्तर दिया कि मैं समझती हूं कि पहिली बात जो तुम्हें प्रतिदिन सवेरे करना चाहिये सो यह है कि तुम परमेश्वर से प्रार्थना करो कि वह तुम्हें अपने को प्रसन्न करना सिखलावे। स्मरण

रखो कि वह सदा तुम्हारे निकट है और जब कभी तुम्हें सहायता और परामर्श की आवश्यकता पड़े तो उस से मांगो। यदि मैं सारे दिन तुम्हारे घर में रहती तो मैं समझती हूं कि तुम बारंबार मेरे पास आकर मुझ से प्रश्न करतीं।

सुन्दरी ने कहा हां मैं सचमुच ऐसा करती। परन्तु मैं जानती हूं कि इस से आप को कुछ दुःख न होता। चाहे मैं कैसी भी छोटी छोटी बातों के विषय में आप से पूछा करती परन्तु मैं परमेश्वर से ऐसी छोटी छोटी बातों के विषय में नहीं पूछ सकती हूं।

एमीलीन ने उत्तर दिया तुम्हारे सिर के बाल भी सब गिने हुए हैं मैं नहीं समझती कि बाल से भी छोटी कोई वस्तु है कि नहीं।

सुन्दरी ने कहा मुझे उन बातों में से कुछ बतलाइये जिन्हें आप समझती हैं कि मुझे करना चाहिये।

जब एमीलीन से यह बिनती किई गई तो उस ने भी तुरन्त उत्तर देते हुए अपनी विद्यार्थी से कहा कि मैं समझती हूं कि तुम पहिले अपने घर की दशा सुधारना आरंभ करो मैं सब कुछ तुम को एक बार ही नहीं बतलाऊंगी परन्तु धीरे धीरे तुम सब जान लेओगी।

जब लड़कों की बातचीत आई तब तो इतनी सहज बात नहीं थी। सुन्दरी ने अपने लड़कपन में आज्ञा-पालन कभी नहीं सीखा था और इस लिये उस ने अपने लड़कों को उसे सिखलाने की आवश्यकता न समझी और अब जब कि उस ने इस बात की

आवश्यकता समझना स्वीकार किया तो उस के लिये बड़ी कठिन बात जान पड़ी। उस ने कहा जब कि वे जैसा कहा जाता है तैसा नहीं करते तो मैं उन्हें मारती हूं वे पहिले तो रोते हैं परन्तु पीछे जैसा मैं कहती हूं तैसा करते हैं।

एमीलीन ने कहा क्या तुम दोनों के लिये यह बहुतही आनन्द दायक बात न होगी यदि वे बिना पीटे और चिल्लाये जैसा कहा जाए तैसा करें।

सुन्दरी ने अपनी बात को सुधारकर फिर कहा कभी नहीं मानेंगे। मैं ने आप के लड़कों के सिवा और लड़कों को पहिली बार कहे जाने पर काम करते कभी नहीं देखा।

एमीलीन ने कहा परन्तु मेरे लड़के कर सकते हैं तो क्या यह संभव नहीं है कि तुम्हारे लड़कों को भी करना चाहिये वे तो ऐसी सुन्दर कोमल छोटी लड़कियां हैं कि मुझे निश्चय होता है कि यदि वे सिखलाई जावें तो जल्दी सीख जावेंगी। सुन्दरी ने आह भरकर कहा मैं तो ऐसा नहीं समझती हूं क्योंकि उस ने अपने मन में समझा कि बिना थप्पड़ लगाये हुए जिस की आदत पड़ गई है अपनी लड़कियों को धीरज के साथ आज्ञापालन करना सिखलाना कैसी कठिन बात होगी।

इसी बीच में वे दोनों छोटी लड़कियां दौड़ती हुई आ पहुंचीं। एमीलीन के कहने के अनुसार वे प्रतिदिन एक घंटे के लिये उस पाठशाले में भेजी जाती थीं जो निकट ही था।

ज्योंही उन दोनों ने अपनी माता की पाहुनी को देखा त्योंही वे चिल्ला उठीं कि कृपा करके हम से एक कहानी कहिये। यह मन बहलाने की बहुत ही अच्छी बात थी परन्तु यह कहना तो बहुत ही कठिन है कि किस का मन इस में बहुत अधिक लगता था। सुननेवाली का अथवा बोलनेवाली का।

एमीलीन ने कहा कि तुम पहिले मुझ से यह कहो कि तुम पाठशाला में भली रीति से रही हो या नहीं।

यह सुनकर शांती उदास हो गई परन्तु मोती ने प्रसन्नतापूर्वक उत्तर दिया मैं तो भली रीति से रही हूं परन्तु शांती नहीं रही है उस ने अपना पाठ नहीं सीखा और पाठिका ने उस से कहा कि तुम बड़ी नटखट हो और आज्ञा नहीं मानती हो।

एमीलीन ने शांती को अपने पास बुलाके उस से पूछा कि शांती यह कैसी बात है।

उस ने कड़ा उत्तर दिया मैं जो कुछ मेरी माता कहती है सो नहीं करती तो फिर मैं जो कुछ मेरी पाठिका कहती है सो क्यों करूं। यदि वह चाहे तो मुझे मारे माता भी तो मुझे प्रतिदिन मारती है परन्तु मुझे उस की कुछ चिन्ता नहीं है मैं केवल चिल्ला चिल्लाकर रोती हूं जिस से कि वह मुझे छोड़ देवे।

वे दोनों मातायें एक दूसरे की ओर देखने लगीं। तब एमीलीन ने कहा यद्यपि तुम भली रीति से नहीं रही हो तौभी मैं समझती हूं कि मैं तुम से

एक कहानी कहूं और जब तुम उसे सुन चुकोगी तब मैं तुम को बतलाऊंगी कि मैं ने तुम से यह कहानी क्यों कही। एमीलीन ने इस प्रकार आरंभ किया कि किसी समय ऐसा हुआ कि एक गड़रिया रहता था। उस के पास बहुत सी भेड़ें थीं जिन की वह रखवाली किया करता था। उन में से कोई कोई तो बड़ी और कोई कोई छोटी थीं। कोई कोई गड़रिये के कहने पर चलती थीं और कोई कोई उस का कहना कभी नहीं मानती थी। गड़-रिया अपनी भेड़ों को इतना प्यार करता था कि वह उन्हें सब से उत्तम स्थान में जहां कि हरी घास होती थी ले जाना चाहता था परन्तु कोई कोई भेड़ें बहुधा ऐसी समझती थीं कि हम सब से उत्तम स्थान जानती हैं और दूसरे मार्ग से जाना चाहती थीं। उन भेड़ियों में बहुत से छोटे छोटे मेम्ने भी थे और उन में से दो उस दयालु गड़रिये को बड़ा दुःख देते थे क्योंकि वे उस का कहना नहीं सुनते थे और सदा इधर उधर कूदना फांदना चाहते थे और कभी कभी वे मार डाले जाने के भय में भी पड़ जाते थे।

एक दिन वह अपनी भेड़ों को सुन्दर हरे मैदान में ले जाने चाहता था जहां कि उन के चरने के लिये हरी घास थी परन्तु यह छोटे मेम्ने वहां नहीं जाने चाहते थे और उन्हों ने कोई दूसरा ही स्थान अपने लिये चुना। इस लिये गड़रिये ने उन को अपने मार्ग से ले जाने का यत्न करना छोड़ दिया और उन्हें अपने मनमाने मार्ग में जाने दिया

पहिले तो उन्हों ने समझा कि जहां चाहे वहां जाने में तो बड़ा हर्ष होता है परन्तु थोड़ी देर पीछे वे कुछ खेलने से बहुत थक गये और घर को लौटने का विचार करने लगे।

तब वे यह जानने के लिये चहुंओर देखने लगे कि हम कहां हैं। वह एक विचित्र स्थान था जहां हरी घास तो नहीं थी परन्तु चट्टानें और पत्थर चारों ओर पड़े हुए थे और न वहां ठंढे पानी के झिरने थे कि प्यास बुझाई जावे। जब वे खड़े सोच-विचार करते थे कि किस मार्ग से जावें तब उन्हों ने एक शब्द सुना जिस से कि वे कांप गये। यह किसी जंगली पशु की गर्जन का शब्द था। तब उन छोटे मेम्नों ने जाना कि हम भय के स्थान में हैं और यहां कोई हमारी रक्षा करनेवाला नहीं है। अरे! वे कैसे चाहते थे कि अपने भले दयालु गड़रिये का शब्द सुनें। कैसे हर्षपूर्वक उस के पास दौड़ जावें और जहां वह कहे उस के पीछे पीछे जावें परन्तु वह बहुत दूर था मैं तुम से उस संपूर्ण दुःख और भय के विषय में जो उन्हें सहना पड़ा कैसे कह सकती हूं वे जंगली पशुओं की भयानक गर्जन से डरकर भागे। कंटीली झाड़ियों से जिन में वे गिर पड़े छिद गये और उन के पैर मार्ग के नुकीले पत्थरों से कैसे कट गये और उन से लोहू बहने लगा। निदान वे यहां तक थक गये और घायल हो गये कि वे और आगे न चल सके और जैसे वे समझते थे मरने अथवा जंगली पशुओं से खाये जाने के लिये लेट गये।

ज्योंही उन्हों ने अपनी आंखें मूंदीं त्योंही उन्हों ने सोचा कि यदि हमारा भला गड़रिया केवल यहां आकर हमें ढूंढ लेता तो हम सदा जहां वह चाहता तहां ही जाया करते और फिर उसे कभी दुःख न देते। और ऐसा हुआ कि वह दयालु गड़रिया उसी मार्ग से निकला। उस ने उन थके और घायल मेम्नों को अपनी गोद में उठा लिया और उन के घावों पर पट्टी बांधी और उन्हें घर ले गया और उस दिन से वे दोनों छोटे मेम्ने सदा गड़रिये के पास ही पास और उसी के पीछे पीछे चलने का यत्न करते थे।

वे दोनों लड़कियां ध्यान लगाकर सुन रही थीं और ज्योंही एमीलीन ने अपनी कहानी समाप्त किई त्योंही शांती ने धीरे से पूछा कि क्या उस गड़रिये को बहुत शोक हुआ था जब कि वे छोटे मेम्ने भाग गये थे।

एमीलीन ने उत्तर दिया हां वह अवश्य बहुत ही शोकित हुआ था नहीं तो वह उन के ढूंढने के लिये इतनी दूर कभी न जाता।

मोती ने कहा यदि वे गड़रिये से दूर न भाग जाते तो उन के न चोट लगती और न कुछ डरते। यह तो उन्हीं का दोष था।

शांती ने फिर कहा मैं समझती हूं कि आप मोती और मुझे दोनों को उन छोटे मेम्नों के समान समझती हो क्योंकि हम लोग अपना मन माना करना चाहते हैं।

एमीलीन ने उत्तर दिया हां ठीक यही मेरा अर्थ है अच्छा गड़रिया अर्थात् हमारा प्रभु यीशु खीष्ट जैसा एक समय इस संसार में चला फिरा करता था तैसा तो आज के दिन नहीं चला फिरा करता है और इस लिये हम उसे अपनी आंखों से न देख सकती हैं और न अपने कानों से उस की बात सुन सकती हैं और उन लोगों की आज्ञा नहीं मानतीं जिन की आज्ञा मानना हम लोगों का उचित है। तो मानो हम प्रभु यीशु खीष्ट की आज्ञा उल्लंघन करती हैं।

मोती ने पूछा यदि हम लोग नटखट हो जावें तो क्या हम लोगों को उन छोटे मेम्नों के समान चोट लगेगी।

एमीलीन ने उत्तर दिया हां निस्सन्देह तुम को चोट लगेगी क्योंकि पाप के समान दुःख देनेवाला और कुछ नहीं है और दुष्ट आत्मा उस बड़े गरजते हुए सिंह के समान है जो हमें खा जाने का यत्न करता है।

शांती ने बड़े उत्साह से कहा तो मैं सोचती हूं कि मैं प्रभु यीशु खीष्ट से बिनती करूं कि वह मुझे अपनी गोद में लेवे और मार्ग भर लिये चला जावे। तब तो दुष्ट आत्मा मेरे पास नहीं पहुंच सकेगा। मोती ने कहा कि अब हम लोग क्यों न सदा सर्वदा भले रहेंगे।

शांती ने सचेत होकर कहा मैं यह तो नहीं कह सकती कि मैं सदा सर्वदा भली रह सकती हूं परन्तु मैं यह समझती हूं कि मैं कभी कभी और कदाचित बहुधा भली रहूंगी।

बातचीत के समाप्त होने पर एमोलीन को जल्दी ही घर जाना था परन्तु उस की कहानी से माता और लड़कियों दोनों को इस विषय में बहुत कुछ सोचने का अवसर मिला और बहुत दिनों तक वे दोनों छोटी लड़कियां उस अच्छे गड़रिये के विषय में सोचती रहीं जो कि उन के नटखट होने पर शोकित होता था और इस लिये उन दोनों ने भले होने का प्रयत्न किया।

अट्ठारहवां अध्याय।

क्या करना चाहिये।

पत्तनलाल के मरने के कुछ दिन पीछे उस की पुस्तकें और सामान उस के भाई के घर में लाये गये। शिवरानी को शोक और हर्ष दोनों हुआ जब कि उस ने उन पुस्तकों को लौटा पौटा जिन्हें कि उस ने बहुधा अपने भाई के हाथ में देखी थीं। ज्योंही उस ने इस बात का स्मरण किया कि वह सब परिश्रम जो कि मेरे भाई ने विद्या प्राप्त करने में किया था उसी के साथ नष्ट हो गया त्योंही उस की आंखों से आंसू टपक पड़े। एकाएक उन वस्तुओं में जो चारों ओर बिथरी पड़ी हुई थीं उस ने अपने उन पदों के कागज को देखा जिसे वह अपने लिये सब से उत्तम वस्तु समझती थी और जो पत्तनलाल के घर में रहने के सुखी दिनों का केवल एकही स्मारक था अर्थात् वे दिन जिन्हें वह अब शोकित होकर समझती थी कि

फिर कभी नहीं आ सकते। अपने भाई की मृत्यु के शोक के साथ ही साथ उसे यह भयानक निराशा भी हुई थी कि अब मैं उस विषय में और अधिक नहीं सीख सकती हूं जिस से कि मुझे इतना बिश्राम मिला है। अब उस को केवल यह आशा रह गई थी कि मुझे अपने शेष दिन बिहारीलाल के घर में बिताने पड़ेंगे और वह बहुत कुछ डरती थी कि कहीं धीरे धीरे मैं अपने उन सीखे हुए शब्दों को भूल न जाऊं जिस से कि कुछ समय पीछे मेरा मन वैसा ही उदास और सूना हो जावे जैसा कि वह मेरी पाठिका से उस स्मरणीय भेंट के पहिले था। इस कागज के देखने से उसे फिर कुछ आशा हुई अर्थात् उस के पास अब कुछ हो गया जिसे वह देख सकती और थांभ सकती थी और जिस पर प्रभु यीशु के कहे हुए वही शब्द लिखे थे। वह उस के हाथ से फिर कभी नहीं जा सके और उस ने उसे पहिले की अपेक्षा ऐसी अधिक सावधानी से अपने पास रक्खा कि फिर कोई उसे उस से न ले सके।

अपने भाई की पुस्तकों को देखने से बिहारीलाल को कुछ और ही जान पड़ा। उन पुस्तकों के बीच में उस ने ईसाई धर्म्म की पुस्तक के सिवा एक बहुत पुरानी और बहुत पढ़ी हुई नये नियम की पुस्तक भी देखी। वह जानता था कि मेरा भाई नये नये बिचार विशेष करके अंगरेज़ी बिचार ग्रहण करने के लिये कैसा उद्यत रहता था परन्तु उस ने यह बात कभी प्रगट नहीं किई कि मैं अपने धर्म्म को

छाड़कर और किसी धर्म्म की अधिक चिन्ता करता हूं यद्यपि यह बात तो सत्य है कि वह अपने धर्म्म की रीतियों के पालन करने में कभी सावधान नहीं था। उस दिन सवेरे से जब कि बिहारीलाल अपने प्रिय भाई के मृतक शरीर के पास खड़ा था आज पहिलेही पहिल यह शांतिदायक बिचार उस के मन में आया और वह कहने लगा कि हां ईसाई होने की अपेक्षा यही अच्छा हुआ कि पत्तनलाल प्लेग से मर गया। उस ने उन पुस्तकों को जिन्हें वह समझता था कि जिन के हाथ वे पड़ेंगी बुरा प्रभाव डालेंगीं सावधानी से प्लेग के कीड़ों का बिचार न करते हुए बटोरा और यह ठाना कि वे जितनी जल्दी हो सके उतनी ही जल्दी जला दिई जावें। इस प्रकार वे दोनों भाई और बहिन एक ही घर में रहते रहे और एक ने दूसरे के बिचारों को न जाना कि उन में से एक कैसे उस बात को ढूंढ़ रही है जिस को कि दूसरा अपने से अलग करने का यत्न कर रहा है। यहां तक कि ऐसा हुआ कि एकाएक यह रोक अलग हो गई और एक के मन की बात दूसरे को प्रगट हो गई। ब्यारी बन चुकी थी और सब लोग खा पी चुके थे इस लिये अब कुछ करना और सोचना नहीं था उस की भौजाई जिस ने कहा था मेरा जी अच्छा नहीं है सो रही थी और शिवरानी जो कि उस के सोने में कुछ बाधा नहीं डालना चाहती थी अपने बहुमूल्य कागज को गुप्त स्थान से निकालकर उस पर लिखे हुए पदों को धीरे धीरे पढ़ रही थी।

वह उन शब्दों को सुनना और कहना भी चाहती थी। इस से उन की सत्यता उस को अधिक प्रगट होती थी। इस लिये इसे बिलकुल कुशल समझकर वह अपने मन में कह रही थी कि ईश्वर ने जगत को ऐसा प्यार किया कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दिया कि जो कोई उस पर विश्वास करे सो नाश न होय परन्तु अनन्तजीवन पावे।

जो कुछ वह कह रही थी उस के अर्थ पर उस का मन ऐसा लगा हुआ था कि उस ने बिलकुल नहीं जाना कि बिहारीलाल धीरे से पढ़ी में आकर पीछे से देख रहा है। ज्योंही उस ने पूछा कि तुम ने कब से पढ़ना सीखा है त्योंही वह चौंक उठी और बिहारीलाल ने कहा कि मैं समझता हूं कि मैं ने तुम को न पढ़ने के लिये आज्ञा दिई थी।

शिवरानी पहिले तो बहुत डर गई उस का हृदय कांपने लगा तब उस को यह स्मरण हुआ कि पत्तन-लाल तो अब जीवता नहीं है इस लिये अब मुझे उस प्रतिज्ञा को पालन करना जो कि मैं ने उस के साथ किई थी क्या प्रयोजन है जो कुछ बिहारी-लाल पूछना चाहता था सो वह स्पष्ट कह सकती थी क्योंकि कोई बुरी बात नहीं थी जो छिपाई जावे यह केवल उस भाई को जो अब मर चुका था प्रसन्न करने ही के लिये था कि उस ने गुप्त रखने की प्रतिज्ञा किई थी उस का डर जाता रहा और उस ने बिहारीलाल को ओर फिरकर शांति पूर्वक कहा कि मैं पढ़ती नहीं हूं क्योंकि तुम ने

पढ़ने के लिये मना कर दिया है। जो कुछ मेरे मन में था सोई मैं केवल कह रही थी।

बिहारीलाल ने कहा तो फिर उस कागज का क्या प्रयोजन है। जिस को तुम जानती हो कि मैं नहीं कर सकती हूं तिस को करने का बहाना करना निस्सन्देह मूर्खता की बात है। भाई ने रूखेपन से मांगा कि लाओ देखूं कि क्या है। क्योंकि अभी तक उस को यह पूरी रीति से नहीं जान पड़ा था कि मेरी बहिन ने सच बात कही है और कि सचमुच वह वैसी ही अनपढ़ी है जैसी कि वह अपने को बताती है।

शिवरानी उस बढ़ाये हुए हाथ पर ध्यान न देकर उस कागज को अपने ही हाथ में दृढ़ता से पकड़े रही। तब तो बिहारीलाल ने और भी रूखेपन से कहा वह मुझे देओ।

शिवरानी ने बिनती करके कहा कि आप कृपा करके उसे ले लीजिये और मुझे फिर दीजिये।

इस पर बिहारीलाल ने कुछ उत्तर नहीं दिया और तुरन्त उन अंगुलियों से जो कि ढीली पड़ने लगी थीं कागज छीन लिया। शिवरानी बड़ी चिन्ता के साथ ताकती रही जब कि वह उस लिखे हुए को पढ़ रहा था। पहिले तो वह उन शब्दों को कुछ नहीं समझा क्योंकि उस ने उन्हें पहिले कभी नहीं पढ़ा था और जब वह यीशु के नाम तक पहुंचा तब ही उस को जान पड़ा कि ये पद जो कि इस कागज पर छपे हुए हैं ईसाइयों की पुस्तक के

हैं उस के बिचार तुरन्त उस की ओर गये जो उस ने पत्तनलाल के सामान में देखा था और वह बहुत ही क्रोधित हुआ कि मेरी बहिन भी भ्रष्ट हो गई है। बिना कुछ बोले शिवरानी की इस चिल्लाहट पर मुझे दे दीजिये इस से कुछ हानि न पहुंचेगी ध्यान न देकर उस ने उस कागज को फाड़कर टुकड़े टुकड़े कर दिया और भूमि पर फेंक दिया। तब भाई और बहिन दोनों एक दूसरे के मुख की ओर ताकने लगे और हर एक दूसरे के बोलने की बाट जोहता था।

शिवरानी चुप रही इस लिये बिहारीलाल ही पहिले बोला कि बतलाओ तुम ने यह कागज कहां पाया और किस ने तुम को इसे पढ़ना सिखाया। शिवरानी जिस को कि अब कुछ डर नहीं था बोली कि मैं तुम से कह चुकी हूं कि मैं नहीं पढ़ सकती। एक मेम साहिबा ने जो कि मेरी भौजाई को आकर पढ़ाया करती थीं मुझे यह कागज दिया और मुझे जो कुछ उस पर लिखा था कहना सिखलाया। बिहारीलाल क्रोध में आकर बड़बड़ाने लगा देखो। जो मैं ने कहा था सोही हुआ अंगरेज मेम साहिबाओं को अपने घर में आने देने का यही फल होता है। उन का मुख्य प्रयोजन यही रहता है कि हमारी स्त्रियों को ईसाई करें।

शिवरानी ने कहा किसी अंगरेज मेम साहिबा ने मुझे नहीं सिखलाया वह तो हम लोगों में से ही थीं केवल इतना ही भेद है कि वह हमारे समान घर में बन्द रहकर अज्ञान नहीं बनी रही उस ने मुझे

कोई बुरी बात नहीं सिखलाई इस लिये आप क्यों क्रोध करते हैं। पत्तनलाल तो कभी नहीं करता था।

बिहारीलाल को यह सब से भारी घाव लगा। वह अपने मन में कहने लगा अरे। यह क्या बात है। क्यों उन ईसाई पुस्तकों का जो कि पत्तनलाल ने पढ़ीं उस पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि उस ने वे ही बातें अपनी स्त्री और बहिन को पढ़ने दिईं मुझे जान पड़ता है कि इन लोगों ने मेरे विरुद्ध गुप्त बिचार कर लिया है जो केवल आज प्रगट हुआ तौभी व्यर्थ इतने घबराने की कोई बात नहीं है। पत्तनलाल का तो अब कुछ डर ही नहीं और शिवरानी तो अभी लड़की ही है जैसा उस से कहा जायगा तैसा करेगी।

वह कुछ शांति होकर बोला इस बात से कुछ प्रयोजन नहीं कि पत्तनलाल क्या समझता था अथवा कहता था वह अपने पुरुखाओं के धर्म्म ही में मरा। तुम्हारे विषय में तो मैं ऐसी सावधानी करूंगा कि तुम घर से बाहर फिर कभी न जा सको और जो कुछ तुम ने सीखा है उसे जितनी जलदी भूल जाओ उतना ही अच्छा है।

तब तो शिवरानी के मन में उस नये पद का प्रकाश हुआ जिसे पत्तनलाल ने उस को सिखलाया था अर्थात् जो कोई इस समय के व्यभिचारी और पापी लोगों के बीच में मुझ से और मेरी बातों से लजावे मनुष्य का पुत्र भी जब वह पवित्र दूतों के संग अपने पिता के ऐश्वर्य्य में आवेगा तब उस से लजावेगा। अब तो यह कहने के लिये कोई नहीं

था कि तुम मत बोलो। अब वह यह बतलाने के लिये कि मैं लजाती नहीं हूं स्वतंत्र थी। इस लिये उस ने साहसपूर्वक कहा कि ऐसा कभी नहीं हो सकता है यीशु ख्रीष्ट के शब्द मेरे हृदय में पैठ गये हैं और यदि मैं भूलना भी चाहूं तो मैं उन्हें नहीं भूल सकती और न कभी भूलूंगी।

क्षण भर तक तो बिहारीलाल ऐसा अचंभित हुआ कि उत्तर न दे सका। उस ने अपनी बहिन के छोटे दुर्बल रूप की ओर देखकर और उस की आंखों पर से जिन से कि वह उस की ओर निडर देख रही थी उस के अन्तरगत बिचारों को जानकर अचंभा किया। वह यह ठट्ठा करते हुए बोला तुम मूर्ख अज्ञान लड़की इन बातों के बिषय में क्या जानो और क्या समझो मैं ऐसा प्रबन्ध करूंगा कि तुम अपने निज धर्म्म की बिधियों पर प्रतिदिन चला करो और तब तुम तुरन्त यह सब मूर्खता भूल जाओगी।

शिवरानी ने पूछा परन्तु यदि वे सब विद्या मूर्खता की बातें होवें (क्योंकि मुझे ऐसा जान पड़ता है) और यीशु ख्रीष्ट के शब्द सत्य होवें तो फिर क्या। तब वह अपने भाई की ओर फिरी और बिन्ती करते हुए कहा अरे भाई। क्या आप उस पुस्तक को जो कि यीशु ख्रीष्ट के बिषय में बर्णन करती है पढ़कर न देखोगे कि वह कैसी अच्छी है मैं ने तो अपने धर्म्म में कुछ बिश्राम न पाया परन्तु यीशु ख्रीष्ट के शब्दों से मेरे हृदय की उदासीनता जाती रही।

भाई ने उस कोमल हाथ को जो कि उस की भुजा पर रक्खा गया था झटक दिया और अपनी बहिन की ओर रूखेपन से देखकर उत्तर दिया कि यह मूर्खता छोड़ो और सचेत रहो कि मैं इस के बिषय में फिर कभी एक शब्द भी न सुनूं। मैं तुम्हें केवल तुम्हारी अज्ञानता के कारण क्षमा करता हूं।

तब वह फिरा और उस के पास से चला गया। परन्तु उस ने इस बिषय को नहीं छोड़ा। वह अपना हुक्का अकेले पीते हुए ध्यानपूर्वक इस बिषय पर सोचता रहा यद्यपि उस ने शिवरानी को यह बात उस की मूर्खता समझाई थी तौभी उसे यह जान पड़ा कि यह इतनी बड़ी गंभीर बात है जितनी कि मैं ने उसे कभी नहीं मानी थी। उसे यह स्मरण हुआ कि पन्नलाल ने अपने को उन बेड़ियों से जिन से वह जकड़ा था कैसे छुड़ाया और शिवरानी के निडर शब्दों में भी कुछ ऐसी बात थी जिस से उस को अपने छोटे भाई का जो उस से एकाएक बिछुड़ गया था स्मरण हुआ।

यह बात जानकर उसे हर्ष हुआ कि मेरी बहिन सर्वथा मेरे ही हाथ में है। इस गांव में तो जो कि सब भ्रष्ट कारक प्रभावों से अलग है उस के मन पर अंकित बात के सिवा और कुछ डर की बात नहीं है और यह भी जल्दी ही मिट जायगी। तिसपर भी इस बात के सोचने से उसे दुःख होता था कि उस के कुटुम्ब का कोई जन ईसाई धर्म्म के बिषय में कुछ भी सोचे और इस

लिये उस ने अपने मन में ठान लिया कि इस बात में भी मैं उसे अपनी मनमानी बात न करने दूंगा उसे जल्द प्रगट हो जावेगा कि मैं अधिक बलवान और अपने घर का स्वामी हूं। कल ही उसे किसी पूजा के काम में लगना पड़ेगा और तब देखेंगे कि इस नये धर्म्म का क्या होता है।

अरे बिहारीलाल तुम अपने बल और शक्ति का बहुत कुछ अहंकार कर चुके हो। भाई तनिक ठहरो कहीं कल ही तुम्हारा यह सब अहंकार न बुझ जाय और तुम को जान पड़े कि घर के स्वामी होने की तो क्या परन्तु अपने स्वामी भी नहीं हो।

जब कि शिवरानी वहां जहां कि उस का भाई उसे छोड़ कर चला गया था बैठी थी तब उसे जान पड़ा कि मानो उसे एक अंधकार ने छा लिया है। उस का वह सब साहस जिसे कि उस ने अपने भाई के साम्हने दिखलाया था छूटने लगा और उसे पूर्ण जान पड़ा कि मैं केवल एक निर्बल अनाथ लड़की हूं जिस की सहायता करनेवाला कोई नहीं है। उसे निश्चय हो गया था कि मेरा भाई इस बात को योंहीं न छोड़ देवेगा परन्तु मुझे अपनी इच्छा पर चलाने के लिये बहुत कुछ उपाय करेगा और उस का साम्हना करने के लिये मुझ में बल कहां से आवेगा।

यद्यपि पत्तनलाल उस के साथ एक मत न था तौभी उस ने उस पर दोष नहीं लगाया था परन्तु बिहारीलाल और ही प्रकार का मनुष्य था जिस

से उस को अब प्रसंग पड़ा था और इस लिये उस का साहस छूट गया । उस को यह आपत्ति अकेले ही नहीं झेलनी पड़ी । एक बार फिर भी यह शब्द अर्थात् हे सब लोगो जो परिश्रम करते और बोझ से दबे हो मेरे पास आओ मैं तुम्हें बिश्राम देऊंगा। उस को ऐसे सुनाई पड़े मानो कि कोई साक्षात बोल रहा हो और शिवरानी का मन यों बोला हे यीशु ख्रीष्ट मैं बोझ से दबी हूं मुझे बिश्राम दीजिये और मुझे लज्जित न होने दीजिये ।

और ऐसा हुआ कि उसे वह बिश्राम मिला जिस ने उसे ढांककर ऐसी रक्षा किई कि वह आपत्ति यद्यपि वह अभी तक बनी ही थी तौभी उस स्थान के बाहर ही रही जहां कि उस ने शरण लिई थी और उसे जान पड़ा कि बिहारीलाल कितना ही बलवान क्यों न हो तौभी एक दूसरा उस से बहुत अधिक बलवान है ।

उन्नीसवां अध्याय ।

शोक की कथा ।

बिहारीलाल के घर में उस दिन का सवेरा हुआ जब कि वह शिवरानी को अपनी इच्छा के अनुसार चलाना चाहता था अर्थात् उस त्राणकर्त्ता को छुड़ाना चाहता था जिस पर कि वह बिश्वास करने लगी थी । परन्तु ऐसा हुआ कि एकाएक एक बिना बुलाया हुआ पाहुन घर में प्रवेश करने के

लिये द्वार पर खटखटाने लगा और इस भयानक आगमन में शिवरानी बिसरा गई। भाई और बहिन के बीच में झगड़ा होने के बदले जीवन और-मृत्यु के बीच में युद्ध होने लगा।

वह तरुण स्त्री जिस ने कि पहिले दिन कहा था कि मेरे सिर में पीड़ा है। ज्यों ज्यों रात होती गई त्यों त्यों ज्वर से अधिक पीड़ित होती गई यहां तक कि उसे इस बात का कुछ भी ज्ञान न रहा कि मेरे चारों ओर क्या हो रहा है।

परन्तु ज्वर तो ज्वर ही था और क्या कभी किसी को जीवन भर में हुआ ही न था। उन्हों ने समझा कि जैसे और लोग चंगे हो जाते हैं तैसे वह भी हो जावेगी। सवेरा हो गया परन्तु बीमार को कुछ विश्राम न मिला। जब उन्हों ने उस के मुख की ओर देखा और उस की बुरी चेष्टा पर ध्यान दिया त्योंही उन को यह डर हुआ कि यह कोई साधारण रोग नहीं है तौभी सच बात का अभी तक अनुमान नहीं किया गया है। उस गांव का सब से अच्छा वैद्य बुलाया गया और उस ने तुरन्त ही जोंकें लगाईं और ऐसी ऐसी औषधियां दिईं जिन्हें वह जानता था परन्तु तौभी ज्वर बढ़ता ही गया और वह अचेत रोगी लोटती पोटती और कराहती रही। ज्यों ज्यों समय बीता त्यों त्यों यह लोटना पोटना और कराहना बंद होता गया यहां तक कि वह रोगी चुप चाप पड़ी रही परन्तु यह चंगे होने की चुपचापी नहीं थी परन्तु मृत्यु की चुपचापी

थी और इस लिये उन लोगों के मुख से जो कि बड़ी चिन्ता के साथ ताक रहे थे दुःख और शोक के रोने का शब्द निकला। परन्तु रोने के लिये अवकाश नहीं था क्योंकि उस तरुण स्त्री के ले जाने के पहिले ही बिहारी लाल आप ही ऐसा रोगी और पीड़ित हो गया कि दग्ध क्रिया के लिये न जा सका। तब यह बात प्रगट हुई कि यह भयानक प्लेग ही है (जो कि अभी तक इस दूर के गांव में कोई नहीं मानता था) जो उस तरुण स्त्री को ऐसे एकाएक उठा ले गया और जिस ने अब अपना भयानक हाथ पति पर भी लगाया है।

तुरन्त ही जो लोग एकट्ठे हुए थे तितर बितर हो गये यहां तक कि घर के नौकर चाकर भी ढूंढे न मिलते थे और शिवरानी इस प्रकार रह गई थी।

जब तक वह जीवती रही तब तक वह उस रात को कभी नहीं भूली जब कि वह अकेली और असहायक उस के पास बैठी ताकती रही जो कि केवल अब उस के कुटुम्ब में बच रहा था।

सवेरा होते ही बिहारीलाल का प्राणान्त हो गया और शिवरानी ने अब जाना कि मैं सचमुच अकेली रह गई। थोड़े ही घंटों में वह जो कि इतने वर्ष तक अपने कुटुम्ब भर में बड़ा माना जाता था दृष्टि से लोप हो गया। उस सूनसान निर्जन घर से प्रगट होता था कि यह प्लेग ही था जो कि पति और स्त्री दोनों को एक साथ ही उठा ले गया जिस से कि केवल एक निर्बल लड़की ही बच रही थी जो व्याकुल और शोकित बैठी हुई थी और

यह नहीं जान सकती थी कि क्या हुआ। धीरे धीरे उस के मन में यह आया कि मैं कैसी सर्वथा अकेली हूं। मैं घर में अकेली नहीं रह सकती हूं। तो फिर मैं कहां जाऊं मैं कहीं कैसे जा सकती हूं जब कि मैं ने पहिले कभी अकेले एक डग भी बाहर रखने का यत्न नहीं किया और न कभी छोटी से छोटी बात में भी मनमाना नहीं करना चाहा। जब उस ने अपने मन में इस प्रश्न के उत्तर देने का यत्न किया तो उसे उस अत्यंत दयालु मित्र का स्मरण हुआ जो कि उस के पास किसी समय आया करती थी। उस ने बिचारा कि मैं अपनी पाठिका के पास जाऊं जिस ने मुझे सत्य प्रेम का अर्थ और किसी की अपेक्षा अधिक अच्छी रीति से बतलाया है। वह निस्सन्देह मुझे ग्रहण करेगी और मेरी रक्षा करेगी और यह कोई बहुत कठिन बात न होगी मैं थोड़ी दूर रेल पर चढ़ कर उस नगर को पहुंच जाऊंगी जहां पन्नलाल रहा करता था। वहां मैं उस के घर का मार्ग पूछ लूंगी और तब वहां से उस का घर जिस को मैं ढूंढ़ती हूं केवल थोड़ी ही दूर रह जायेगा।

उस ने तैय्यारी जलदी कर लिई और यह अपनी साड़ी के ऊपर एक बड़ी श्वेत चद्दर ओढ़कर और ऐसा घूंघट मार के बाहर निकली कि कोई भी जिस ने इस श्वेत चद्दर ओढ़े हुई को देखा यह अनुमान न कर सका कि इस चद्दर की घूंघट की ओट में क्या ही सुन्दर लड़की का स्वरूप छिपा हुआ है।

वह जो थोड़ा सा रुपया उस के पास था सो लेकर और अपनी साड़ी के खूंट में घर की कुंजी बांधकर चली। वह जानती थी कि रेल गाड़ी जल्दी ही छूटनेवाली है क्योंकि पत्तनलाल बहुधा इसी गाड़ी से जाया करता था और उस ने समझा कि यदि कोई बिघ्न न पड़ेगा तो मैं अंधेरा होने के पहिले उस स्थान पर पहुंच जाऊंगी जहां मैं जाना चाहती हूं। जब कि वह स्त्रियों की गाड़ी में जिस में कि केवल स्त्रियों को छोड़ कर और कोई नहीं बैठता था कुशलता पूर्वक बैठ गई तब उस के जी में जी आया। परन्तु इस से भी बड़ी कठिनता आने वाली थी अर्थात् वह समझती थी कि मुझे अभी उस बड़े नगर में भटकने पड़ेगा जिस को कि मैं बिलकुल नहीं जानती हूं।

जब कि वह डरती और कांपती हुई और जो कुछ होनेवाला था उस के बिषय में सोचती हुई बैठी थी तब उसे उस सब से बड़े मित्र अर्थात् यीशु ख्रीष्ट का स्मरण आया और अपने मन को शांति देने के लिये वह उन पदों को कहने लगी जिन को उस ने कंठ कर लिया था। उन में से कोई कोई उस ने तोते के समान कंठ कर लिये थे परन्तु अब जब कि वह इस पद को अर्थात् तुम्हारा मन व्याकुल न होवे ईश्वर पर बिश्वास करो और मुझ पर भी बिश्वास करो कह रही थी तो उस का अर्थ जिस को कि वह पहिले कभी ठीक ठीक नहीं समझती थी एकाएक समझ गई।

यह शब्द उस के मन में आज्ञा के समान लगे मानो कि प्रभु यीशु ख्रीष्ट जिस की कि आज्ञा मानना उस को उचित था उस से डर के समय और एकान्त में साक्षात कह रहा हो तुम्हारा मन व्याकुल न होवे। वह जानती थी कि मेरा मन उन लोगों की चिन्ता के कारण जिन का मुझ से एकाएक बिछोह हो गया है दुःखित है और इस बात के कारण कि मैं अपने केवल एक ही मित्र के पास पहुंचने के लिये उन बिन जानी सड़कों में से कैसे जाऊंगी और भी दुःखित हो रहा है। तो भी वह प्रभु यीशु ख्रीष्टही था जो उस से यह कह रहा था कि तुम्हारा मन व्याकुल न होवे क्योंकि वह जानती थी कि ये उसी के शब्द हैं और ज्यों ज्यों वह उन्हें बार बार कहती थी त्यों त्यों उस का दुःख और डर कम होता जाता था।

एकाएक जब कि वह रेलगाड़ी जिस स्टेशन पर से जानेवाली थी तहां ठहर गई तब एक बूढ़ी स्त्री ने जो उस के पास ही बैठी थी उस से पूछा कि तुम क्या जप रही हो? मुझे तो ऐसा जान पड़ता है कि मानो तुम किसी से बातें करती हो।

शिवरानी चौंक उठी। वह नहीं जानती थी कि किसी ने मेरा जपना सुन लिया है परन्तु कुछ डर की बात नहीं थी इस लिये उस ने उत्तर दिया कि मैं केवल इन शब्दों को अर्थात् तुम्हारा मन व्याकुल न होवे उन्हें मैं ने कंठ कर लिया है। मैं बहुत डरती हूं क्योंकि मैं अकेली हूं और इस जपने से मुझे शांति मिलती है।

उस बुढ़िया ने उत्तर दिया कि मैं भी उन शब्दों को मानती हूं। एक अंगरेज मिस साहिबा ने मुझ को उन्हें कहना सिखलाया था और उस ने फिर भी कहा अरे। क्या तुम अकेली यात्रा कर रही हो तुम तो बहुत छोटी हो। यह तो मेरे समान बूढ़ी स्त्री के लिये ठीक है परन्तु तुम्हारी रक्षा के लिये तो कोई अवश्य होना चाहिये। कदाचित् तुम्हारा पति वा पिता पुरुषों की गाड़ी में है।

शिवरानी ने उत्तर दिया मेरा पति मर गया है और मेरा पिता भी और आज मेरा भाई भी जो अकेला बच रहा था मर गया और कल मेरी भौजाई मर गई और जब कि वह यह बोल रही थी इस भयानक सत्यता का दुःख उस को और भी अधिक हुआ और उस का गला भर आया।

यद्यपि उन दिनों में जब कि यमराज के दूत रात दिन सड़कों में फिरा करते थे और कभी कुटुम्ब का कुटुम्ब नाश करके घरों को सूना कर देते थे ऐसी बातें बहुधा हुआ करती थीं तौभी शिवरानी की बातों को सुनकर उस बुढ़िया का मन करुणार्द्र हो गया। उस ने बड़ी दया और हमदर्दी दिखलाते हुए पूछा कि तुम कहां जाती हो।

शिवरानी ने कहा कि मैं अपनी उस पाठिका के पास जाती हूं जिस ने मेरा मन मोह लिया है और मुझे निश्चय है कि मुझ को ग्रहण करके मेरी सहायता करेगी। केवल बात तो यह है कि मुझे उस के घर का मार्ग मिल जावे क्योंकि मैं कभी

अकेली बाहर नहीं निकली हूं और जब मैं मार्ग की भीड़ के बिषय में सोचती हूं तो मुझे बहुत डर लगता है। इस नई मित्र ने कहा मैं नहीं जानती हूं कि तुम्हारी पाठिका कहां रहती है क्योंकि मैं ने उस के बिषय में नहीं सुना परन्तु मैं समझती हूं कि मैं उस घर को पा सकती हूं जहां मेरी मिस साहिबा रहती हैं क्योंकि मैं उस से भेंट करने के लिये वहां गई थी और यदि मैं तुम को वहां ले चलूं तो सर्वथा तुम्हारी रक्षा होवेगी।

शिवरानी ने चिन्ता के साथ पूछा कि क्या तुम समझती हो कि वह मुझे मेरी पाठिका के पास पहुंचा देवेगी। उस अंगरेज मिस साहिबा के पास जाना जिस को कि पहिले उस ने कभी नहीं देखा था बहुत भयानक बात समझती थी यद्यपि वह नगर में अकेली रहने से और किसी प्रकार की बात अधिकतर अच्छी समझती थी फिर भी रेल गाड़ी ठहरी और बुढ़िया ने कहा आओ बाहर चलें डरो मत मैं तुम्हारी रक्षा करूंगी।

जब कि शिवरानी ने अपने को उन यात्रियों की भीड़ में धक्का खाते हुए देखा जो सब के सब स्टेशन में से पहिले ही निकलना चाहते थे तो उस ने उस मैत्रिक साथ के लिये बहुत धन्य मा' उस ने अपनी चद्दर और भी चारों ओर से लपेट लिई और अपनी पथदर्शक के साथ ही साथ रही।

निदान जब वे स्टेशन से निकलकर कुशलता-

पूर्वक इक्के में बैठ गई और चारों ओर से परदा पड़ गया तो शिवरानी ने जाना कि अब तो मैं फिर भी कुशल से हूं। इक्केवाला तुरन्त समझ गया कि वे कहां जाना चाहती हैं और जल्दी वे वहां से चलीं और शिवरानी यही चाहती थी कि मैं अंगरेज मिस साहिबा के पास जिस को कि मैं नहीं पहचानती हूं और जो मेरे जाने पर कदाचित क्रोध करे पहुंचाने के बदले अपनी प्यारी पाठिका के पास पहुंचाई जाऊं। जब वे उस घर में पहुंचीं जो कि उन घरों से सर्वथः भिन्न था और जिन को कि शिवरानी ने अभी तक इस के पहिले नहीं देखा था तो वह और भी अधिक डर गई और अपना मुख उसी प्रकार छिपाना चाहा जैसे कि उस ने स्टेशन पर भीड़ होने के समय छिपाया था। यद्यपि जब मिस साहिबा आकर उस से कोमल प्यार के शब्दों से बोलीं और अपना हाथ उस के कंधे पर रक्खा मानो कि यह कहती हों डरो मत मैं तुम्हारी रक्षा करूंगी तौभी वह भूमि ही की ओर देखती रही और एक शब्द भी न बोली।

उस की दयालु साथिन ने यह बतलाया कि मैं ने इस लड़की को जिस को मैं ने पहिले कभी नहीं देखा था कहां और कैसे पाया और जब उस ने उस पाठिका के विषय में बर्णन किया जिस को कि ढूंढ़ने के लिये आई थी तो मिस नेलसन साहिबा ने तुरन्त अनुमान कर लिया कि यह बिद्यार्थी और वह पाठिका कौन होंगी।

इस बात में भी कुछ सन्देह न रहा कि उस के भाई और भौजाई किस रोग से मरे होंगे इस लिये आवश्यक चितौनी अवश्य लिई जाना चाहिये कुछ सोच बिचार करने के पीछे मिस नेलसन साहिबा ने एमीलीन को चिट्ठी लिखकर बुलाना चाहा इस लिये कि दोनों मिलकर इस बिषय में परामर्श करें। चिट्ठी के साथ गाड़ी भी भेजी गई और थोड़ी ही देर में वह जिस के आने की बाट जोह रही थी आ पहुंची।

जब शिवरानी ने अपनी पाठिका का शब्द सुना जिस ने कि उस को बड़े प्यार से अपनी छाती से लगा लिया था तो उस के बहुत दिन का हृदय का दुःख उभड़ पड़ा और वह कोमल लड़की जो कि अभी तक रक्षा में रही थी जो गत अड़तालीस घंटों में बहुत कुछ दुःख उठा चुकी थी अब और उस दुःख को न संभाल सकी तब उस ने ख्रीष्ट के प्रेम की गहराई उस के सेवकों में फिर सिद्ध कर दिखाई उस को ऐसी हमदर्दी और करुणा पहिले कभी नहीं बतलाई गई थी और यद्यपि वह अभी तक तन मन से सर्वथा दुःखी थी तोभी उस को कुछ ढाढ़स हुआ।

थोड़ी देर के पीछे एमीलीन ने कहा हे प्यारी बहिन यह तो कहो तुम मुझे ढूंढ़ते हुए यहां कैसे आई। क्या तुम्हारा कोई नातेदार नहीं था जहां तुम जातीं।

शिवरानी ने उत्तर दिया हां मैं समझती हूं कि

मेरे कुछ नातेदार हैं परन्तु मैं उन्हें नहीं जानती हूं और मैं सब से अधिक आप ही के पास आना चाहती थी क्योंकि आप प्रभु यीशु की हैं और वे उस के विषय में कुछ नहीं जानते हैं मैं उन के पास कभी न जाऊंगी और न फिर कभी ऐसी प्रतिज्ञा करूंगी कि मैं उस के विषय में कभी बातचीत न करूंगी।

तब एमीलीन ने जाना कि उस का मनोर्थ पूर्ण हो गया और यह कि मेरी यह प्यारी विद्यार्थी सचमुच उसी प्रभु पर भरोसा करना सीख गई है जिस के पीछे पीछे मैं आप ही चलती हूं।

इस लिये उस उदासी के दिन बड़ा आनन्द मनाया गया क्योंकि मृत्यु के बीच में जीवन के चिन्ह दिखाई पड़े अर्थात् वह जीवन जो ऊपर से उत्पन्न होता है और जिस का फिर कभी अन्त नहीं होता।

उस लड़की ने इस बात से डरकर कि कहीं मेरी मित्र मुझे छोड़कर चली न जावे बिनती कर- के कहा मुझे अपने साथ ही रखिये आप को मुझ से डरने की कोई बात नहीं है क्योंकि मैं ने घर छोड़ने के पहिले ही अपनी साड़ी बदल लिई थी और आप देखती हैं कि मैं अपने साथ कुछ लाई भी नहीं हूं क्योंकि मैं ने सुना है यद्यपि मैं इस बात को समझती तो नहीं कि यह रोग पहिरने के कपड़ों में लग जाता है और इस प्रकार एक स्थान से दूसरे स्थान में फैल जाता है।

एमीलीन जानती थी कि इस चितौनी पर

भी इस लड़की को अपने घर में रखने से अभी डर है तौभी वह उस को ग्रहण करने से जो कि उस के पास भेजी गई थी नाहीं न कर सकी। इस लिये यथाशक्ति सब प्रकार की चितौनी के पीछे उस ने भरोसा रखने और न डरने का प्रण किया। इस प्रकार शिवरानी एक ईसाई घर में रहने लगी और उस प्यार और रक्षा के द्वारा जो उसे मिली उस का वह घाव जो कुटुम्बियों की मृत्यु के कारण हुआ था चंगा हो गया और उस को जान पड़ा कि यद्यपि मेरे सब समीपी और प्यारे नातेदार मुझ से बिछुड़ गये हैं तौभी मुझे और मिल गये हैं जिन का प्यार मेरे ऊपर और भी अधिक है क्योंकि इस प्यार की जड़ परमेश्वर के प्रेम में है।

उस के एक समीपी नातेदार के पास ताला लगे हुए घर की कुंजी के साथ एक चिट्ठी भेजी गई जो कि इस बात का चिन्ह था कि शिवरानी ने अपना सब संसारिक धन संपत्ति छोड़ दिई।

उस चिट्ठी का कोई उत्तर न मिला जिस से यह सहज ही प्रगट हो गया कि एक तरुण बिधवा का खोज करना जो कि ईसाई होना चाहती है उचित बात नहीं है। कदाचित यह हो सकता है कि इस बात के लिये कुछ आनन्द मनाया गया हो कि वह हम लोगों के हाथ से सर्वथा आपही निकल गई। शिवरानी को तो ऐसा जान पड़ा कि मानो वह एकाएक संसार से उठा लिई गई है अर्थात् वह पूरा संसार जिसे कि वह किसी समय जानती थी

और यह कि अब उस के लिये केवल वह नया स्वर्गीय संसार रह गया था जिस में कि वह प्रवेश कर चुकी थी।

अब तो वह बिना किसी के डर के ख्रीष्ट के विषय में सीख सकती सुन सकती और बातचीत कर सकती थी। वह मन जो संसारिक बातों से खाली कर दिया गया था अब पूर्ण रूप से स्वर्गीय बातों को ग्रहण करने के लिये खुल गया था और उस राजा ने जो अपनी प्रजा के मनों में निवासस्थान ढूंढता है अपने स्वागत के लिये एक सिंहासन तैयार पाया जहां कि उस के अधिकार का विवाद करनेवाला कोई नहीं था परन्तु जहां वह राज्य और शासन कर सकता था जब तक कि सब उस के अधिकार में आ जावे।

बीसवां अध्याय।

प्रकाश का बढ़ना।

मिस नेलसन साहिबा और एमीलीन के आपस में कुछ सोच बिचार और परामर्श के पीछे यह ठहरा कि शिवरानी बपतिस्मा पाने तक एमीलीन के साथ ही रहे और तब वह वहां भेजी जावे जहां कि वह ऐसा उपदेश और शिक्षा पावे जो कि उसे अपने जीवन के काम के लिये योग्य बना सके। इस में तो कुछ सन्देह न था कि यह शिक्षा किस प्रकार की होनी चाहिये। एक दिन जब कि एमीलीन इस

वाक्य को अर्थात् तुम सारे जगत में जाके हर एक मनुष्य को सुसमाचार सुनाओ पढ़ रही थी तो शिवरानी ने आनन्द से यह चिल्लाते हुए उसे रोका वाह। क्याही अच्छी बात होती यदि मैं भी वहां रहती और उन शिष्यों में से एक होती तो प्रभु यीशु मुझे भी भेजता।

इस बुद्धिमान विद्यार्थी को यह समझाने के लिये बहुत डर न लगा था कि यह आज्ञा केवल प्राचीन समय के प्रेरितों ही को नहीं दिई गई थी परन्तु हर समय और हर देश के सब सच्चे शिष्यों को दिई गई है। जब शिवरानी ने इन शब्दों का अर्थात् "जैसे पिता ने मुझे भेजा है तैसे मैं भी तुम्हें भेजता हूं" सुना तो उस ने उत्साहपूर्वक पूछा कि क्या इस का यह अर्थ भी है कि वह मुझे भेजता है। मैं सदा से यह चाहती थी कि मैं प्रभु यीशु को यह बतलाने के लिये कि मैं उसे प्यार करती हूं कुछ करूं परन्तु मैं सोचती थी कि मैं इतनी निर्बल और अज्ञान हूं कि मैं उस की सेवकाई नहीं कर सकती हूं। यदि वह मुझे भेजता तो मैं जहां वह कहेगा तहां जाऊंगी।

एमीलीन ने हर्षपूर्वक उत्तर दिया कि मुझे सदा ऐसा जान पड़ता है कि प्रभु यीशु की दो मुख्य आज्ञा हैं पहिली यह कि "आओ" और दूसरी यह कि "जाओ" जब तक हम नहीं आये हैं तब तक हम नहीं जा सकते हैं और जब हम सचमुच आ चुके हैं तो हम बिना गये भी नहीं रह सकते।

शिवरानी ने पूछा तो क्या यह ऐसा है कि पहिले हम लोगों को बहुत भूख लगती है और जब हम प्रभु यीशु को यह कहते सुनते हैं कि मेरे पास आओ तो हम लोग उस के पास जाते हैं और वह सब भूख हर लेता है तब वह कहता है अब जाओ और और भूखों को खिलाओ।

एमीलीन ने कहा हां यही बात है यदि वह मेरी भूख नहीं हर लेता तो मैं तुम्हें कभी न खिलाने चाहती और अब जब कि तुम तृप्त हो चुकी हो तो तुम औरों को भी खिलाने चाहती हो और इसी प्रकार होता जाता है। सारांश तो यह है कि जितना अधिक हम अपने प्रभु के बिषय में सीखते जाते हैं तितना ही अधिक हम दूसरों से उस के विषय में कहने चाहते हैं। हर बार जब कि हम कोई नई बात पाते हैं (जैसा कि सदा होता है) तो हमारे मन में यह नई अभिलाषा उत्पन्न होती है कि दूसरे भी उसे जानें।

शिवरानी ने कहा हां ठीक है पहिले मैं बिश्राम चाहती थी और जब आप ने मुझ से कहा कि प्रभु यीशु खीष्ट मुझे बिश्राम दे सकता है तो मैं ने उस से मांगा और जब मैं ने उसे पाया तो मुझे इतना आनन्द हुआ कि मैं ने सोचा कि अब मुझे और किसी बात की आवश्यकता नहीं है।

एमीलीन ने पूछा तब से तुम्हें और किसी बात की आवश्यकता जान पड़ी।

शिवरानी ने उत्तर दिया हां आप को उस दिन

का स्मरण होगा जब कि आप ने मुझ से पूछा था कि प्रभु यीशु ने क्यों क्रूश पर मरना चाहा। मैं ने यह सब पहिले ही सुन लिया था और समझती थी कि यह उस की बड़ी दया है कि वह संसार में आने के लिये उद्यत हुआ जब कि वह जानता था कि मुझे बहुत कष्ट सहना पड़ेगा। परन्तु उसी दिन इस का कारण मेरी समझ में आया। कि यह इस लिये नहीं था कि वह दुष्ट मनुष्यों के हाथ में पड़ा जिन्हों ने उसे मार डाला और वह अपने को नहीं बचा सकता परन्तु इस लिये कि हमारे पापों ने हमारे और परमेश्वर के बीच में एक बड़ी रुकावट कर दिई थी और जब तक प्रभु यीशु स्वर्ग से उतरकर न आया तब तक कोई ऐसा बलवान नहीं था कि इस रुकावट को तोड़कर हटा सकता। तब ऐसा जान पड़ा कि मानो किसी हाथ ने मेरी आंखों को छुआ जिस से कि मैं स्पष्ट देखने लगी और मेरी समझ में आया कि जब ऐसे महान को भी उस के हटाने में कठिनाई पड़ी तो पाप क्या ही बड़ी भयानक बात है और ऐसा सोचने पर मैं बड़ी उदास हुई।

एमीलीन ने पूछा कि तुम इस बात को जानकर आनन्दित क्यों नहीं हुई कि एक ऐसा शक्तिमान है कि वह उस बड़ी रुकावट को तोड़ सका।

शिवरानी ने धीरे से कहा हां यह सब मेरे मन में है परन्तु मैं नहीं जानती कि उसे आप को कैसे समझाऊं। मुझे तो ऐसा जान पड़ा कि मानो मैं

उन में से एक हूं जिन के कारण प्रभु को क्रूश पर चढ़ना पड़ा और मैं ऐसी लज्जित और शोकित हुई कि मुझे उस से क्षमा मांगना चाहिये।

एमीलीन ने पूछा क्या तुम ने क्षमा मांगी।

शिवरानी ने उत्तर दिया हां मैं ने क्षमा तो मांगी परन्तु मेरे ऊपर से उस दिन तक बोझ नहीं उतरा जब कि आप मुझ को पढ़कर सुना रही थीं। मुझे वे शब्द जो कि आप ने पढ़कर सुनाये थे ठीक २ स्मरण तो नहीं थे परन्तु वे कुछ कुछ ऐसे थे अर्थात् जिस ने बहुत पाप किया है परन्तु मैं ने उसे क्षमा कर दिया है क्योंकि वह मुझे बहुत प्यार करती है और मुझे निश्चय हुआ कि वह मुझ से भी ऐसा ही कहेगा और इस प्रकार मैं ने जाना कि उस ने मुझे क्षमा कर दिया है और तब से मैं सदा आनन्दित हूं।

एमीलीन ने कहा यह तो दो बातें हैं जो तुम ने प्रभु यीशु के विषय में सीखी हैं अर्थात् यह कि एक तो वह विश्राम देता है और दूसरे पाप क्षमा करता है और इस लिये तुम और अधिक सीखती जाओगी। क्योंकि हर बार जब कि हम को यह जान पड़ता है कि हमें नई आवश्यकता है तो हम सीखते हैं कि प्रभु यीशु उसे पूरी कर सकता है और इस प्रकार हम सदा उस के प्यार और भलाई के विषय में अधिक सीखते जाते हैं और हम कभी इन दोनों बातों के अन्त तक नहीं पहुंच सकेंगे।

तब शिवरानी ने उदास होकर कहा मैं बहुधा यही चाहती हूं कि मेरे भाई पत्तनलाल ने यह बातें

सीखी होतीं। उस ने मुझ से कहा था कि मेरे पास जो पुस्तक आप पढ़ती हैं सो हैं और कि मैं प्रभु यीशु के विषय बहुत कुछ जानता हूं परन्तु मुझे आश्चर्य्य है कि यह कैसे हो सकता है क्योंकि ऐसा जान पड़ता था कि वह कुछ चिन्ता नहीं करता है और न कुछ अधिक सीखना चाहता है। मुझ से कहिये कि यह कैसे हो सकता है कि मेरा भाई इन अद्भुत बातों के विषय में जानता और तौभी कुछ चिन्ता न करता और वह मुझ से यह प्रतिज्ञा क्यों करवाता कि तुम इस बात को और किसी से मत कहो।

एमीलीन ने करुणापूर्वक कहा कि प्रिय पुत्री तुम्हारे भाई के समान बहुत से लोग हैं जो प्रभु यीशु के विषय में पढ़ते या सुनते हैं और जो कुछ वे पढ़ते हैं बहुधा सत्य मानते हैं परन्तु वे उस से इतना प्रेम नहीं करते कि उस के निमित्त कष्ट भोगने को उद्यत हों।

शिवरानी ने आश्चर्य्य से देखते हुए कहा परन्तु यह कैसे हो सकता है हम किसी बात से कैसे डर सकते हैं जब कि प्रभु यीशु ने हमारे लिये इतना कष्ट सहा मैं तो कभी कभी यह चाहती हूं कि मुझे उस के निमित्त कोई कठिन काम करने को होता क्योंकि यह सब तो मुझे बहुत सहज जान पड़ता है। क्या आप समझती हैं कि ऐसा ही है कि मेरा भाई प्रभु यीशु से लजावे।

एमीलीन ने उत्तर देते समय शिवरानी को अपने

भाई की पक्ष में बिन्ती करते हुए और अपनी आंखों में आंसू भरे हुए देखकर कहा हे प्यारी पुत्री मैं तुम्हारे भाई के विषय में इतना नहीं जानती हूं कि यह कह सकूं कि वह सचमुच क्या बिश्वास करता था और क्या समझता था परन्तु मैं इतना जानती हूं कि उस के लिये बहुत प्रार्थना किई गई कि वह खीष्ट को स्वीकार करे और कदाचित् किसी दिन हम को जान पड़े कि हमारी प्रार्थना सुनी गई। क्या तुम को क्रूश पर चढ़ाये हुए चोर का स्मरण नहीं है।

शिवरानी ने हर्षपूर्वक चिल्लाकर कहा अरे। हां हां तो क्या आप समझती हैं कि पत्तनलाल ने मरते समय प्रभु यीशु से अपने बिषय में बिचार करने के लिये बिन्ती किई। वह कैसे ऐसी बिन्ती कर सकता था जब कि वह उस से लजाता था।

एमीलीन ने तुरन्त उत्तर नहीं दिया। तब उस ने कहा हे प्यारी पुत्री। उस महान प्रभु से जो हमारे लिये इतनी लज्जा सहने को उद्यत हुआ लजाना तो निस्सन्देह बड़े पाप की बात है परन्तु हम को स्मरण रखना चाहिये कि कोई भी ऐसा घोर पाप नहीं है जिसे वह क्षमा नहीं कर सकता यदि हम को निश्चय होवे कि पत्तनलाल ने अपने पाप को जाना और क्षमा मांगी तो प्रभु यीशु ने उस को बाहर नहीं निकाल दिया।

इस प्रकार शिवरानी के मन में प्रबोध हुआ और वह आशा करने लगी कि मैं अभी अपने भाई को फिर भी राजा के सन्मुख देख सकती हूं।

इक्कीसवां अध्याय ।

"जो गुणानुवाद की भेंट चढ़ाता है वह मेरी महिमा प्रगट करेगा" ।

ऐसा हुआ कि सिंह बाबू के घर में सभा करने का दिन हुआ । यह सभा करने का कोई साधारण दिन नहीं था क्योंकि यह सभा के वार्षिकोत्सव का दिन था जिस दिन परमेश्वर का धन्यवाद देने की सभा हुई क्योंकि बहुत से लोगों को जब कि उन्हों ने गत महीनों का बिचार किया और जो कुछ परमेश्वर ने किया था स्मरण किया तो यह जान पड़ा कि हम लोगों को परमेश्वर की स्तुति और धन्यबाद करने के लिये बहुत कुछ करना है ।

शिवरानी भी अपने सुन्दर और प्रसन्न मुख से वहां उपस्थित थी क्योंकि गत आदित्यवार को उस ने सब के आगे ख्रीष्ट में अपना बिश्वास स्वीकार कर लिया था और इस लिये उस की मंडली में मिल गई थी । उसे केवल अपने लिये ही परमेश्वर की स्तुति नहीं करनी थी परन्तु उस को देखकर और उस रीति का स्मरण करके जिस से वह अंधकार से प्रकाश में लाई गई थी उन सभों का हृदय जो उसे जानते थे हर्षयुक्त धन्यबादों में भर गया और सब लोगों को जान पड़ा कि वह इस बात का प्रमाण है कि परमेश्वर अपने बड़े से बड़े मनोर्थों को पूर्ण करने के लिये और उन लोगों को काम में लाने के लिये उद्यत है जो तन मन धन से अपने को उसे सौंप देते हैं ।

परन्तु केवल उन्हीं के लिये धन्यवाद नहीं दिया गया जिन्हों ने हिन्दू धर्म्म छोड़कर ईसाई मत स्वीकार किया था। ऐसे भी लोग थे जो इस बात का प्रमाण दे सके कि हम केवल ख्रीष्ट के नाम से कहलाने से उस की संगति में लाये गये हैं और और लोग भी थे जो पहिले दूर दूर चलते थे परन्तु अब जिन्हों ने उस आनन्द का अनुभव कर लिया था जो पूर्ण रीति से पीछे चलनेवालों को प्राप्त होता है। दूसरे लोग उस तृप्त के विषय में बोले जो उन्हों ने अपने प्रभु ख्रीष्ट की सेवकाई में पाई थी अर्थात् वह सेवकाई जिस को करने के लिये वे समझते थे कि केवल थोड़े ही बुलाये जाते हैं परन्तु जिस के विषय में अब उन्हों ने जान लिया था कि वह उन सब लोगों का बड़ा अधिकार है जो उस के अनुगामी होने का स्वत्व लेते हैं और जो सेवा किये जाने को नहीं परन्तु सेवा करने को आया है।

दूसरा उस बड़े खोज के विषय में बोला जो उस ने ईसाई शब्द के अर्थ में लगाया था उस ने कहा मुझे ऐसा जान पड़ता है कि मैं अंधे मनुष्य के समान एक सुन्दर बाटिका में जहां कि फल फूल अधिकाई से उगे थे घूमता रहा हूं और अपने अंधेपन के कारण मुझे ऐसा लगा कि मानो मैं एक भयंकर मरुस्थल में घूमता रहा हूं अर्थात् प्यास से मरता हुआ यद्यपि पानी के सोते चहुंओर थे और भूख से व्याकुल यद्यपि मधुर फल मेरे हाथ की पहुंच के भीतर लटकते थे परमेश्वर का

धन्य है कि अब मेरी आंखें खुल गई हैं और मैं देखता हूं कि जब हम स्वर्गीय राजा के सन्तान होने को बुलाये जाते हैं तो उस की संपूर्ण संपत्ति हमारे मन पर छोड़ दिई जाती है और यदि हम कंगाल और छूछे हाथ बने रहें तो हम उस के नाम का अनादर करते हैं।

तब सिंह बाबू ने उठकर कहा मैं परमेश्वर का धन्यवाद करता हूं कि उस ने मेरी आंखें खोल दिई हैं इस लिये कि मैं पहिले की अपेक्षा अधिक दूर तक दृष्टि कर सकूं जिस से कि मैं उन भविष्य ऐश्वर्य्यों को देख सकूं जो हमारे लिये तैयार किये जा रहे हैं। हमें उन वर्त्तमान अकथनीय आशीर्वादों को जो हमारा प्रभु हम पर बरसाता है भोग करते हुए यह न भूल जाना चाहिये कि उस ने हमें अपने अनन्त ऐश्वर्य्य में बुलाया है और कि हम उस के साथ उस के सिंहासन पर बैठनेवाले हैं अर्थात् संक्षिप्त में उस सब कुछ में जो कि पिता अपने प्रिय पुत्र को देता है हम उस के साथ भागी होनेवाले हैं क्योंकि क्या हम परमेश्वर के अधिकारी और यीशु खीष्ट के सहाधिकारी नहीं हैं।

हे भाई और बहिनो उस प्रकाश को जो कि परमेश्वर के नगर से निकलता है हमारे साम्हने के मार्ग में उंजियाला करने दो। वर्त्तमान आनन्द और परमेश्वर के ऐश्वर्य्य की आशा हमारे होंठों के द्वारा ऐसा गीत उठावे कि वे जो उसे सुनें उसी ऐश्वर्य्य के उसी मार्ग में चलने के लिये आकर्षित

अपने प्रभु के आनन्द में अकेले प्रवेश
तुष्ट न होना चाहिये परन्तु उस के नाम
मा के निमित्त और उन के अनन्त लाभ
जिन के बचाने को उस ने अपना लोहू
हमें दूसरों को भी अपने साथ ले जाने का
करना चाहिये क्योंकि ऐसा लिखा है कि वे
मान होवेंगे आकाश के उंजियाले की नाईं
ाग और वे जो बहुतों को धर्म्म की ओर फेरेंगे
युगानयुग तारों की नाईं चमकेंगे ।